नारी जागृति की महत्ता

लेखिका :

श्रीमती वीणाबाई

श्रीसद्गुरवे नमः

प्रकाशक

सर्वाधिकार सुरक्षित : प्रकाशकाधीन

सहयोग राशि : 30 रु० मात्र

प्राप्ति-स्थान

राजेन्द्र साह, एम०ए०, बी०एड०
९९३४६१५९२२, ९४७०७६१६७६

प्राप्ति-स्थान

.....

कोलकाता पिन : 700006
संपर्क : 09830905761

•• समर्पण ••

'त्वदीयं वस्तु सद्गुरोः तुभ्यमेव समर्पये!'

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुर्साक्षात् परमब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः॥
तीन लोक नौ खण्ड में, गुरु ते बड़ा न कोय।
कर्ता करे न करी सके, गुरु करे सो होय॥
सात समुँद की मसि करौं, लेखनि सब बनराय।
सब धरती कागद करौं, गुरु गुण लिखा न जाय॥

प्रार्थना

तुम्हीं हो माता पिता तुम्हीं हो, तुम्हीं हो बन्धु सखा तुम्हीं हो॥
तुम्हीं हो साथी तुम्हीं सहारे, कोई न अपना सिवा तुम्हारे॥
तुम्हीं हो नैया तुम्हीं खेवैया, तुम्हीं हो बन्धु सखा तुम्हीं हो॥
जो खिल सके ना वो फूल हम हैं, तुम्हारे चरणों की धूल हम हैं॥
दया की दृष्टि सदा ही रखना, तुम्हीं हो बन्धु सखा तुम्हीं हो॥

–वीणा अग्रवाल

संतमत के वर्तमान आचार्य पूज्यपाद महर्षि हरिनन्दन परमहंसजी महाराज का आशीर्वचन

सृष्टि के आदिकाल से नारी श्रद्धा, प्रेम, वात्सल्य, ममता, करुणा और शक्तिस्वरूपा देवी के रूप में पूजित है। साध्वी नारी का त्याग और तपस्यामय जीवन दिग्भ्रमित समाज को प्रकाश-स्तम्भ बनकर सदैव पथ-प्रदर्शन करते आया है। इसीलिए भारतीय संस्कृति में नारी को प्रथम स्थान देकर सम्मानित किया गया है; जैसे–माता-पिता, देवी-देवता, सीता-राम, राधे-कृष्ण, लक्ष्मी-नारायण, उमा-शंकर आदि।

वर्त्तमान समय में पाश्चात्य सभ्यता की आँधी ने भारतीय नारी के उज्ज्वल एवं त्याग-तपस्यामय आदर्श जीवन की जड़ को हिला दिया है। इसीलिए संतमत के ज्ञान में पली-बढ़ी गुरुभक्तिन साधिका श्रीमती वीणा बहन ने नारी-समाज को निज कर्त्तव्य का बोध कराने के उद्देश्य से **'नारी जागृति की महत्ता'** नाम्नी पुस्तक लिखने का प्रयास किया है, जिसमें नारी के साथ नर को भी निज कर्त्तव्य का बोध कराया गया है। वास्तव में समाज को सुसंस्कृत एवं सुसभ्य बनाने में नर और नारी दोनों का समान रूप से दायित्व बनता है, जिससे उभय पक्ष का जीवन उज्ज्वल एवं मंगलमय बन सके। लेखिका को इस लोक कल्याणकारी कार्य के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद!

अंत में, परमात्म-स्वरूप परम कृपालु गुरुदेव से मेरी प्रार्थना है कि लेखिका की यह कृति लोक-कल्याणकारी सिद्ध हो।

शुभकामनाओं के साथ।

शुभाकांक्षी

अनुक्रमणिका

क्रम सं०	विषय	पृष्ठांक
१.	नारी जागृति क्यों आवश्यक	५
२.	नारी शक्ति का एक परिचय	५
३.	नारियों की समस्याओं का समाधान कैसे हो?	७
४.	नारी सशक्तिकरण	९
५.	नारी का वर्तमान स्वरूप : दोषी कौन?	११
६.	मूल में भूल :	१३
७.	हम नारियों में मूल अवगुण	१३
८.	समानता का बोध	१६
९.	परमात्मा की सर्वोत्कृष्ट कृति नारी	१७
१०.	नारी अत्कृष्टता की जीवन्त प्रतिमा है	१७
११.	नारी प्रत्यक्ष कल्पवृक्ष है	१८
१२.	नारी कामधेनु है	१८
१३.	काल और करूणा की प्रतिमा नारी	१८
१४.	वरिष्ठता में नारी का पलड़ा भारी है	१९
१५.	नारी को भी परिपूर्ण मनुष्य ही माना जाए	१९
१६.	अवस्थामूलक नारी जीवन	१९
१७.	नारी कामधेनु है, कल्पवृक्ष है	२०
१८.	नारी की वरिष्ठता स्वीकारें	२०
१९.	नर-नारी के बीच महान् सद्भावना की आवश्यकता	२०
२०.	समुन्नत परिवार सुसंस्कृत नारी ही बना सकेगी	२१
२१.	ससुरल में नारी को अतिथि-सत्कार प्राप्त होना चाहिए	२१
२२.	नारी की एकाकी सत्त समग्र उद्यान के समान है	२२
२३.	नर-नारी के बीच का सघन सहयोग	२३
२४.	पिछड़ापन अकुलाहट के बिना नहीं हटेगा	२३
२५.	पिछड़ापन अकुलाहट के बिना नहीं हटेगा	२३
२६.	नारी को केवल न्याय चाहिए और कुछ नहीं	२३
२७.	नारी के साथ अदूरदर्शी नीति नहीं बरतनी चाहिए	२४
२८.	उठने की उत्कट अभिलाषा जगाएँ	२४
२९.	नारी को साथ लिये बिना उन्नति पूर्ण नहीं	२४
३०.	अनीति के आतंक से कभी समझौता न करें	२५
३१.	जागृत महिला परिवार मंदिर की अधिष्ठाश्री देवी	२५
३२.	पुरुषों को बचाकर अपने को बचना	२५
३३.	नारी पारिवारिकता की प्रतिमूर्ति	२६
३४.	सहकारिता का संवर्धन परिवारिक वातावरण में	२६
३५.	नीति प्रतिष्ठा का आग्रह भी तो हो	२६
३६.	उपेक्षा के रहते उपयोगिता संभव नहीं	२७
३७.	मनुष्य में देवत्व के अवतरण का लक्षण	२७
३८.	गृहस्थ का तपोवन	२८
३९.	सहयोग और सद्भाव की रीति ही श्रेयस्कर है	२८
४०.	नारी श्रद्धा और श्रेष्ठता की अधिष्ठाश्री	२८
४१.	नारी इस धरती का श्रेष्ठतम सारतत्व	२९
४२.	नारी की गरिमा ही मारी पड़ती है	२९
४३.	नर और नारी की एकात्मकता	२९
४४.	अनीति को स्वीकार न करें	३०
४५.	शिक्षित महिलाएँ अहंकार का त्याग करें	३१
४६.	भारत में आर्दश नारी की शानदार परम्परा	३२
४७.	नारी की सच्ची श्रृंगारिकता	३२
४८.	हम नारियों को नारी से ही बलिदान का अर्थ सीखना है	३५
४९.	फूलों की मार	३७
५०.	फकीर मंसूर हमें बतलातें है	३७
५१.	दहेजप्रथा का विरोध	३८
५२.	अद्भुत वैराग्य	३८
५३.	नाराज हुए बापू	३९
५४.	सत्यवादी गाय को मिला दिव्यलोक	४०
५५.	ईश्वर पर अटूट विश्वास	४१
५६.	इन्सानियत का मिसाल	४३
५७.	सबसे बड़ा दरिद्र	४६
५८.	ज्ञान का लाभ	४७
५९.	सेवा में सफलता के लिए सादगी और निष्ठा दोनों बहुत जरूरी है	४८
६०.	प्रधानमंत्री का चुनाव	४९
६१.	हमें महापुरूषों की शिक्षा का हृदयंगम करना चाहिए	५०
६२.	सफलतारूपी रथ के दो पहिये–धैर्य और विनम्रता	५१
६३.	विनम्रता ही मनुष्य को महान बनाती है	५४
६४.	कर्मफल अमिट है	५५
६५.	कल और आज	५७
६६.	ज्ञान और व्यवहार	५७
६७.	आपसी प्रेम बना रहे	५९
६८.	धर्म की सार्थकता	६०
६९.	सभी फलों का सार सेवा है	६१
७०.	सेवा का संदेश	६२
७१.	सभी दुर्गारानी जसवाल, साधिका संतमत	६३
७२.	माँ बच्चे पाले या नौकरी करे	६४
७३.	माँ	६७
७४.	बच्चों को सिखाएँ "माँ" को थैंक्स कहने की कला	६७
७५.	बच्चों के सामने मीठे बोल	६८
७६.	कमजोरियों का मजाक	६८
७७.	मदर्स डे पर खास तोहफा	६८
७८.	माँ की मदद	६८
७९.	मातृदिवस का इतिहास	६९
८०.	माँ की मुस्कान के लिए करें कुछ खास	६९
८१.	किस दुनिया से आयी अम्मा	७१
८२.	घर की लक्ष्मी कौन है	७२
८३.	शक्ति का स्वरूप हैं सीता	७४
८४.	आदर-सत्कार	७४
८५.	खतरनाक है महिलाओं में बढ़ रही नशे की प्रवृत्ति	७५
८६.	कच्ची सब्जी या फलों से रक्तचाप की समस्या भी दूर	७६
८७.	दुनीया के ताकतवर महिलाओं की सूची में सोनिया गाँधी सातवें स्थान पर	७७
८८.	सच्ची माता मदालसा (पुत्र को उपदेश)	८०
८९.	अनमोल वचन	८२
९०.	आँखों में क्या हैं?	८२
९१.	एक चीज	८२

नारी जागृति क्यों आवश्यक

आदरणीय मातृशक्ति, कोटि-कोटि प्रणाम!

नारी शक्ति महान् है। किसी कवि ने लिखा है–'कोमल है कमजोर नहीं, शक्ति का नाम नारी है। जब-जब हमारे देश में संकट की घड़ी आई है, महान् नारियों ने कठिन तपस्या करके देश में अपनी महानता का परिचय दिया है एवं समाज को नयी दिशा दी है। कस्तूरबा बाई, मीराबाई, लक्ष्मीबाई, सहजोबाई, भगिनी निवेदिता एवं मदर टेरेसा इनके ज्वलन्त उदाहरण हैं।

प्यारी बहनो! आज हमारा देश, हमारा समाज दु:खों की अग्नि में जल रहा है; क्योंकि भ्रष्टाचार, अनाचार, दुराचार, शोषण अपनी चरम चरम सीमा पर पहुँच चुका है। लोग अपनी संस्कृति को भूलते जा रहे हैं; क्योंकि लोग अपने धर्म को छोड़ते जा रहे हैं। जब धर्म को छोड़ेंगे, तो अधर्म को ही अपनायेंगे न! जब नारियाँ अपने धर्म पर चलती थी, तो उनमें अपार शक्ति प्रवाहित होती थी। क्योंकि धर्म पर चलनेवाले अनुशासन में रहेंगे, सदाचार का पालन करेंगे, अपने ऊपर संयम रखेंगे, बड़ों की आज्ञानुसार कार्य करेंगे। यह सदा समन्वय से नारियों में महानता थी। आज हम अपने मार्ग से भटक गये हैं, इसलिए हमारे बच्चे, हमारा देश संकटग्रस्त हो गया है।

अब हमें जागने की आवश्यकता है। परम पूज्य संत सद्गुरु महर्षि संतसेवी परमहंसजी महाराज के द्वारा हमें यह प्रेरणा और आशीर्वाद मिला है कि हम बहनें आगे आयें एवं सभी मिलकर धैर्य और सहनशीलता के साथ अपने एवं अपने बच्चों में संस्कृति एवं अध्यात्म जागरण का बीड़ा उठायें एवं अपने संकटग्रस्त देश में सुधार की एक ज्योति जगाकर अपनी कर्मठता का परिचय दें।

नारी शक्ति का एक परिचय :

भगवान राम ने माता शबरी को जो स्थान दिया है, वह पूरे रामायण में और किसी के लिए नहीं है। माता अनुसूया की कथा तो हमलोगों ने सुनी ही है। अपने धर्म के प्रभाव से उन्होंने ब्रह्मा, विष्णु और

महेश को बच्चा बना दिया था। महर्षि मेँहीँ परमहंसजी महाराज के द्वारा महाभारत की एक कथा–'सत्यवान सावित्री' की कही जाती थी। सत्यवान अपने माता-पिता के साथ जंगल में रहते थे। सावित्री को अपने गुरु नारद मुनि के द्वारा पता लगा कि अमुक तिथि को सत्यवान की मृत्यु होगी। वह उस दिन अपने सास-ससुर से आज्ञा लेकर पति के साथ जंगल गयी। जब उसके सिर में दर्द होने लगा, तो सावित्री ने उसे जल्द पेड़ पर से उतरने को कहा और अपने सिर को अपनी जंघा पर रखकर बैठ गयी। जब यमदूत आया तो सावित्री के तेज के सामने वह खड़ा न रह सका। यमदूत के लौटने पर यमराज स्वयं आये। जब वे लिंग (सूक्ष्म) शरीर को लेकर चलने लगे, तो सावित्री उनके पीछे-पीछे चलने लगी। उन्होंने कहा कि मेरी पीछे मत आओ, वर माँग लो। उसने तीन वर माँगा। एक में सास-श्वसुर की आँखें, दूसरे में सारा राजपाट, और तीसरे वर में अपने सौ पुत्र। जब वे फिर चलने लगे, तो सावित्री ने कहा, 'आप मेरे पति को ले जाएँगे, तो मुझे पुत्र कैसे होंगे?' यमराज को हारकर सत्यवान का लिंग शरीर वापस कर दिया। यह है पातिव्रत्य धर्म की महिमा। यही है नारी-शक्ति।

महर्षि मेँहीँ परमहंसजी कहते हैं–स्त्रियों को पातिव्रत्य धर्म का पालन करना चाहिए और पति को भी चाहिए कि वे बहुत अच्छे बनें। अपने बहुत बुरे हों और वे चाहें कि पति पत्नी पतिव्रता मिले, ईश्वर की सृष्टि में ऐसा होना तो असंभव है; लेकिन साधारणतया असंभव है। भगवान् श्रीराम की तरह एक पत्नीव्रत धारण करें और स्त्रियाँ पातिव्रत्य धर्म का पालन करें, तो संतान अच्छी होगी।

हमारे गुरुदेव महर्षि संतसेवी परमहंसजी महाराज ने नारियों को आगे बढ़ने में बहुत ही प्रोत्साहन दिया है। उन्होंने कहा है–जिस दिन हमारे देश की नारियाँ जग जाएँगी, हमारा देश जगमग-जगमग हो जाएगा। केवल कहा ही नहीं, बल्कि उनको आगे बढ़ने की व्यवस्था की कर दी। उन्हीं की संस्था शक्तिस्वरूप सेवा संघ इष्ट के नाम से जानी जाती है। परम पूज्य गुरुदेव ने कहा, 'कहीं-कहीं तो देव के पूर्व देवी के नाम आते हैं; यथा–सीताराम, राधेश्याम, गौरीशंकर आदि।

महाराज धृतराष्ट्र की पत्नी गांधारी बड़ी तपस्विनी थी, जिनके शाप को स्वयं भगवान ने धारण किया। और भी देखिये–कुन्ती, द्रौपदी, सुमित्रा, मंदोदरी, मदालसा, सावित्री, सुलभा, गार्गी आदि अनेक आदर्श नारियाँ हुई हैं, जिनको लोग आज भी आदर की दृष्टि से देखते हैं। कौशल्या जैसी माता नहीं होती, तो भगवान राम अवतार कैसे होता! जगत् के जितने भी संत-महापुरुष हुए हैं, सबकी जन्मदात्री तो नारियाँ ही हैं। परम भक्तिन सहजोबाई, मीराबाई आदि भी नारियाँ ही थीं। वास्तव में ऐसी नारियों की बलिहारी है। सुमित्राजी ने अपने पुत्र लक्ष्मणजी से कहा–

पुत्रवती युवती जग सोई। रघुपति भगत जासु सुत होई ।।

किसी कवि ने कहा है–'एक नहीं, दो-दो माताएँ, नर से बढ़कर नारी।' इस तरह हम देखते हैं कि हमारा इतिहास भरा हुआ है नारियों की महानता से। अब इस युग को भी वैसी ही नारियों की आवश्यकता है। अतः हम कमर कस लें। हमें पूर्ण रूप से जगना है।

* जिस दिन हमारे देश की नारी जग जाएँगी, उस दिन हमारा देश जगमग हो जाएगा।
* भगवान् श्रीराम की तरह पुरुष एकपत्नीव्रत धारण करे और स्त्रियाँ पातिव्रत्य धर्म का पालन करें, तो संतान अच्छी होगी।
* नारी ने माँ के रूप में अपने रक्त को दूध में परिवर्तित कर उसमें भावनात्मक शहद मिलाकर बच्चों को पिलाया एवं विकास किया। पति के रूप में पुरुष को शक्ति दी और भगिनी के रूप में अपने स्नेह संवेदनाओं एवं पवित्र भावनाओं से सिंचा।

नारियों की समस्याओं का समाधान कैसे हो?

आज हमारा समाज इतना शिक्षित होने के बाद भी विचारों में काफी संकीर्ण है। क्या नारी जो सम्मान अपने पति को देती है, पति से पाती है? नहीं। कुछ लोगों की बातों को छोड़कर लगभग ९९प्रतिशत लोग अभी भी ऐसे ही हैं, जो बातें तो बड़ी-बड़ी करते हैं; किन्तु जहाँ प्रश्न देने का आता है, लोग कतरा जाते हैं। हम महादेव की पूजा करते

हैं, पर क्या महादेव जो सम्मान माता पार्वति को देते हैं, हम दे पाएँगे? अभी भी उनका मन उन्हें तुच्छ तथा भोग्य और सेवा की वस्तु ही समझता है, जिसके बदले वो उनका भरण-पोषण करते हैं।

समाज में बदलाव लाने के लिए सर्वप्रथम इन गंदी भावनाओं को खत्म करना पड़ेगा। यह मन से मानना पड़ेगा कि दोनों की हर क्षेत्र में बराबर जरूरत है, दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। इसके लिए हम सारी बहनों, बेटियों, बहुओं, समस्त नारी जाति को कंधे-से-कंधा मिलाकर एक दूसरे को प्रेम और सहयोग देते हुए एक दूसरे की उपेक्षा न कर अपने को बुद्धिमान और दूसरे को तुच्छ न समझ आगे बढ़ना पड़ेगा। साधुओं को भी अपना फर्ज प्रेम से पूरा करना चाहिए एवं बंधुओं को भी अपनी जिम्मेदारियाँ प्रेम के साथ निभानी चाहिए। यही पढ़ाई की कीमत है। केवल बड़ी-बड़ी डिग्री ले लेना सच्ची पढ़ाई नहीं। हम अपने जीवन में अपनी हर जिम्मेदारियों को प्रेम से निभायें तथा परिवार के प्रत्येक सदस्य के प्रति आदर भाव रखें, अनुशासन में रहें, संयमित जीवन बिताते हुए अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा प्रदान करें, घर में खुशी का वातावरण बनाकर रखें, यही सच्ची पढ़ाई है।

आज लड़कियाँ बात-बात पर घर छोड़ने तथा रिश्ता तोड़ने को तैयार हो जाती हैं, यह तो शिक्षा ही नहीं अशिक्षा है। इसका ज्यादा श्रेय अपने घर की शिक्षा पर ही जाता है।

संघर्ष ही जीवन है जरूर; किन्तु एक दूसरे के सहयोग से सारे संघर्ष उत्कर्ष में बदल जाते हैं, हमारा जीवन सहज और सरस हो जाता है। यदि हम सचमुच नारी हैं, तो अपनी शक्ति को पहचानते हुए हमें हरएक नारी की मदद के लिए तत्पर रहना चाहिए। चाहे वह सार हो या बहु, चाहे बेटी हो या ननद, सहेली हो या और रिश्तों से ज्यादा नारी जाति को महत्त्व देकर अपने दुर्गुणों को दूर करना तथा दूसरों को सम्मान देना चाहिए।

और पुरुष भाइयों से भी निवेदन है कि नारि जाति को उचित सम्मान देकर परिवार में शान्ति एवं प्रेम की स्थापना करने में हमारी मदद करें। यदि वे थोड़े से विनम्र हो जाएँगे, तो परिवार में प्रेम की धारा

बह पड़ेगी। यदि पिता बच्चों के सामने पति को डाँटे या निंदा करें, तो उस परिवार के बच्चे कभी अनुशासित नहीं हो पायेंगे, वे कभी माँ क आदर नहीं करेंगे। उससे वे माता का नुकसान तो कम; किन्तु अपना सर्वनाश कर बैठेंगे और परिवार में शान्ति की जगह अशान्ति ले लेगी। अतः हमें नारी की महानता का नजरअंदाज न करके उसका अतीत सम्मान करना चाहिए। 'नारी मन जागो, नारी जागो।'

जागो जगदम्बे के विमल रूप तुम जागो।
गायत्री के चिन्मय स्वरूप तुम जागो ।।
दुर्गा के असुर विनाशिनी शक्ति तुम जागो ।
तुम संस्कृति की परिचायक हो,
हर युग यह कहते आये
अब कुछ ऐसा कर दिखलाओ,
संस्कृति पुनः प्रतिष्ठत हो जाये॥

नारी सशक्तिकरण

वैसे तो मैं इस शीर्षक से सहमत नहीं हूँ; क्योंकि नारी तो सशक्त थी, सशक्त है और सशक्त रहेगी। जो अपनी कोख से अन्न, जल, धातु, रक्त देती है, जो अपने ऊपर हल चलानेवाले का पेट भरती है। क्या वह कमजोर है? तो नारी कैसे कमजोर है।

लेकिन नारी कमजोर हो जाती है। वह प्यार में कमजोर हो जाती है; क्योंकि वह पुरुष को सर्वस्व समर्पण कर देती है। वह कमजोर हो जाती है; क्योंकि उसकी ममता को संतान का आसरा चाहिए। वह कमजोर हो जाती है; क्योंकि वह सुदीर्घ अनुभव से जानती है कि परिवार का आंतरिक केन्द्र विन्दु वही है। अतः उसका अपरिमित और अतुलनीय धैर्य ही परिवार को विघटन से बचा सकता है। वह कमजोर है; क्योंकि उसने अर्थतंत्र पर कब्जा करने का कभी विचार ही नहीं बनाया। वह कमजोर है; क्योंकि पति से छली जाने पर भी उसे छोड़ नहीं पाती है। वह कमजोर है; क्योंकि उसके अंतिम निर्णय में बुद्धि के स्थान पर हृदय, स्वार्थ के स्थान पर त्याग, बल और अहिंसा के स्थान

पर सहिष्णुता और दया तथा क्षुद्रता के स्थान पर विशालता हावी हो जाती है।

लेकिन नारी कमजोर क्यों है? क्योंकि ईश्वर प्रकृति ने उसकी संरचना भी ऐसी की है। प्रकृति ने इस संसार में सृष्टि का दायित्व उसे ही सौंपा है। उस पालनहार ने अपना लघु उसे ही बनाया है। उसने पुरुष को कभी इस योग्य समझा नहीं। अतः प्रकृति और परमात्मा के दिये गये इस दायित्व को निभाने की वचनबद्धता से वह कमजोर है। संसार में वैज्ञानिकों ने अनेक अजुबे आविष्कार किये हैं। दिल, गुर्दा और न जाने क्या-क्या वे शरीर में बदल देते हैं; किन्तु अभी तक किसी पुरुष में गर्भ स्थापित नहीं कर पाये, कर भी नहीं पाएँगे। ऐसी नारी कमजोर कैसे हो सकती है? प्रकृति ने उसे विविधता दी है। मृदुता और सौम्यता के साथ-साथ शारीरिक रूप से मजबूत संरचना; लेकिन नारी कमजोर है पुरुष के छल-बल कौशल से। अर्थ प्रधान हो गये इस युग में अर्थतंत्र तक पहुँच और पकड़ न होन से सत्ता के व्यामोह से उदासीन रहने के कारण। पुरुषों के वर्चस्ववाले इस समाज ने सदियों से नारी की प्राथमिकता घर की चहारदिवारी में केन्द्रित कर दी। जो इन अलिखित नियमों का उल्लंघन करने का प्रयास करती है, उन्हें बड़ा कष्ट उठाना पड़ता है।

मैं अपनी हम-उम्र बुजुर्ग बहनों से यह जोर देकर कहना चाहती हूँ कि वे अपनी बेटियों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए प्रयासरत रहें। हमलोगों को भी सोच बदलनी होगी, तभी नारी समाज में बदलाव आएगा। हमलोगों की तो कट गयी या कट रही है, पर जिन्हें काटनी है, उनके भविष्य को सुधारने का प्रयास करें। हमारे पास अनेकानेक पीड़ित महिलाओं के मर्मस्पर्शी उदाहरण उपलब्ध हैं। दहेज का आडम्बर अपनी पुत्री के सुख की मंगलकामना में बढ़ा लिया गया; किन्तु माँग और बढ़ गयी। अब दहेज से काम चलने को नहीं। जबतक पुरुष समाज को यह मुकम्मल एहसास नहीं हो जाता कि आवश्यकता और संकट में नारी स्वयं खड़ी हो सकती है, संतान को पाल सकती है। अन्याय और अत्याचार का मजबूत प्रतिकार कर सकती है, तबतक उनके सोच में

बुनियादी बदलाव नहीं आएगा।

यह प्रसन्नता का विषय है कि आज का संविधान स्त्री और पुरुष में किसी भेद का निषेध नहीं करता है। केवल हमलोगों को सचेत होने की जरूरत है। अपने अधिकारों और कर्तव्यों को ठीक ढंग से जानने की जरूरत है। उन अधिकारों को पाने के लिए सतत संघर्ष की जरूरत है। संघर्ष के लिए समूह के बल की आवश्यकता है। इसलिए हमारा यह मंच (महर्षि संतसेवी शक्तिस्वरूपा सेवा संघ ट्रस्ट) अपना मंच है। इसकी आवाज हमारी आवाज है। हमारी अभिव्यक्ति है। हमारी अस्मिता का रक्षक है। हमारा हथियार है, इसे पुष्ट और इस्तेमाल हमें करना है। हमें हमारी किसी भी दुःखी बहन परिवार में नारियों, पुरुषों किसी के भी द्वारा सतायी गयी हों, उनकी आवाज हमारी संस्था तक पहुँचानी होगी, ताकि हमारी संस्था की बहनें उन्हें पूर्णरूप से सहयोग दे सके। स्त्री अपने संतान की प्राथमिक शिक्षिका है। शिक्षा का महत्त्व क्या होता है, यह पूर्व राष्ट्रपति डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने अत्यन्त सुन्दर वाणी में कहा है, जो हमपर भी लागू होता है–"वह पीढ़ी-दर-पीढ़ी बौद्धिक परम्पराओं का हस्तांतरण करती है, प्राविधिक कुशलता बनाये रखती है और सभ्यता के दीप को आलोकित रखती है। वह केवल व्यक्ति का मार्ग नहीं दिखाती, बल्कि सारे राष्ट्र का मार्ग निर्देशन करती है।" बस जरूरत है स्वामी विवेकानंद के इस मंत्र को स्मरण रखने की, 'उठिये, जागिये और लक्ष्य की प्राप्ति में तत्परता से लग जाइए।'

नारी का वर्तमान स्वरूप : दोषी कौन?

वर्तमान युग में सबसे जटिल समस्या यही है कि नारी अपने को कहीं भी सुरक्षित नहीं देख पा रही है। घर हो या बाहर इस तरह है कि महिलाओं को बचपन से ही कमजोर मानकर उसे कमजोर बनने पर मजबूर किया गया है। जिस मकान की नींव कमजोर हो, वह मकान अपनी सुरक्षा कितने दिन तक कर सकता है? हमारे रीति-रिवाज भी कुछ इस तरह के हैं कि महिलाओं को अधिक काम करते हुए भी पूरी आजादी, स्वामीत्व या सम्मान नहीं दिया जाता। उन्हें सिखाया जाता है कि बस घर का काम-काज सिखेंगे और ससुराल में जाकर सबों के

साथ निभाने की चेष्टा करो।

काम-काज तो सीखना ही चाहिए और ससुराल में निभाना ही चाहिए; किन्तु साथ-साथ उसे अपने जीवन को अच्छे तरीके से जीने का अधिकार भी होना चाहिए। अक्सर माँ-बाप सोचते हैं, शादी करके उनका काम पूरा हो गया। जबकि महिलाओं की समस्या विवाह के बाद ही प्रारंभ होती है। दहेज, मनमुटाव, गलतफहमी नीर के जीवन को कितना विषमय बना देती है। इसकी कल्पना कोई भुक्तभोगी ही कर सकता है। समाज के पुरुषों ने धर्म की आड़ में लेकर नारी की यंत्रणामय जीवन के नियम बनाये हैं, उनका मान-सम्मान प्रायः लुप्त ही हो गया था। अब नारियाँ अपनी अस्मिता को पहचान रही हैं और जहाँ-जहाँ पहचान बनी है, वहाँ की नारियाँ स्वतंत्र हुई हैं। स्वतंत्रता का अर्थ पीड़ामय, घुटनामय जिंदगी से त्राण पाना, न कि पाश्चात्य सभ्यता से प्रेरित आचरण विहीन जीवन।

महिलाओं में बहुत बड़ी शक्ति होती है। यदि वह अपनी शक्ति का सदुपयोग करे, तो समुचित नारी जाति का उद्धार कर उन्हें सदियों पुरानी मानसिक दासता से मुक्त कर जीवन में नये प्रभात की किरण खिला सकती हैं। एक बार एक सभा में एक पुरुष ने कहा–हम चाहते हैं कि महिलाएँ आगे आवें; किन्तु वे स्वयं ही घर में रहना चाहती है। उन्होंने कहा कि महिला ही महिला की शत्रु बनी रहती है। वे ही दिन भर घर में रहती हैं। पुरुषों को तो अपने काम से ही फुर्सत नहीं मिलती। मैंने कहा–महिलाओं के इस संस्कार को बनाने में दोषी कौन है? सदियों से उन्हें आपलोगों ने कैद का वातावरण दिया, वही संस्कार के रूप में अंकुरित हो गया।

यदि आप नारियों को भी स्वच्छ हवा, स्वच्छ वातावरण, स्वच्छ संस्कृति देंगे, तो वह भी दुर्गावती, लक्ष्मीबाई की तरह बनकर अनेक रूपों में आपकी हर समस्याओं का समाधान कर देगी। कंधे-से-कंधा मिलाकर चल सकती है। अबतक जो भी हुआ, उसके लिए केवल दुःखी होने से कोई फायदा नहीं। अब हमारा कर्तव्य है कि उस राह पर हम आगे बढ़ें। अब हमें देखना है कि हमारी गलतियाँ कहाँ हो रही हैं।

अपनी गलतियों को सुधार कर अपनी नींव मजबूत बनानी चाहिए।

मूल में भूल :

मूल में भूल क्या है? यदि सचमुच हमें समाज को सुधारना है। सर्वप्रथम हमें अपनी गलतियों को चुन-चुनकर हटाना होगा। अपने घर के तौर-तरीकों में सुधार लाना होगा। परिवार की छोटी-छोटी बातों पर ध्यान देना होगा। परिवारों में पिता से पहले माता की आज्ञा का पालन होना चाहिए। यह काम पिता को ही शुरू करना चाहिए, ताकि बच्चे भी अनुशासित हों।

कहने का तात्पर्य पिता को ही बोलना चाहिए कि सभी काम माँ से पूछकर किया करो। ऐसा करने से हमारे परिवार में उच्च आदर्श बन जाएगा और परिवार में प्रेम की धारा फूट पड़ेगी। नारी का हृदय महान् होता है। परमात्मा ने उसके पास अनमोल खजाने को रखा है। वह उस खजाने को खोलकर अपने प्यार से परिवार, समाज और देश को लहलहा देगी। आवश्यकता है पुरुषों की नियत सही रहने की।

हम नारियों के मूल अवगुण–

और सभी बातों के साथ-साथ हमें अपने अवगुणों में झाँककर उन्हें भी दूर करना पड़ेगा। केवल हम्हीं इस बात को जान सकते हैं कि हममें कौन-कौन-सी बुराई है। हम अपने ईर्ष्या स्वभाव को दूर करें। दूसरों के कष्टों में उसका साथ दें। कोई आगे बढ़ने की कोशिश करता है, तो उसकी टाँग न खींचकर उसे सहारा दें। हमारी सफलता में जो भी बाधक है, हम उन्हें दूर करते जाएँ।

हम यह मानते हैं कि पुरुष उन्हें दबाव में रखना चाहते हैं; क्योंकि यह सदियों से चला आ रहा है। यह सच है कि परिवार के लिए दोनों की अहमियत बराबर है। दोनों में से जब भी कोई एक दूसरे पर दबाव डालते हैं, तो उस परिवार का सामंजस्य गड़बड़ा जाता है। जहाँ पति पत्नी की बातों को महत्त्व देते हैं, वह परिवार महान् हो जाता है, उदाहरण बन जाता है महादेव के परिवार की तरह। हमें अपना अधि कार लेना चाहिए, इसमें कोई बुरी बात नहीं। हमें अपने अधिकार के लिए अवश्य आवाज उठानी चाहिए और कभी भी अनीति के आगे नहीं

झुकना चाहिए। हमें हर कार्य धैर्य के साथ करना चाहिए।

प्यारी बहनो! हम अपने अवगुणों को सुधारने लगेंगे, तो हमारे अंदर की सोयी हुई दैवी शक्ति का उदय हो जाएगा और हम भी लक्ष्मी, सीता, सरस्वती, दुर्गा, लक्ष्मीबाई सभी बन जायेंगी।

प्यारी बहनो! जरा सोचें, क्या यह घाटे का सौदा है? घाटे का काम तो हम कर रहे हैं। क्या हम नहीं चाहते, हमारा नाम भी इतिहास के पन्नों पर लिखा जाए। हम दृढ़ संकल्प करें! हम परिवार समाज और देश में नारियों का नाम रौशन करेंगे।

दूसरी बात शिक्षा की कमी से काफी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। अतः देश के हर नागरिक को हर हाल में शिक्षित होना चाहिए। यह प्रयास हम सबों को करना चाहिए। अपने-अपने स्तर से जितने लोगों की हम शिक्षा में मदद कर सकते हैं, करें।

तीसरी बात पुरुष भाइयों को विरोधी नहीं बल्कि सहयोगी मानना चाहिए।

चौथी बात पुरुष भाइयों को स्वावलंबी होना चाहिए; किन्तु उच्छृंखल नहीं। आजकल उनमें अहंकार की अधिकता होने से परिवार में अशान्ति का साम्राज्य हो गया है। इसके लिए हमें ही लड़कियों को सही शिक्षा देनी चाहिए।

पाँचवीं बात है, आज के परिवेश में जब कि चारो ओर से नारी उत्थान एवं नारी स्वतंत्रता की आवाज अनवरत सुनाई पड़ रही है। तब प्रश्न यह उठता है कि इस स्वतंत्रता का वास्तविक अर्थ क्या है? साथ ही यह भी प्रश्न उठता है कि शिक्षित महिला हम किसे कहेंगे? स्वतंत्रता प्राप्ति के पहले तक पत्र लिखनेवाली महिला शिक्षित कही जाती थी। वक्त बदला, मान्यताएँ बदलीं और एकाध दशक तक मैट्रिक तक की शिक्षा महिलाओं को शिक्षित वर्ग की श्रेणी में ला देती थी। किन्तु आज तो शिक्षा के मापदंड काफी ऊँचे चले गये हैं। डॉक्टर, इंजीनियर, वकील, पुलिस, एकाउंटेन्सी, यहाँ तक कि वायु उड़ान और पर्वतारोहण जैसे वर्जित क्षेत्र में भी महिलाओं की सफलता अपनी दास्तान कह रही है।

विकास की दृष्टि से शिक्षित महिलाएँ कामकाजी हों, आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हों यह नहीं–यह एक अहम प्रश्न है। हमारे यहाँ महिलाओं को गृहलक्ष्मी, देवी आदि विशेषणों का भी एक वर्ग मानता है। दूसरा वर्ग यह भी मानता है कि यदि उन्होंने बाहर का क्षेत्र अपना लिया, तो घर अस्त-व्यस्त हो जाएगा। किन्तु अब सुविधाओं के सहयोग से समय का अभाव नहीं रहा। अतः उस खाली समय का सदुपयोग बाहर के कामों में लगाकर करें, न कि गपशप, किट्टी पार्टी एवं फैशनबाजी में।

हम महिलाएँ आर्थिक रूप से अपने पाँवों पर खड़ी हों, तो काफी हद तक शोषण अपने आप में कम हो जाएगा। और जब हम नारी उत्थान की बातें करते हैं, तो जबतक नारियों की शिक्षा का समुचित उपयोग न होगा, बात आगे न बढ़ेगी। अतः अब समय आ गया है कि महिलाएँ अपनी आंतरिक शक्तियों को पहचाने और नये-नये कार्यक्षेत्रों की ओर कदम बढ़ायें। घर की चहारदिवारी से निकलकर अपने आस-पास फैले विस्तृत आकाश की ओर देखें, तभी हम सही अर्थ में नारियों को सही दिशा दे पाएँगे, जिससे हमारा परिवार, हमारा समाज, हमारा राष्ट्र समुन्नत होगा।

अतः कामकाजी होने का अर्थ सही मायने में तभी सार्थक हो पाएगा, जब हम अपनी शक्तियों को पहचानकर अपना शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास कर घर-परिवार, समाज और राष्ट्र की मुख्य धारा से अपने आपको जोड़कर इनके विकास में सहयोगी बनें।

हमारे देश में लगभग ज्यादातर घरों में यही होता है, महिलाएँ कितनी भी पढ़ी-लिखी हों, सारे कार्यों को कुशलतापूर्वक सँभालते रहने पर भी पुरुषवर्ग उनके कार्यों का सम्मान नहीं करते। पुरुष चाहे कितने भी अच्छे कामों को करते हैं, नशा-पान करते हैं, झूठ बोलते हैं, खुद सम्मान पाना चाहते हैं, नारियों को सम्मान देने में उन्हें अपमान महसूस होता है; किन्तु ऐसा नहीं होना चाहिए। क्योंकि परमात्मा ने जो कार्य हम नारियों को सौंपा है, वे आर्थिक रूप से स्वावलंबी हो या न हो, काफी महान् कार्य है। अतः नारियाँ हर तरह से सम्मान के योग्य हैं।

मेरी पुरुष भाइयों से करबद्ध प्रार्थना है कि वे सम्मान देने में दुःखी न हों। हम जो भी देते हैं, हमें रिटर्न (बदले) में वही मिलता है। सम्मान, प्रेम देंगे, तो वही मिलेगा और अपमान देंगे, तो अपमान ही मिलेगा। नारी लक्ष्मी होती है। जिस घर में नारी का आदर नहीं होता, वहाँ हमेशा अशान्ति बनी रहती है।

सम्मान देना हमारा कर्तव्य है और सम्मान पाना हमारा अधिकार। परमात्मा ने हर कुछ पाने का दोनों को समान अधिकार दिया है। अतः हम बहनों को प्रेम से अपने कर्तव्यों का भी पालन करना है और धैर्य के साथ अपने अधिकारों की भी रक्षा करनी चाहिए। यदि न मिले, तो लड़ाई भी करनी चाहिए। उस लड़ाई में हम सभी बहनों को एक दूसरे का सहयोग करना चाहिए। और साथ-साथ अपनी आत्मिक उन्नति पर भी ध्यान देना चाहिए। यदि हम ऐसा कर सकेंगी, तो एक दिन सचमुच उन्नति के शिखर पर पहुँच जाएगा और हम नारियों को हमेशा अपने आप पर गर्व होगा कि हमने अपने देश के लिए, अपनी माँ के लिए कुछ किया। कुछ अंश में हम परम पूज्य गुरुदेव की आज्ञा का पालन कर पायेंगे।

समानता का बोध :

नारी के साथ जुड़े रहने पर ही नर का महत्त्व है। हमारे ऋषि-मुनि तथा हमारे वेद-शास्त्रों में नारी को बहुत ही ऊँचा स्थान दिया है। महर्षि कण्व ने एक बार अपने शिष्यों को यह समझाया कि व्यक्ति को कभी भी अपने बड़प्पन का अभिमान नहीं करना चाहिए। दृष्टांत के रूप में उन्होंने लघु कथा कही–'वन में खड़े एक वृक्ष के साथ लिपटी एक लता भी बढ़कर वृक्ष के बराबर हो गयी और फलने-फुलने लगी। एक दिन बेल को फलते देख वृक्ष को अहंकार हो गया, वह सोचने लगा, यदि मैं न होता, तो यह लता कब की नष्ट हो जाती। फिर क्या था, उसने लता को धमकाना शुरू कर दिया। अभी वह लता को डाँट ही रहा था कि दो पथिक उधर से निकले। उनमें से एक बोला–बंधु! देखिये, यह वृक्ष कैसा शीतल और सुन्दर है। इसपर यह लता पुष्पित हो रही है, आओ यहाँ बैठकर विश्राम करें। अपना सारा महत्त्व लता के

साथ है, यह सुनकर अहंकारी वृक्ष का अभिमान पलभर में नष्ट हो गया। उस दिन से वह लता को डाँटना बंद कर दिया।

कथा का मर्म समझाते हुए महर्षि बोले–शिष्यो! नारी से जुड़े रहने पर ही नर का महत्त्व है। दोनों एक दूसरे के सहयोगी हैं। ऐसे में किसी एक को कनिष्ठ या वरिष्ठ नहीं मानना चाहिए।

परमात्मा की सर्वोत्कृष्ट कृति नारी :

ईश्वर-कृत संस्था एक ही है। परिवार–सभी एक दूसरे को बहुत कुछ देते हैं और बदले में उतना पाते हैं, जो देने की तुलना में कम नहीं अधिक होता है। परिवार संस्था के सूत्र-संचालक परमात्मा ने नारी को बनाया है। वह पत्नी के रूप में नए परिवार का सृजन करती है। जननी के रूप में विस्तार करती है। उस परमात्मा के स्त्रष्टा को तोड़ा और मोड़ा न जाए, बल्कि अपना कौशल दिखलाने का अवसर दिया जाए। दबाने और जलाने से नारी ही नहीं मरेगी, वरन् सृष्टि की सुन्दरता और श्रेष्ठता मर जाएगी।

नारी उत्कृष्टता की जीवन्त प्रतिमा है :

मनुष्य का वरिष्ठ भाग नारी है। अंतर की परतों में वह एक से एक दिव्य तत्त्व को छिपाये बैठी है। पति के प्रति स्वेच्छा से समर्पण, उसके लिए सब कुछ लुटा देने का भाव देखते ही बनता है। बहन का भातृ-प्रेम कितना निर्मल कितना सौम्य कहा जा सकता है। इसे प्रेम की दुनिया ने अनोखी उपलब्धि ही कहा जा सकता है। अध्यात्म-शास्त्र का तत्त्व खोजना हो तो किसी पतिव्रता के चित्त और चरित्र की गहराई में उतरकर सहज ही देखा जा सकता है। संतान के लिए वह अपना शरीर, मन तथा श्रम का महत्त्वपूर्ण अंश जिस प्रकार बिखेरती है, उसे त्याग और बलिदान की देवी ही कहा जा सकता है। 'प्रेम' जिसे ईश्वर का स्वरूप कहा गया है, वह पितृकुल और पतिकुल के सदस्यों के साथ भाव भरे अनुदान प्रस्तुत कर बताती है कि प्रेम क्या है और कैसे किया जाता है। 'नारी देवत्व की मूर्तिमान प्रतिमा है।'

जिन्हें दिव्यदृष्टि मिली है, उसके लिए नारी के कलेवर में मूर्तिमान देवत्व आँकता है। वह आद्याशक्ति का प्रतीक है। वह लक्ष्मी है;

क्योंकि परिवार को अपने कर्तव्य के द्वारा सुसम्पन्नता से मरती है। वह सरस्वती है; क्योंकि उसके अंदर स्नेह पूरित है। वह दुर्गा है; क्योंकि जब वह प्रकट होती है, तो कोई महिषासुर उसके समक्ष टिक नहीं सकता। 'नारी मूर्तिमान उत्कृष्टता है।'

ब्रह्माजी ने कभी प्रजा का निर्माण कर प्रजापति का पद पाया होगा, पर अब तो उसकी प्रत्यक्ष भूमिका नारी को ही निभाते हुए देखा जाता है। नारी शक्ति में रहनेवाली आत्मा को यदि श्रद्धा की दृष्टि से देखा जा सके, तो वह मूर्तिमान सौंदर्य है, माधुर्य है, कला है, मधुर करुणा है, तपस्या है, पवित्रता है, जिसे उत्कृष्ट कहा जा सके।

नारी प्रत्यक्ष कल्पवृक्ष है : कहते हैं कल्पवृक्ष पर धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के चार फल मिलते हैं। नारी प्रत्यक्ष कल्पवृक्ष है। वह पिता का वात्सल्य उभारती है, भाई को पवित्रता प्रदान करती है, पति को अपूर्णता से छुड़ाकर पूर्ण बनाती है और संतान का तो वह प्राण ही है।

नारी कामधेनु है : सत्य है, शिव है, सुन्दर है। ब्रह्म की उस प्रत्यक्ष सशक्तता को नारी मानवीय चेतना के श्रद्धासिक्त मान भरे अभिनंदन। "स्त्रियाँ यदि विचार करेंगी कि समाज को अच्छा बनाने की जिम्मदारी उनकी है और उसके लिए कुछ त्याग और सेवा का व्रत लेना है, तो परिष्कृत समाज की आधी आवश्यकता तत्काल दूर हो सकती है।"

–संत बिनोवा

कला और करुणा की प्रतिमा नारी : नारी को काम कलेवर सुंदरता से, सरसता से, चिंतन से, सहयोग, श्रम और सृजन से, अंत:करण की करुणा से, सेवा और समर्पण से निरन्तर अनुप्राणित देखा जाता है। वह अपने आपमें पूर्ण है। अपनी इस पूर्णता से वह स्वजन संबंधियों की अभावग्रस्तता और आवश्यकता पूर्ण करती है। मातृशक्ति में कला और क्षमता का कैसा अद्‌भुत समन्वय है, उसे देखकर स्त्रष्टा और उसकी अद्‌भुत सृष्टि के सामने सहज ही मस्तक झुक जाता है।

"जिस जाति में माँ का सम्मान नहीं, उसके लिए समुचित व्यवस्था का ध्यान नहीं वह जाती, कभी ऊँची नहीं उठ सकती।"

–लाला लाजपत राय

वरिष्ठता में नारी का पलड़ा भारी है–नारी का व्यक्तित्व और कर्तव्य महान है। जननी और पत्नी के रूप में उसका त्याग-बलिदान शिवि, दधीचि और हरिश्चन्द्र जैसा है। जो मनुष्य गढ़ सके उसे दूसरा परमेश्वर ही कह सकते हैं। परिवार एक छोटा राज्य है। उसकी संचालिका को साम्राज्ञी कहने में किसी प्रकार की अत्युक्ति नहीं है।

सुविधा, सम्पन्नता, शोभा, शालिनता का वातावरण बनाकर छोटे-से घरौंदे को स्वर्ग बनाने की क्षमता होने के कारण वह गृहलक्ष्मी है। ऐसी नारी कनिष्ठ कैसे हुई? निकृष्ट कैसे मानी गयी? नर ने उसका अभिनंदन करने के स्थान पर उसपर अपना आधिपत्य कैसे जमा लिया? यह सभी अनबूझ प्रश्न अंतरिक्ष में गूँजते हैं और समाधान पूछते हैं।

नारी को भी परिपूर्ण मनुष्य ही माना जाए–नारी को न वरिष्ठ न कनिष्ठ माना जाए। वह भी पूर्ण मनुष्य है। हर मनुष्य को जो कर्तव्य निभाने की जिम्मेदारी उठानी पड़ती है और अधिकार पाने की सुविधा रहती है, वैसी ही परिस्थिति नारी के लिए भी उपस्थित है।

किसी को छोटा, किसी को बड़ा मानने से, दबाने की भावना से, प्रताड़ना की भावना से, जबरदस्ती सेवा लेने की भावना से यह समस्या उत्पन्न होती है। यदि दोनों को दो हाथ की तरह और दोनों पैरों की तरह एक दूसरे का पूरक माना जाए, तो सारी समस्या ही खत्म हो जाएगी। नारी भी नर की ही तरह पूर्ण मनुष्य है।

अवस्थामूलक नारी जीवन : जिस तरह टूटी हुई प्रतिमा के देव मंदिर से दर्शनार्थी गायब हो जाते हैं। वह मंदिर महत्त्वहीन हो जाता है। वैसे ही नारी शरीर से सँभली तो रहे, पर उसका हृदय टूटा हुआ हो और उसे प्रतिबंधित रखकर कोई आनंदमिश्रित वातावरण की कल्पना करे, तो उसके जैसा अभागा कौन होगा। आज हमारे गृहस्थ देवमंदिर भी विखंडित हुए पड़े हैं। वहाँ पुरुष भी हैं, नारियाँ भी; किन्तु देवता और भक्त के बीच की श्रद्धा शृंखला टूट चुकी है, उसे जोड़े बिना मंदिर की पवित्रता कैसे प्रतिष्ठित होगी। नारी के प्रति सामाजिक जीवन में आनंद, आदर और आस्था पैदा करके ही उस विसंगति को दूर किया जा सकता है। यह पुण्य कार्य आज से, अभी से, अपने घर से आरंभ

कर देना आवश्यक है।

"इस विज्ञान के युग में जब कि पुरुषों की बुद्धि स्तंभित हो गयी है, उस समय अगर स्त्रियाँ काम में आती हैं और अपने दैवी गुणों के साथ, संयमशीलता के साथ अपनी मातृशक्ति के साथ आती है, तो करुणा का राज्य स्थापित कर सकती हैं। मातृशक्ति नारी का अध्यात्म स्वरूप हैं।" (महात्मा गाँधी)

नारी कामधेनु है, कल्पवृक्ष है–प्रेम नारी का जीवन है। अपनी इस निधि को वह अतीतकाल से मानव पर न्योछावर करती आयी है। कभी न रुकनेवाले इस अमृतनिर्झर ने संसार को शीतलता दी है। इस कल्पवृक्ष की छाया में बैठकर मनुष्य को आत्मतृप्ति मिलती है। अतः उसे काटने की नहीं, जीवन देने की बात सोची जाए, अन्यथा मानवता अपने पथ से भटककर न उजलेवाले गर्त में गिर सकती है।

"स्त्री-पुरुष का भेद बाह्य है, मूलभूत नहीं।" (बिनोवा भावे)

नारी की वरिष्ठता स्वीकारें–नर और नारी के युग्म में प्रकृतितः वरिष्ठता नारी की है। वही समस्त मनुष्य जाति को अपने उदर से जन्म देती है। वह अपना लाल रक्त श्वेत दूध के रूप में परिणत करती और बिना किसी प्रकार का अहसान जताए परिपूर्ण स्नेह वात्सल्य के साथ उसे पिलाती है।

नारी दाहिनी भुजा की तरह साथी, काया की तरह सहचरी और हृदय की धड़कन की तरह जीवनदातृ है। इसका एक भावपूर्ण कथाचित्र सती की मृत्यु के बाद शिव के विक्षिप्त हो उठने की कथा से मिलती है। गृह में जिस गृह को लक्ष्य माना गया है, वह कोई इमारत नहीं, बल्कि गृहलक्ष्मी ही है। उसी के परिश्रम से, सृजन से नये परिवार का नये वंश का शुभारम्भ होता है।

नर-नारी के बीच महान सद्भावना की आवश्यकता–पुरुष विष्णु है, स्त्री लक्ष्मी; पुरुष विचार है, स्त्री भाषा; पुरुष धैर्य है, स्त्री शांति; पुरुष प्रयत्न है, स्त्री इच्छा; पुरुष दया है, स्त्री दान; पुरुष मंत्र है, स्त्री आचरण; पुरुष दीपक है, स्त्री प्रकाश; पुरुष दिन है, स्त्री रात; पुरुष वृक्ष है, स्त्री फल; पुरुष सागर है, स्त्री नदी; पुरुष आत्मा है, स्त्री शरीर।

विष्णु पुराण में यह बताया गया है कि पुरुष और स्त्री की अपने-अपने स्थान में महत्ता है। एक के अभाव में दूसरा कोई महत्त्व नहीं रखता। नर के प्रति नारी से जितनी उदार और मृदुल होने की अपेक्षा की जाती है, ठीक उसी के अनुरूप पुरुष को भी बनना पड़ेगा। विशृंखलता नारी ने नहीं, नर ने उत्पन्न की है। इसलिए उदार सहयोग के सृजन में अपनी सद्भावना का परिचय देने के लिए उसे ही आगे आना पड़ेगा।

"स्त्री पुरुष में एक ही पुरुष तत्त्व जो चेतना है, दोनों के लिए शरीर उसी प्रकृति तत्त्व के बने हैं। दोनों की संसारी शक्ति और संसारी बंधन समान है और मोक्ष का आधार भी दोनों का समान है। दोनों ही प्रगति के भी समान अधिकारी हैं।" (संत बिनोवा)

समुन्नत परिवार सुसंस्कृत नारी ही बना सकेगी—व्यक्ति और समाज दो पहिये हैं। जिसके सुसंचालन की धुरी परिवार संस्था को ही माना जा सकता है। धुरी में गड़बड़ी होने से प्रगति रथ का आगे बढ़ना कठिन है। इस तथ्य को समझा जा सकेगा, तो व्यक्ति को समर्थ और परिवारों को सुसंस्कृत बनाने की आवश्यकता समझी जा सकेगी।

परिवार संस्था और सुसंस्कृत नारी एक ही तथ्य के दो पक्ष हैं। पिछड़ेपन से जकड़ी हुई उपेक्षित और तिरस्कृत नारी रसोईदारिन, चौकीदारिन एवं प्रजननकत्री भर रह सकती है। यदि समुन्नत परिवारों की आवश्यकता समझी जा सकेगी, तो नारी को प्रगतिशील, सुशिक्षित और सुसंस्कृत बनाने के अतिरिक्त और कोई मार्ग नहीं।

ससुराल में नारी को अतिथि-सत्कार प्राप्त होना चाहिए—नारी ससुराल में जाकर पूरी तरह अतिथि की भूमिका निभाती है। पति की सहचरी और पूरे परिवार की भाव भरी समृद्धि एवं अनवरत श्रम साधि का के रूप में उस गृहस्थ को कामधेनु की भाँति समुन्नत बनाने में अपने व्यक्तित्व का चिरस्थायी उत्सर्ग करती है। प्राचीनकाल में उदारमना संत ऐसा ही अनुग्रह करने गृहस्थों के यहाँ पधारते थे और उन्हें अपने पुण्य प्रभाव से सुखी समुन्नत बनाने का प्रयास करते थे।

रूखा-सूखा खाकर अनुग्रहों से इस प्रकार लाभान्वित करनेवालों

में स्वर्ग की कामधेनु और पृथ्वी की नारी की गणना हो सकती है। जिस घर में वह पहुँचे, वहाँ उसे भाव भरा सत्कार और देवोपम सम्मान मिले। इसी में अतिथिदेव के प्रति कर्तव्य-पालन का सांस्कृतिक संरक्षण है।

"पति-पत्नी का ऐसा व्यवहार करे, जिससे उनकी आपसी आशंका एव उद्वेग नष्ट हो जाए। एकता बढ़े, विश्वास सघन हो तथा उत्साह प्रबल। इससे गृहस्थाश्रम में सुख की अनुभूति होती है।" साने गुरुजी

न्याययुग की वापसी और नारी की समर्थता—समय की माँग है कि रचनात्मक प्रयोगों को हाथ में लिया जाए। महत्त्वपूर्ण यह है कि नारी को उतना ही सुयोग्य एवं समर्थ बनने का अवसर मिले, जितना कि नर को मिल रहा है। क्षति की पूर्ति के लिए यह विशेष प्रयास और साहस करना पड़ेगा। नारी को नर के समतुल्य बनाने के लिए किए जानेवाले प्रयत्नों में जितनी तत्परता बरती जाएगी, न्याययुग की वापसी उतनी ही सुलभ होगी।

"गृहस्थ जीवन के दो पहियों की तरह है, जिसकी समानता नर और नारी के समग्र सहयोग पर निर्भर है। गृहस्थ एक जीवन्त आनंद है। किन्तु गर्त यह है कि वह सघन आत्मीयता के आधार पर विनिर्मित हुआ है।"—मेरी स्टोप

नारी की एकाकी सत्ता समग्र उद्यान के समान है—जैसे जंगल में खजूर के पेड़ अकेले ही खड़े रहते हैं और दूसरों की तुलना में बड़प्पन की भी घोषणा करते हैं। उस वृक्ष से पूरा उद्यान आकर्षण का केन्द्र बना रहता है और अपने अस्तित्व से अनेक की अनेकानेक आवश्यकताएँ पूर्ण करता है। पक्षी अपने परिवार बसाते हैं। माली का परिवार अपना गुजारा करता है।

परिवार भी एक बगिया है, जिसमें छोटे पौधे और बड़े वृक्ष मिलकर रहते तथा सिंचन-पोषण का पूरा लाभ उठाते हैं। संयुक्त परिवार का हर सदस्य कितना सुखी रहता है, उसे बगीचे के अंदर लगे पेड़ों से पूछा और जाना जा सकता है।

नारी की सत्ता मूर्तिमान परिवार है। उसे समुन्नत, सुसंस्कृत बना सकने में स्त्रष्टा ने हर दृष्टि से उसे समर्थ बनाया है। वह जहाँ रहती है,

उद्यान बनाकर ही रहती है तथा अपने कर्तव्य से सारे वातावरण को खुशहाल रखती है।

नर-नारी के बीच का सघन सहयोग–मित्रता की नीति ही सबसे सुन्दर है। स्नेह, सम्मान और सहयोग का समानता के आधार पर आदान-प्रदान करने की नीति अपनाकर सद्भाव और प्रेम बढ़ सकता है।

"मैं चाहता हूँ स्त्रियाँ अपनी आत्मशक्ति का भाव रखकर सामने आ जाएँ। उसके लिए स्त्रियों को तैयार होना पड़ेगा। स्त्रियाँ शान्ति से कार्यभार उठा लेंगी, तो दुनिया बदल जाएगी। आज देश के सामने जो समस्या है, सभी हल हो जाएगी।" (टी०एल० वास्वानी)

पिछड़ापन अकुलाहट के बिना नहीं हटेगा–पिछड़ापन किसी भी कारण से किसी के भी कंधों पर लदा हो, उसका भार उतारने के लिए उसे ही करवट बदलनी पड़ती है। पुकारने और माँगने के बाद ही इस दुनिया में अनीति हटाने की आवश्यकता समझी जाती है, तभी न्याय मिलता है। यदि मनुष्य व्याकुल न हो, तो संसार में न्याय भी खत्म हो जाएगा।

मनुष्य की चेतन आत्मा को भी अपने ऊपर अनीति का आक्रमण सहन नहीं करना चाहिए। दूसरों के साथ अनीति न करे; किन्तु अनीति सहन करना भी अन्याय है। पीड़ितों को भाग्य, विधान, संतोष, शान्ति, क्षमा के भरोसे नहीं रहना चाहिए, नहीं तो पिछड़ेपन की दुर्गति से छुटकारा नहीं मिल पायेगा।

नारी को केवल न्याय चाहिए और कुछ नहीं–दूसरों को श्रेय सम्मान एवं सहयोग देना दैवी गुण है। इतना न भी बन पड़े, तो कम-से-कम जीने के अधिकार से वंचित न किया जाए। नारी अपने महान् अनुदानों का प्रत्युपकार नहीं चाहती। उसकी माँग इतनी भर है–मनुष्य जाति में जन्म लेने के कारण उसे अपने मानवीय अधिकारों से वंचित न होना पड़े।

"जिस देश अथवा केन्द्र में नारी पूजा नहीं, उसका यथोचित सम्मान नहीं, वह देश या राष्ट्र कभी महान् नहीं हो सकता। नारीरूपी शक्ति की अवहेलना करने से ही आप हमारा अधःपतन हुआ है।

नारियाँ माता के समान प्रतिमा हैं, शक्तिस्वरूपा हैं। जबतक उनका उद्धार न होगा, तबतक हमारे देश का उद्धार असंभव है।"

(स्वामी विवेकानन्द)

नारी के साथ अदूरदर्शी नीति नहीं बरतनी चाहिए–शोषण का लाभ तुरत मिलता है और पोषण का लाभ समय आने पर मिलता है। उसमें धैर्य की आवश्यकता होती है। जैसे सरसों का तेल तुरत निकाला जा सकता है, यानी पेरने के साथ मिल जाता है; किन्तु उसे उगाकर अनेक गुणा लाभ उठाने के लिए धैर्य की आवश्यकता है। अदूरदर्शिता तुरत लाभ देखते हैं; किन्तु बाद में घाटा सहती है। दूरदर्शिता कृषि करने, व्यापार करने, विद्याध्ययन करने और व्यायाम में श्रम की तरह पहले तो अखरती है, पर उसे अपनानेवाले लाभ ही लाभ उठाते हैं।

उठने की उत्कट अभिलाषा जगायें–संसार के पिछड़े समुदाय में नारी ही सबसे बड़ा वर्ग है। नारी को पिछड़ेपन से यदि छूटना है या उसे छुड़ाया जाना है, तो नर के लिए आवश्यक है, वह उसे स्वयं अपने पैरों पर खड़े होने की प्रेरणा दे और नारी उठ खड़े होने के लिए कटिबद्ध हो जाए। जबतक हमारे अंदर उत्कट अभिलाषा उत्पन्न नहीं होगी, तबतक उदार अनुदानों का योगदान भी कोई कारगर समाधान प्रस्तुत नहीं कर सकता।

हमें याद रखना होगा कि बीज की शक्ति जीवित होगी, तभी बाहरी खाद हमारी सहायता करेगी। सड़े बीज से संभव नहीं होगा। उसी तरह नारी उत्थान इस युग की महत्त्वपूर्ण आवश्यकता है। इसके लिए साधनों को जुटाना आवश्यक है। किन्तु सफलता मिलेगी तब, जब नारियाँ भी इसके लिए पूरी तरह प्रयासरत हों।

नारी को साथ लिये बिना उन्नति पूर्ण नहीं–उन्नति तभी संभव है, जब गाड़ी के दोनों पहिये साथ-साथ आगे चलते जाएँ। एक आगे जाए, एक पीछे रह जाए, तो उससे खींचतान भर होता रहेगा। प्रगतिशील देशों में नारी भी नर के कंधे-से-कंधा मिलाकर अपने देश को आगे बढ़ाने की सुविकसित स्थिति में रहती है। यदि हमें सचमुच

ही प्रगति की दिशा में आगे बढ़ाना है, तो नारी को साथ लेकर चलना पड़ेगा।

"मुझे किसी से ज्यादा उम्मीद है सेवा करने की, तो बहनों से, औरतों से है; क्योंकि उनलोगों में अभी तक खुदगर्जी नहीं आयी है। परमात्मा के लोग बेगर्जी होते हैं और परमात्मा का आशीर्वाद वे ही हासिल करते हैं।" (सीमान्त गाँधी)

अनीति के आतंक से कभी समझौता न करें–पिछड़े लोगों को कभी भी अनीति के साथ समझौता नहीं करना चाहिए। संघर्ष के लिए साधन न हो, तो भी असहमति और अस्वीकृति की ज्योति बुझने नहीं देना चाहिए। न्याय के लिए आग्रह जारी रखा जाए, तो आतंक के पैर नहीं जम सकते। यह याद रखना चाहिए कि मनुष्य यदि अनीति के आगे झुके नहीं, तो उसे और कोई झुका नहीं सकता।

जागृत महिला परिवार मंदिर की अधिष्ठात्री देवी–परिवार एक शरीर है और जाग्रत महिला उसका प्राण। शरीर एक ढाँचा होता है; किन्तु स्फुरण और प्रखरता प्राण की शक्ति की ही होती है।

यों नारी भी एक प्राणी है; किन्तु उसका गौरव जाग्रत महिला सिद्ध होने में है। जाग्रत का अर्थ है–अवनति को रोकना और प्रगति को बढ़ाने में सक्षम। नारी की जागरुकता साधारणतः उसकी वेश-भूषा या कला-कौशल, शिष्टाचार एवं व्यवस्था क्रम में दिखलाई पड़ती है, पर उसकी गरिमा का क्षेत्र बहुत बड़ा है। परिवार को सुव्यवस्थित, संतुष्ट, समुन्नत एवं सुसंस्कृत बनाने में जिसने जितना योगदान दिया है, इसके लिए जिसने आत्मनियंत्रण का परिचय दिया है, उसे उसी स्तर की जागृत महिला मान सकते हैं। जागृत महिला परिवार में निवास करनेवाली गृहलक्ष्मी एवं देहधारी देवी है।

पुरुष का पौरुष इसी में है कि वह अपनी जन्मदात्री, सहचरी एवं शालीनता की संरक्षिका नारी के पुनरुत्थान में प्राण-मन से योगदान करे। इस पुण्य बेला में समर्थ कहलानेवाले प्ररुष को यह दायित्व उठाना ही चाहिए, ताकि हमारा समाज हर तरह से समुन्नत हतो सके।

"पुरुषों को बचाकर अपने को बचाना–पुरुषों को पुरुष

बनाकर अपने नारीत्व का अभ्युदय करना, इसी में सच्चा कल्याणकारी नारी उद्धार है। भगवान नारी में सुबुद्धि जागृत करे, जिसमें वह अपने उत्तरदायित्व को समझे और स्वधर्मपरायण होकर जगत् का परम मंगल करे।" (हनुमान प्रसाद पोद्दार)

नारी पारिवारिकता की प्रतिमूर्ति–परिवार मात्र एक संगठन नहीं, बल्कि तत्त्वदर्शन भी है। जहाँ उपेक्षा की गयी, वहाँ सर्वनाश हो गया। विकास का एक ही आधार है–भाव भरा सहयोग। पारिवारिकता का अभ्यास घर कुटुम्ब की पाठशाला से आरंभ होता है। संस्कारों की जीवन में स्थापना के लिए यही प्रयोगशाला सफल होती है। यही है वह ध्रुव केन्द्र जिसपर मानवी प्रगति और सुख-शान्ति को निर्भर समझा जा सकता है। नारी पारिवारिकता की मूर्तिमान प्रतिमा है। नारी का उत्कर्ष प्रकारान्तर में पारिवारिकता के तत्त्वज्ञान को परिपुष्ट करता है।

"नारी जगत् की एक पवित्र स्वर्गीय ज्योति है। त्याग उसका स्वभाव, प्रदान उसका धर्म, सहनशीलता उसका व्रत और प्रेम उसका जीवन है।" (आचार्य चतुरसेन शास्त्री)

सहकारिता का संवर्धन पारिवारिक वातावरण में–सहकारिता और सभ्यता एक ही बात है। जो मिल-जुलकर रहते हैं, वे सुखी भी बनते हैं और समुन्नत भी। उन्नति के सुखद फल सहकारिता के बेल पर ही लगते और फलते हैं। जो इस भावना का जितना विकास और उपयोग कर पाते हैं, वे उतने ही सुसंस्कृत माने जाते हैं। परिवारों में यदि सुसंस्कारिता और सुव्यवस्था का समावेश किया जा सके, तो उस आनंद और वातावरण का अनुभव अपने इन्हीं घरौंदों में कर सकते हैं, जिनके सहारे देवता सामान्य से असामान्य बनते हैं।

"रूढ़िवादिता जनित प्रतिबंध एवं आत्महीनता प्रगतिशीलता के नाम पर स्वच्छंदता एवं अहंकार दोनों नर-नारी को संयुक्त इकाई के रूप में परिवर्तित होने में बाधक है। इन बाधाओं को दूर करना तथा शिव एवं शक्ति के रूप में खड़ा करना ही नारी जागरण एवं समाज निर्माण का मुख्य आधार बन सकता है।" (टी०एल० वास्वानी)

नीति प्रतिष्ठा का आग्रह भी तो हो–नारी के पिछड़ेपन में

पुरुष की बड़ी भूमिका रही है। आतंक की शक्ति से सभी परिचित हैं, पर दृढ़ता की सामर्थ्य की भी जानकारी होनी चाहिए। नारी भी मनुष्य है। मानवी गरिमा की रक्षा में उसका भी योगदान होना चाहिए। आतंक रुके या न रुके, उसे अपनी ओर से अनीति को मान्यता नहीं देनी चाहिए नीति की प्रतिष्ठा का आग्रह जितना प्रबल होगा, उतनी ही तीव्रता से आतंक का अंत हो सकेगा।

नर और मानव जाति के दो अविच्छिन्न पक्ष हैं। दो हाथ मिलाकर काम करते और दोनों पैर मिलाकर चलते हैं। दोनों की सार्थकता मिल-जुलकर काम करने में है। ऐसा सार्थक समन्वय, भाव भरी मित्रता और उदार सहकारिता के आधार पर ही संभव है। साथी का सच्चा सम्मान पाना इसके बिना शक्य नहीं है।

"पत्नी के समान हितकारी और दुःखों से उबारनेवाला न तो कोई पुण्य है, न तीर्थ और न सुख।" (पद्म पुराण)

उपेक्षा के रहते उपयोगिता संभव नहीं—उपेक्षित व्यक्ति निरर्थक बनकर रह जाता है। जिसका महत्त्व समझा जाता है, उसे सुरक्षित रखा जाता है और अधिक उपयोगी, सुंदर, समुन्नत बनाने का प्रयत्न किया जाता है। अपने आपकी उपेक्षा करनेवाले जीवने का महत्त्व नहीं समझ पाते। नारी का महत्त्व भी जीवन का महत्त्व न समझने की भाँति हो गया, गुजरा समझा गया। कोयले की खदान में हीरा भी उसी मूल्य का है, जितना की जलावन की ढेर। नारी ही क्यों किसी भी पदार्थ या प्राणी का महत्त्व गिरा दिया जाए और उसे उपेक्षित रखा जाए, तो वह बहुमूल्य होते हुए भी निर्बल बनकर रह जाएगा।

जीवन हो या नारी, समय हो या धन, यदि उसका महत्त्व और सही उपयोग समझा जाएगा, तो ही वह प्रयत्न होगा, जिसके आधार पर उसकी गरिमा का चमत्कार देखा जा सके।

"नारी की मुस्कान में जीवन का स्त्रोत झरता और अमृत बनता है।" (रवीन्द्रनाथ टैगोर)

मनुष्य में देवत्व के अवतरण का लक्षण—देवत्व की दृष्टि से देखने पर नारी मात्र भगिनी, पुत्री, माता एवं सहचरी रह जाती है। इसी

प्रकार नर मात्र भाई, पुत्र, पिता और सखा भर दीखते हैं। इस प्रकार की पवित्रता का अवतरण अंतःचेतना में होने लगे, तो समझना चाहिए, मनुष्य में देवत्व का अवतरण होने लगा।

गृहस्थ का तपोवन : जिस प्रकार सूर्य आकाश में तप करता है, उसी प्रकार गृहस्थ घररूपी आकाश में तप करे। पति पत्नी मिलकर सुमति सम्पन्न करे। एक रथ में जुते दो घोड़ों की तरह दोनों परिवार का संचालन करे। जैसे मेघ और नदी मिलकर समुद्र को पूर्ण करते हैं, उसी प्रकार पति-पत्नी मिलकर इस विश्व का श्रेय साधन करे।

सहयोग और सद्भाव की रीति ही श्रेयस्कर है—नर बुद्धि का प्रतिनिधित्व करता है और नारी भावना की प्रतिमा है। बुद्धि और हृदय के समन्वय से ही व्यक्तित्व में पूर्णता आती है। नर की शक्ति और नारी की श्रद्धा का समन्वय होने से ही एक पूर्ण मानव का दर्शन संभव है। मानवी सत्ता की सबसे महत्त्वपूर्ण विभूति है—उसका दृष्टिकोण। उसका जैसा उपयोग जिस भी पदार्थ या प्राणी पर किया जाता है, उसकी स्थिति उसके अनुसार ही बन जाती है। 'पत्थर' प्रयोगशाला के हर परीक्षण में जड़ ही रहेगा, पर श्रद्धा उसमें भगवान प्रकट कर देती है। नारी के प्रति पवित्रता की, करुणा की, श्रद्धा की, उदारता की, मूर्तिमान प्रतिमा जैसी स्थापना की जा सके, तो निस्संदेह हम इस संसार की जीती-जागती, हँसती-हँसाती, भाव भरे अमृत बरसाती २०० करोड़ देवियों के दर्शन करते रह सकते हैं। यह कल्पना नहीं, यथार्थता भी है।

नारी श्रद्धा और श्रेष्ठता की अधिष्ठात्री—जन्म से लेकर मरण पर्यन्त नारी जिस रीति-नीति को सहज स्वाभाविक क्रम से अपनाती है, उसे उच्च स्तरीय परमार्थ परायणता की संज्ञा दी जा सकती है। बच्चे से लेकर वृद्धों तक, असमर्थों से लेकर समर्थों तक सभी को उसके आंचल की छाया मिलती है। मातृशक्ति की गरिमा समझी जा सके तथा उसे श्रद्धासिक्त परिपोषण दिया जा सके, तो देवी नाम से संबोधित की जानेवाली इस धरती को देवताओं के स्वर्ग जैसी शान्ति और समृद्धि से भर सकती है।

"पति के लिए चरित्र, संतान के लिए ममता, समाज के लिए

शील, विश्व के लिए दया और जीव मात्र के लिए करुणा संजोनेवाली महाकृति का नाम नारी है।" (महर्षि रमण)

नारी इस धरती का श्रेष्ठतम सारतत्त्व–सृष्टि की मुकुटमणि समझा जानेवाला मनुष्य प्राणी जिस जननी की कोख से उत्पन्न होता है, उसे पृथ्वी से भी महान् माना जाएगा। आत्मरक्षा तक में असमर्थ मानवी शिशु की काया माता की परिचर्या अहर्निश प्राप्त करने के उपरांत ही जीवन धारण किये रहनेयोग्य बनती है। नारी में करुणा, सहनशीलता, क्षमा, सेवा और समर्पण की विभूतियाँ कूट-कूटकर भरी हैं। इन अनुदानों के कारण बालक से लेकर वृद्ध तक को वह कृतकृत्य करती रहती है। नारी जीवंत सरसता है। छोटे साथी, वृद्ध सभी, उस कल्पवृक्ष की छाया से अपने-अपने स्तर के वरदान प्राप्त करते हैं। नारी सुषम है, कला है, आशा है, जीवन है–सब कुछ है। उसे इस संसार की श्रेष्ठतम तत्त्व की संज्ञा दी जा सकती है।

नारी की गरिमा ही भारी पड़ती है–उपेक्षा उसकी होती है, जिसका मूल्य कम माना जाता है। भीलनी हीरे का मूल्य नहीं समझ पाती। यह ठीक है कि नारी को नर का कुछ सहयोग चाहिए; किन्तु यह भुलाया नहीं जा सकता कि नारी की सद्भावना के सहारे ही उसकी भाव संवेदना की मर्मस्थली जीवित है। नारी माता है, वह महान् है, उसके द्वारा प्रदान की जानेवाली विभूतियों का हम मूल्यांकन नहीं कर सकते।

नर और नारी की एकात्मकता–मूल वहाँ से आरंभ हुई, जहाँ से नारी को नर सत्ता का अभिन्न अंग न मानकर उसे उपयोग का साधन मानने की कुकल्पना किसी के मस्तिष्क में उठी। दोनों परस्पर पूरक ही नहीं, दोनों एक दूसरे के साथ इतनी सघनता से जुड़े हुए हैं कि किसी को किसी से पृथक् करने की तो बात ही नहीं बनती। फिर भोक्ता और भोग्य का रिश्ता तो बन कैसे सकता है।

माता गया या छाय नहीं है। वह संतान की सृजेता पोषक और संरक्षक है। दाम्पत्य जीवन में पुरुष को सरसता, सहकारिता, सेवा के जितने अनुदान प्रदान करती है, उसे देखते हुए उसे आश्रयदाता,

अन्नदाता, जीवनदाता, कामधेनु ही कहा जाएगा। जिसके प्रति अनवरत कृतज्ञता ही बरसाई जा सकती है। दुर्गति से बचने के लिए स्वतः का प्रयास आवश्यक है। नारी स्वयं ऊँचा उठने का प्रयास करे, अपनी स्थिति सुधारे। अनीति तभी तक लदी रह सकती है, जबतक उसके प्रति अपने अस्वीकृति स्पष्ट व्यक्त न की जाए।

बच्चे को उँगली का सहारा तब मिलता है, जब वह अपने पैरों पर खड़ा होने का प्रयास करता है। नारी को अपने उत्कर्ष की आवश्यकता अनुभव करने के लिए प्राणवान चेष्टा करने के लिए अपने पुरुषार्थ को आप जगाना पड़ेगा। अनुकूलता और सहायता पाने के लिए इतना तो हर किसी को करना पड़ता है। नारी का परित्राण भी उसके खुद के प्रयासों के बिना संभव नहीं।

"गया हुआ धन पुनः प्राप्त हो सकता है, पर गया हुआ समय पुनः प्राप्त नहीं होता। धन की तरह समय को तिजोरी में बंद करके भी नहीं रख सकते। अतः हर समय सावधान रहकर समय का सदुपयोग करना चाहिए।" (स्वामी रामसुखदासजी)

अनीति को स्वीकार न करें–जबतक दुर्बलता रहेगी, तबतक उससे अनुचित लाभ उठाने के लोभ किसी-न-किसी समर्थ पर चढ़ा ही रहेगा। गंदगी से बदबू उठती है और दुर्बलता की मांद से दुष्टता पनपती है। अनीति को अस्वीकृत करनेवाला कष्टों में पड़ सकता है, पर हारता नहीं है। सत्य ही जीतता है, असत्य नहीं। शर्त एक ही है कि दुष्टता को स्वीकार न करने की साहसिकता को जीवित बनाये रखा जाए।

नर और नारी के मानवी अधिकार एक हैं। ईश्वर ने उन्हें एक ही मनुष्य जाति के दो अविच्छिन्न घटक बनाया है। सहयोग और सद्भावना की दृष्टि से दोनों पक्ष एक दूसरे को श्रेष्ठ मानें, श्रेय दें और नमन करें। यही शालीनता है। इससे न्याय प्रतिपादित समानता का सिद्धांत किसी प्रकार भी कम नहीं होता। अनीति सहने की तुलना में पतिरोध का संकट भारी नहीं, हल्का ही पड़ता है। प्रजनन के अतिरिक्त उत्तरदायित्व से शारीरिक क्षमता में कमी तो आएगी ही। इसे दुर्बलता समझा गया। दुष्टता को खुला खेल खेलने का अवसर मिल गया। इसमें

दोष दुष्टता का तो है ही, दुर्बलता भी निर्दोष नहीं है; क्योंकि उसने अनीति के आगे सिर क्यों झुकाया? हमारा संकल्प दृढ़ होना चाहिए। संकल्पवान व्यक्ति एक दीपक की तरह छोटा ही क्यों न हो, भगवान् अवश्य उसी मदद करते हैं। अतः कहा गया है–भगवान् के यहाँ देर है, अंधेर नहीं। हमें नारियों को जगाने का दृढ़ संकल्प लेना है।

"दीपक जल रहा था। घी चुकने को था। दीपक की ओर धीरे-धीरे कदम बढ़ाते अंधकार ने ठहाका लगाया और कहा–अरे दीपक! तुम्हारा अंत निकट है। अब यहाँ हमारा साम्राज्य होगा। दीपक ने कहा–बंधु! मैं एक छोटा-सा दीपक रात भर तुमसे लड़ता रहा और तुम इतने फैलाव के बावजूद मुझे नष्ट नहीं कर पाये, तो उन भगवान् भुवन भास्कर से क्या लड़ोगे, जो सारी सृष्टि के तमस् को दूर करते हैं। अँधेरा कुछ बोलता, उससे पहले ही प्रभात की पहली किरण धरती से टकरायी और शीघ्र ही भगवान् सूर्य का रथ आकाश में आरूढ़ हो गया। संकल्पवान् व्यक्ति एक दीपक की तरह छोटा ही क्यों न हो, देर-सबेर भगवान् किसी ने किसी रूप में उसे सहारा देने पहुँच ही जाते हैं।"

–संगीता मिश्र

शिक्षित महिलाएँ अहंकार का त्याग करें–व्यापक नारी जागरण के लिए शिक्षित नारियों को आगे आना होगा। धनाढ्य महिलाएँ समय की माँग को पहचानें, अपने अहंकार को त्यागें और अपनी सुख-सुविधाओं को कम करते हुए उस बचत राशि एवं समय को बचाकर महिलाओं के कल्याण में लगावें। जो अध्यापक, डॉक्टर एवं उच्च पदों पर आसीन हैं, उनके पास समय का अभाव है; किन्तु वे अपनी बहनों की उन्नति के लिए आगे आवें। शिक्षित बहनें जहाँ भी हों, अपने क्षेत्र में महिलाओं के उत्थान के लिए कार्य करें। उनका भी सहयोग लें, जो कम पढ़ी हैं; किन्तु सेवा-भावना रखती हैं।

शिक्षित बहनें अपनी शिक्षा योग्यता का उपयोग रचनात्मक कार्यों में भी कर सकती हैं, जिससे समाज को ज्यादा लाभ मिलेगा। सेवा साधना के बदले संतोष और सम्मान भी कम उपलब्धि नहीं है।

"सहयोग के लिए सद्भावना की आवश्यकता है, तो हर जगह

है। किन्तु नारी की प्रकृति के अनुरूप उसे अधिक स्नेह, सम्मान और विश्वास उपलब्ध होना चाहिए। इसके बिना चाहते हुए भी परिवार निर्माण में वैसा योगदान नहीं कर सकती, जैसा कि कर सकना उसके लिए संभव है।" (मेरी स्टोप)

भारत में आदर्श नारी की शानदार परम्परा–आज नारी की आवश्यकता कुरीति के उन्मूलन और निर्माण के क्षेत्र में अनुभव की जा रही है। विचारवान स्त्रियों को स्वयं ही इस दिशा में कुछ करने के लिए प्रोत्साहन मिलना चाहिए।

"शिवाजी के सैनिक शत्रु पक्ष की एक युवा लड़की को पकड़कर लाये और उसे शिवाजी के सामने प्रस्तुत किया, बदला चुकने के लिए। शिवाजी ने ध्यानपूर्वक युवती को देखा। मुस्काये और ससम्मान उसे उसके घर तक पहुँचाने की सैनिकों को आज्ञा दी। विदा करते हुए शिवाजी ने दरबारियों से कहा–काश! मेरी माता जीजाबाई इतनी ही सुन्दर होती, तो मैं भी इतना ही सुन्दर होता।" (वीर शिवाजी)

पुरुषों की अपेक्षा सद्गुणशीलता और सच्चरित्रता में स्त्रियाँ अग्रणी रहती हैं। यही कारण था कि उन्हें देवी नाम से संबोधित करने की परम्परा डाली गयी थी, जो अबतक उसी तरह से चली आ रही है।

नारी की सच्ची शृंगारिकता–आभूषण स्त्रियों का शृंगार नहीं। वैदिक साहित्य के अनुसार स्त्रियाँ सरल और स्वाभाविक शृंगार फूल-पत्तों से कर लेती थीं। स्त्रियाँ अपने गुणों से सजती हैं। मन की निर्मलता और स्वभाव की पवित्रता से ही सच्चा शृंगार होता है। सदैव से भारतीय नारी की आवाज और आकांक्षा रही है कि वह नारी जाति का आदर्श बने।

भगवान् श्रीराम ने भक्ति की सुंदरता के बारे में कहा था–शबरी माताजी तो नारी थी, उन्होंने उनको कितना सुन्दर कहा और सर्वश्रेष्ठता दी है, जब कि रंग से वह कुरूपा थी। किन्तु उसके अंदर इतनी सुंदरता थी कि भगवान् को उसे भामिनी (अति सुन्दर) कहना पड़ा। भगवान् श्रीकृष्ण ने कुब्जा जसी कुरूपा नारी को कितना सम्मान दिया है। औरों को छोड़कर कुब्जा से तिलक लगवाते थे।

जो धर्म पर चलेगा, वह सारे कार्यों को करेगा। वह पातिव्रत भी

धारण करेगा, ध्यान भी करेगा, धर्म भी करेगा, दया एवं करुणा का भाव भी उसके अंदर रहेगा ही। हमारे देश में पहले तो नारियाँ अपने ध र्म को नहीं छोड़ती थी। अब नारियों ने अपना धर्म छोड़ पाश्चात्य के रंग में रँग रही है। किन्तु समय आ गया है परिवर्तन का, हमारे जीव की अत्यन्त आवश्यकता हमारे देश में आ गयी है। हमारा देश तरह-तरह के संकटों से घिर गया है। ऐसी घड़ी में हमें अपने ऊपर कमाण्ड कर नारी शक्ति को दृढ़ता से जगना एवं जगाना है तथा अपने सोये हुए संस्कारों को वापस लाना है। (शीला चमड़िया, कोलकाता, ७-३-२०१४ ई०)

एक दिन रुक्मिणी देवी लक्ष्मीजी से पूछने लगी–"देवी! तुम किन स्त्रियों के पास सदा रहती हो। तुम किन्हें ज्यादा प्यार करती हो। लक्ष्मीजी ने कहा–जो स्त्री क्षमाशील है, सदाचार का पालन करती है। पातिव्रत धर्म का पालन करती है, सबों से प्रेम का व्यवहार रखती है। सहनशील है, अतिथि सेवा में सदा तत्पर रहती है, जो अपनी इन्द्रियों को जीत चुकी हैं, जिन्हें पराये पुरुषों से मिलना पसंद नहीं, उनके घर से मैं कभी नहीं निकलती। उनका संग मुझे बहुत पसंद है। जो इसके अतिरिक्त चलती हैं, वहाँ मैं जाना भी पसंद नहीं करती। जैसे जो अपने पति का घर छोड़कर दूसरे के घर में रहने को आतुर हों, दूसरे पुरुष पर प्रेम करती हों, झगड़ालू हों, अपवित्रता से रहती हों, बहुत सोती हों, क्रोधी हों, आलसी हों, बड़ों की बात को नहीं मानती हों, मैं वहाँ जाना पसंद नहीं करती।" (महाभारत, अनुशासन पर्व)

आज की स्थिति में नारी की सहज भूमिका अनिवार्य रूप से हर दृष्टि से आवश्यक हो गयी है। उसका समग्र जीवन स्नेह, दुलार, वात्सल्य, सेवा, करुणा जैसे दिव्य गुणों का मूर्तिमान समन्वय है। यदि उसे इस दैवी सम्पदा को प्रभावी बना सकने का अवसर दिया जाए तो निश्चित रूप से अपने साथ संबंध लोगों को उस अमृत तत्त्व से सुसिंचित कर सकती है। मनुष्य का व्यक्तिगत जीवन सामाजिक परिस्थितियों के कारण बहुत ही विक्षोभकारी बन गया है। मँहगाई ने आर्थिक तंगी को चरम सीमा तक पहुँचा दिया है। जीवन-यापन की नाव काफी भारी हो गयी है कि अकेला गृहस्वामी उसे खींच नहीं पा

रहा है। अतः नारी को पति की नई सहधर्मिणी, बच्चों की नई निर्मात्री और परिवार को नई गृहलक्ष्मी दिलाने के लिए राष्ट्र को समर्थ बनाने के लिए नारी को मनुष्य स्तर पर लाया ही जाना चाहिए।

नारी समस्या किसी व्यक्ति विशेष की कठिनाई नहीं है, जिसे एकाकी प्रयत्न से हल किया जा सके। इसके लिए बृहत् रूप में महिला संगठन बनाने की अत्यन्त आवश्यकता है। यह लोगों को विरोधात्मक आंदोलन दीखता है, पर वैसा है नहीं। फसल बोने के लिए खेत जोतना पड़ता है। भवन बनाने के लिए नींव कोड़नी पड़ती है। जोतना और कोड़ना तोड़-फोड़ जैसा लगता है, पर उसके बिना कार्य शुरू ही नही हो पाएगा। उसी तरह यह संगठन भी पूर्ण रूप से सृजनात्मक है। जन साधारण के मस्तिष्क में नारी पुनरुत्थान की आवश्यकता उपयोगिता बिठाने और उसे पद-दलित स्थिति में रखने की हानियाँ समझाने के लिए इतना बड़ा प्रचारतंत्र की आवश्यकता है कि नर और नारी सभी में परिवर्तन के लिए आकुलता उत्पन्न कर सके। साधन इतने व्यापक होने चाहिए, जो समूची मनुष्य जाति को झकझोर कर रख सके।

आज की अशिक्षित नारी को शिक्षित बनाने के लिए प्रौढ़ शिक्षा का इतना बड़ा संगठित प्रयास हो कि उसके प्रभाव में समूचा राष्ट्र आ जाए। आर्थिक स्वावलंबन के लिए कुटीर उद्योग सिखाने की व्यवस्था है। नारी समाज सेविकाओं के प्रशिक्षण की विशेष व्यवस्था हो, जिसमें वे महिला वर्ग के लिए आवश्यक शिक्षा, स्वास्थ्य संगठन, स्वावलंबन आदि उपयोगी प्रवृत्तियों का प्रशिक्षण करती रह सके। सार्वजनिक सेवा संस्थान में नारी को प्रवेश दिलाने की भूमिका बनायी जाए। नारी को भोग्या के रूप में प्रस्तुत करके उसे अपमानित, पतित बनानेवाले कामुक प्रचार को रोका जाए। हर घर में उपयुक्त प्रेरणाओं का प्रवेश किया जाए। समाज निर्माण की शिक्षा, धर्म परंपराओं के निर्वाह के साथ-साथ लोकशक्ति को जागृत, परिष्कृत, संगठित एवं विकसित करने के उत्तम तरीके विचार कर अपनाये जाने चाहिए। इसके लिए हम अपने धर्म ग्रंथों का भी सहारा ले सकते हैं।

परिवार बड़ा हो या छोटा, उसी शोभा, सफलता इस बात में है

कि सुव्यवस्था एवं सुसंस्कारिता को उसमें कितना प्रश्रय मिल रहा है। इस प्रयोजन में गरीबी बाधक नहीं है। कठिनाई एक ही रहती है कि घर के लोगों को शरीर सुख ही ध्यान में रहता है। उनके दृष्टिकोण और भावना स्तर को ऊँचा उठाने की आवश्यकता का अनुभव नहीं किया जाता। दूरदर्शी गृहपति अपने परिवार के लिए केवल आर्थिक साधन जुटाते रहने में ही अपने कर्तव्य की समाप्ति नहीं कर देते, वे पूरी सतर्कता के साथ वह अनुभव करते हैं कि सबों को चिंतन एवं स्वभाव की सुसम्पन्न बनाया जाए। परिवार के प्रति मोह-ममता तो सभी रखते हैं; किन्तु दूरदर्शिता बहुत कम मिलती है। अपने परिवार की सबसे बड़ी सेवा यह है कि प्रत्येक परिजन को आस्तिक उपासक बनाया जाए। जिस मार्ग को अपनाकर उनका भविष्य उज्ज्वल बन सकता है। जो लड़कियाँ ऐसे वातावरण में पलेगी, वे ससुराल में पातिव्रत धर्म का पालन करते हुए सबों के साथ सद्व्यवहार करेगी, तो वे हरेक का प्यार पा सकेगी। परिवार के हर सदस्य में बड़ों को एवं भगवान् को नमन करने की आदत डालनी चाहिए।

महिला जागरण अभियान जिस तीव्रगति से अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर हो रहा है, वह जहाँ उत्साहवर्धक है, वहाँ अपनी नयी-नयी आवश्यकताओं की पूर्ति का उत्तरदायित्व की भी याद दिलाता है। दोनो पक्ष को कदम-से-कदम मिलाकर, कंधे-से-कंधा भिड़ाकर उत्साहपूर्वक चलने की आवश्यकता है। ऐसा होने से युगांतकारी प्रक्रिया को पुष्पित-फलित होते देर न लगेगी।

हम नारियों को नारी से ही बलिदान का अर्थ सीखना है—जब अकबर की सेना ने चितौड़ पर अधिकार कर लिया था, तब महाराणा प्रताप अरावली पर्वत की घाटियों, गुफाओं और वृक्षों से अपने परिवार के साथ भटकते फिर रहे थे। वे महारानी और अपने सुकुमार बालक के साथ पता नहीं कितने कष्ट उठा रहे थे। ये हिन्दू कुल सूर्य महाराणा प्रताप ही थे, जो कभी अकबर के सामने झुके नहीं। जहाँ सभी राजपुत राजाओं ने अकबर की अधीनता स्वीकार कर ली थी, पर इन्होंने उसके सामने कभी सिर नहीं झुकाया। अपने धर्म और देश की रक्षा की

स्वतंत्रता की रक्षा के लिए पूरे ३५ वर्ष तक अपार कष्ट उठाया और हिन्दुस्तान के गौरव को सुरक्षित रखा। रात में भूमि पर या चट्टानों पर वे सोते थे, घास की रोटियाँ खाते थे और उपवास भी करते थे। कभी-कभी तो घास की रोटियाँ भी बनाना छोड़कर भागने को विवश होते थे।

महाराणा प्रताप की पुत्री चंपा ११ वर्ष की थी और ४ वर्ष का एक पुत्र था। एक दिन बहन ने अपने भाई को कहानी सुनाकर भूखा ही सुला दिया और उसे गोद में लेकर जब अपनी माता के पास सुलाने गयी, तो देखा कि महाराणा चिंता में डूबे हैं। जब उसने पूछा तो उन्होंने बताया कि आज अतिथि घर में आये हैं और घर अनाज का एक भी दाना नहीं होने के कारण अतिथि को भूखा जाना पड़ेगा। तब चंपा ने बताया कि उसके पास कल की बनी हुई दो रोटियाँ बची हैं। जो उसने भूख नहीं होने के कारण अपने छोटे भाई के लिए बचाकर रखी थी, जो कि सो गया है। इसलिए ये रोटियाँ वे अतिथि को खिला दें।

चंपा हमेशा खुद घास की रोटियाँ खाती थी और उसे भी बचाकर अपने छोटे भाई के लिए रख लेती थी; लेकिन इस प्रकार वह भूख के मारे सूख गयी और महाराणा से अपने बच्चों का कष्ट देखा नहीं गया, तो उन्होंने अकबर को पत्र लिखकर सूचित किया कि उन्हें अधीनता स्वीकार है। लेकिन चंपा ने उन्हें ऐसा करने से मना किया और कहा कि जीते जी आप किसी का दास नहीं बनेंगे। आखिर एक दिन सबको मरना है। हमलोग भी किसी की अधीनता स्वीकार नहीं करेंगे, अपने देश और जाति की रक्षा के लिए मर जाना पसंद करेंगे। इतना कहकर महाराण की गोद में सर रखकर वह सदा के लिए चुप हो गयी। महाराणा ने अपनी बेटी के बलिदान के बाद अकबर के अधीन होने का विचार छोड़ दिया और इस तरह हिन्दू कुल के गौरव की रक्षा की।

(शारदा मुसद्दी)

नारी महान् होते आयी हैं। हमारे अंदर भी उन्हीं के वंश का खून दौड़ रहा है। हमें भी उस महत्ता त्यागमयी बच्ची से त्याग का अर्थ सीखना है। देश-सेवा के लिए उसका दिया गया बलिदान आज भी अमर है। वैसे ही प्यारी बहनो! हमारा संकल्प भी ऐसा हो कि हमारी

गाथा अमर हो जाए।

फूलों की मार–एक पहुँचे हुए फकीर थे मंसूर। वे सदैव अल्लाह के ध्यान में डूबे रहते और अनलहक का नारा लगाते। अनलहक का आशय होता है–'अहं ब्रह्मास्मि।' (मैं ही ब्रह्म हूँ)। समकालीन शासक को मंसूर का यह नारा बर्दाश्त नहीं हुआ। उसने मंसूर को अनलहक का नारा लगाने से मना किया; किन्तु ऊपरवाले की भक्ति में डूबे मंसूर को यह मंजूर नहीं हुआ। फैसला किया गया कि यह कुफ्र है और इसके लिए मंसूर को सार्वजनिक रूप से सूली पर चढ़ा दिया जाए। सूली वाले दिन तमाशबीन इकट्ठे हो गये और जैसे ही मंसूर को वहाँ लाया गया, लोग उसे पत्थर मारने लगे।

मंसूर के शरीर से रक्त की धाराएँ फूट पड़ीं, किन्तु वह बिना उफ किये मार खाते रहे। उस भीड़ में मंसूर का प्रिय शिष्य जुन्नेद भी खड़ा था। यह सब देखकर वह बहुत दुखी हुआ; किन्तु विरोध करने का साहस नहीं था। उसने सोचा कि यदि मैंने मंसूर को नहीं मारा, तो भीड़ कहीं मुझे ही न मारने लगे। किन्तु अपने गुरु को पत्थर मारने की क्रूरता वह नहीं कर पाया। इसलिए उसने मंसूर को एक बड़ा-सा फूल फेंककर मारा। सूली पर चढ़ने के लिए जा रहे मंसूर की खामोशी अब टूट गयी और वह दहाड़ मारकर रोने लगे। जुन्नेद अपराधी भाव से यह सोचता रहा कि पत्थर खाकर जो गुरु चुप रहे, वह फूल की मार से रोने क्यों लगे? मंसूर रोते हुए सूली पर चढ़ गये।

दरअसल मंसूर के रुदन का कारण यह था कि परायों के दिये हुए बड़े-बड़े जख्म झेले जा सकते हैं, किन्तु अपनों का छोटा-सा दुर्व्यवहार भी असहनीय होता है; क्योंकि उनसे मन के तार भावना की गहराई तक जुड़े होते हैं।

फकीर मंसूर हमें बतलाते हैं–परायों के दिये हुए बड़े दर्द झेले जा सकते हैं; किन्तु अपनों का छोटा-सा दुर्व्यवहार भी असहनीय होता है; क्योंकि उनसे मन के तार भावना की गहराइयों तक जुड़े होते हैं।

पुरुष भाइयों से भी निवेदन है कि समाज विरोधी कार्य यानी

कुप्रथाओं को रोकने में हम बहनों की हर तरह से मदद करें, ताकि हमारे समाज, हमारे देश की आनेवाली पीढ़ी का भविष्य समुन्नत और खुशहाल हो। हमारे हर कदम हमारी हर सोच में हमारे देश की खुशहाली समायी हो।

दहेजप्रथा का विरोध–युवक कुलभूषण पाठक ने एम०ए० पास किया, तो उसके पास अच्छी नौकरियों के प्रस्ताव आने लगे। उन दिनों बहुत ज्यादा व्यक्ति इतनी उच्च शिक्षा ग्रहण नहीं करते थे। उसके ही शहर के पं० नीलाम्बर शास्त्री उसके लिए अपनी पुत्री का विवाह प्रस्ताव लेकर आये। कुलभूषण के पिता ने उनसे अत्यधिक दहेज की माँग की। परन्तु कुलभूषण नैष्ठिक व्यक्तित्व के मालिक थे। उन्होंने अपने पिता से इस कुप्रथा का विरोध किया। उनके पिता क्रुद्ध होकर बोले–'हमने तुम्हारी शिक्षा पर बहुत खर्च किया है, क्या तुम्हारे पर हमारा कोई अधिकार नहीं।' यह सुनकर कुलभूषण चुप हो गये, पर उनके अंतर्मन ने पिता का यह व्यवहार स्वीकार नहीं किया। शास्त्रीजी ने जैसे-तैसे दहेज की व्यवस्था कर पुत्री का विवाह कुलभूषण से कर दिया। विवाह के पश्चात् जब बारात विदा होने लगी, तो कुलभूषण ने वहाँ से जाने से इनकार कर दिया और अपने पिता से बोले–'इतना दहेज पा लेने के बाद आपक मुझपर अधिकार नहीं, अब मैं शास्त्रीजी का ऋणी हूँ। यहीं रहकर कमाऊँगा और इस ऋण को चुकता करूँगा।' उत्तर देने के लिए अब उसके पिता के पास शब्द नहीं थे। यदि सभी युवक दहेज न लेने का संकल्प पर अडिग हो जाएँ, तो देहज नामक असुर का अंत समाज से तुरत हो जाए।

दहेज प्रथा सचमुच समाज का एक भयंकर अभिशाप है। जिसने हमारे समाज के बच्चियों की खुशहाली को छिन लिया है। माँ-बाप की नींद बीमार में बदल गयी है। इसे हर तरह से रोकना चाहिए।

अद्भुत वैराग्य–रामतीर्थ गणित के प्रोफेसर थे, बड़े विद्वान्, पर अंदर से परमात्मा को पाने की इतनी ललक कि रावी के किनारे बैठकर रोते थे। उनके परम शिष्य सरदार पूर्ण सिंह ने लिखा है कि रात को उनके तकिया-चादर आँसुओं से भींग जाते थे। पत्नी बार-बार पूछतीं

कि क्या कष्ट है? कहते–'संन्यास लेना है।' पत्नी उन्हें ऋषि के पास लेकर आयीं। साथ में इकलौता बेटा भी था। नाव में गंगा पार कर रहे थे। पत्नी से बोले–'तुम हमारे कहने से गंगा में बेटे को डाल सकती हो?' पत्नी आज्ञाकारिणी थी, तुरत बेटे को डाल दिया। रामतीर्थ ने तुरत उसे गंगा की उद्दाम लहरों से निकाला नाव में बैठाया। फिर कहा–'बिना संन्यास के हम जी नहीं सकते। हमारा जन्म ही कुछ और करने के लिए हुआ है।' पत्नी बोली–'हम व बेटा रह लेंगे। आपके मार्ग में विघ्न नहीं बनेंगे। हम आपको संन्यास की स्थिति में जीने के लिए मुक्त करते हैं।' रामतीर्थ (तीर्थराम) का वैराग्य अद्‌भुत एवं उससे भी बड़ा उनकी पत्नी का त्याग है। यह है भारत। यह है यहाँ की संस्कृति। (संगीता मिश्र)

इस कहानी का मतलब यह नहीं है कि पति जैसा भी हो, उसकी गलत आज्ञा भी मान ली जाए। यह कहानी पतियों के लिए ही है कि पति को कैसा होना चाहिए। उनमें में इतनी शक्ति होनी चाहिए कि वे होनी को भी बदल दें। उन्हें भी स्वामी रामतीर्थ की तरह अपने गुणों को निखारने का प्रयास करना चाहिए। दोनों की विद्वत्ता ही विद्वान् समाज का निर्माण कर पायेगी।

नाराज हुए बापू–बापू का जन्मदिन था। प्रतिदिन की भाँति संध्या के समय प्रार्थना सभा हुई। प्रार्थना के बाद उनका प्रवचन हुआ अंत में बापू ने पूछा–आज यह घी का दीपक किसने जलाया है? यह सनते ही सभा में सन्नाटा छा गया। सभी एक-दूसरे का मुँह देखने लगे।

किसी को कुछ बोलने का साहस नहीं हुआ। बापू पुनः बोले–आज यदि सबसे बुरी बात हुई है, तो वह यह कि आपने यह घी का दीपक जलाया है। सभी हैरान हो गये और सोचने लगे कि भला इसमें क्या बुरी बात हो गई? कुछ देर रुककर बापू बोले–कस्तूरबा! तुम इतने समय से मेरी जीवनसंगिनी हो, फिर भी कुछ नहीं सीख पायी। हमारे गाँवों लोग कितने गरीब हैं? उन्हें नमक और तेल तक नहीं मिलता और हम बेवजह घी जला रहे हैं। जमनालाल बजाज बीच में बोल पड़े–आज आपका जन्मदिन है इसलिए। बात काटते हुए बापू ने कहा–तो क्या, इसका अर्थ यह हुआ कि मितव्ययिता त्यागकर दुरुपयोग आरंभ कर

दिया जाए? जो हुआ, सो हुआ, पर आगे से ध्यान रखना।

जो वस्तु आम आदमी को उपलब्ध न हो, उसे हमें भी उपयोग में लेने का कोई अधिकार नहीं है। जबतक हर आदमी में यह भावना नहीं आएगी, देश में खुशहाली कैसे आ पाएगी? उपस्थितजनों ने हृदय से बापू की बात में सहमति जताई। देश की वर्तमान ऊर्जा संकट व अर्थ संकट में बापू के ये विचार अनुकरणीय है। वस्तुतः यदि हममें से हर एक वस्तुओं की आवश्यकतानुसार उपयोग करने की आदत डाल ले, तो कभी किसी वस्तु का अभाव नहीं होना और एक सुखी व संतुष्ट समाज की रचना संभव होगी।

हमारे सबों के विचार यदि बापू की तरह हो जाएँगे, तो हमारे देश का नक्शा ही बदल जाएगा। हमें देश को बदलना है, तो हम अपने आपको बदलें। अपनी फिजूलखर्ची बंद कर जरूरतमंदों की मदद करें।

हम बहनों को हमेशा बापू की तरह अपनी फिजुलखर्ची को बढ़ाकर घर के बैलेन्स को खराब नहीं करना चाहिए। बल्कि जहाँ तक हो सके अपने खर्चों को कम करने की कोशिश करें तथा जहाँ तक हो सके, परिवार के अन्य सदस्यों की परेशानियों को दूर करने की कोशिश करें, ताकि हम शान्ति एवं सुन्दर समाज का निर्माण कर अपने देश के भविष्य को सुंदर बना सकें।

सत्यवादी गाय को मिला दिव्यलोक–पद्‌मपुराण की कथा है। नन्दा नामक गाय अपने झुंड से बिछुड़ गयी और एक बाघ के चंगुल में फँस गयी। नन्दा घबरा गयी। उसे अपना नन्हा बछड़ा याद आने लगी।

नन्दा ने बाघ से कहा, 'मेरा नन्हा-सा बच्चा है। अभी वह घास भी नहीं सूँघता। मैं उसे एक बार दूध पिलाकर उसका मस्तक चाटना चाहती हूँ। यदि थोड़ी देर के लिए छोड़ दो तो बछड़े को प्यार कर, हित-अहित का उपदेश देकर तुम्हारे पास लौट आऊँगी।'

बाघ उसपर विश्वास नहीं कर रहा था। नंदा ने उसे शपथपूर्वक वचन दिया कि वह बछड़े को प्यार करके लौट आएगी। बाघ मान गया। नन्दा बछड़े के पास जाकर रोने लगी। बछड़े को दूध पिलाकर, उपदेश देने के बाद बोली, 'मैं बाघ को शपथपूर्वक वचन देकर आयी हूँ, अतः

उसके पास जा रही हूँ।' बछड़ा भी माँ के साथ-साथ बाघ के पास जाने की जिद करने लगा। नंदा की माता और सखियों ने कहा, 'अपनी रक्षा के लिए शपथ और सत्य की दुहाई देना कर्तव्य होता है।' अतः तुम मत जाओ।'

नंदा बोली, 'दूसरे के प्राणों को बचाने के लिए झूठ बोला जा सकता है; किन्तु अपने बचाव के लिए झूठ बोलना पाप है।' नंदा बाघ के पास पहुँची। ठीक उसी समय बछड़ा भी पहुँच गया। वह बाघ और नंदा के बीच खड़ा हो गया। नंदा ने बाघ से कहा, 'मैं सत्यधर्म का पालन करती हुई तुम्हारे पास आ गयी हूँ। अब तुम मेरे मांस को खाकर अपनी इच्छा पूरी कर लो।'

बाघ नंदा की सत्यनिष्ठा को देखकर आश्चर्यचकित हो गया। उसने कहा, 'मुझे बेहद आश्चर्य हो रहा है। सत्य की परीक्षा के लिए ही मैंने तुम्हें भेजा था। आज से तुम मेरी बहन हुई और यह बछड़ा हमारा भान्जा। अब मैं भी हिंसावृत्ति छोड़कर धर्म को अपनाऊँगा। बहन! अब मुझे धर्म का उपदेश दो।'

नंदा ने उसे सभी प्राणियों को अभयदान देने के लिए कहा। नंदा की संगति से बाघ को पुर्वजन्म का वृतान्त याद आ गया। वह एक राजा था। दूध पिलाती हिरणी को मारने से बाघ बन गया था। नंदा ने जैसे ही अपना नाम बताया, बाघ राजा के तेजस्वी रूप में आ गया। तभी नंदा के सत्य से आकृष्ट होकर धर्मराज प्रकट हो गये। उन्होंने नंदा को वरदान दिया। नंदा तत्काल पुत्र के साथ उत्तम लोक में चली गयी।

काश! एक जानवर से हम मनुष्य भी सत्य का आचरण सीख पाते, तो हमारा और हमारे समाज का जीवन धन्य हो जाता। मेरी परमात्मा गुरुदेव से प्रार्थना है कि वे हमें सत्य के आचरण में दृढ़ता प्रदान करें।

ईश्वर पर अटूट विश्वास—बड़ा मनोरम वातावरण था। कल-कल करती नदी बह रही थी। दोनों तटों पर हरियाली का साम्राज्य था। बड़े-बड़े पेड़-पौधे थे, जिनपर पक्षी कलरव कर रहे थे। हल्की ठंडक थी और बादल से छाये हुए थे। रमा अपने पति देवेन्द्र और बच्चों के साथ

नदी के पार स्थित शिवमंदिर में दर्शन करने के लिए जा रही थी।

नौका देवेन्द्र ही चला रहा था। ग्रामीण परिवेश में रहने की वजह से उसे इसकी आदत भी थी और अच्छा अभ्यास भी। यह नौका भी उनकी खुद की ही थी। सब हँसी-मजाक करते हुए वातावरण का आनंद उठाते हुए आगे बढ़ रहे थे।

अचानक सब कुछ बदल गया। पलभर में बादल घन हो गये। मूसलाधार वर्षा होने लगी। नदी की शांत लहरें उत्तेजित हो उठीं। नौका बुरी तरह डगमगाने लगी। रमा और बच्चे बुरी तरह घबरा गये। आसपास कोई दूसरी नौका या जहाज भी नजर नहीं आ रहा था। राम डर के मारे चीखने-चिल्लाने लगी। बच्चे भी घबराकर रोने लगे। वे बचाओ-बचाओ चिल्ला रहे थे। रमा हताश होकर कहने लगी, 'आज पता नहीं किस घड़ी में घर से निकले। पता नहीं किस का मुँह देखकर यात्रा शुरू की। आज तो जीवित बचने की कोई संभावना नहीं.....।'

रमा देवेन्द्र की प्रतिक्रिया का इंतजार कर रही थी, लेकिन उसे यह देखकर बेहद आश्चर्य हुआ कि देवेन्द्र के चेहरे पर कोई शिकन नहीं थी। हाँ, वह पहले की अपेक्षा सावधान और एकाग्रचित जरूर था और पूरे मनोयोग के साथ चप्पू चला रहा था।

किनारा नजदीक था। देवेन्द्र ने जल्दी-जल्दी हाथ चलाये, तो जल्दी ही किनारे पर पहुँच गये। सब सुरक्षित उतर गये, तो रमा ने राहत की साँस ली, उसने अपनी पति से पूछा, 'एक बात बताओ, तुम्हें मौत का डर नहीं लगा? मैंने देखा, तुम कितने शांत थे, कोई घबराहट नहीं। जैसे कुछ हुआ ही नहीं हो? मैं मानती हूँ कि तुम हमें बचाने के लिए पूरी कोशिश में जुटे हुए थे, पर घबराये हुए नहीं थे, पर घबराये हुए नहीं थे। यह कैसे संभव है?'

देवेन्द्र ने कुछ नहीं कहा। उसने अपने जेब से एक चाकू निकाला और रमा के गले पर रख दिया। रमा ने उसे धक्का देते हुए कहा, 'मजाक छोड़ो ना! मेरी बात का उत्तर दो।'

देवेन्द्र ने कहा, 'मैं तुम्हारी बात का उत्तर दे तो चुका। मेरे चाकू दिखाने पर तुम्हें डर क्यों नहीं लगा?'

रमा बोली, 'सीधी-सी बात है। मुझे तुमपर भरोसा है। मैं जानती हूँ कि तुम मेरी जान कभी नहीं ले सकते।'

देवेन्द्र ने कहा, 'बस! यही मेरा जवाब है। मुझे भी ईश्वर पर अटूट विश्वास है। मुझे मालूम है, वह अपने भक्त और उसके परिवार का अहित कभी नहीं होने देगा।'

सचमुच, यदि हम ईश्वर पर पूरा विश्वास रखेंगे, तो हमें उसकी पूरी मदद मिलेगी। क्योंकि वे तो हमारा हरपल ध्यान रखता है। हमलोग ही दिन-रात उससे इस तरह भागते रहते हैं, जैसे वे कुछ जानते ही नहीं, हम उन्हें जना रहे हैं। जिस क्षण हमारे हृदय में पूर्ण विश्वास हो जाएगा कि वे हमें हर वक्त देख रहे हैं, तो पहली बात हम गलती करना बंद कर देंगे और दूसरा माँग बंद कर देंगे, जिससे हमारे जीवन के साथ-साथ हमारा परिवार, हमारा समाज और हमारा देश सभी उन्नतिशील होने लगेंगे। परम पूज्य गुरुदेव हमारे हृदय में सत्य की स्थापना करें, ताकि हम ईश्वरविश्वासी बन सकें और सुंदर समाज का निर्माण हो सके। गुरुदेव हमारी मदद करे।

इन्सानियत का मिसाल—अस्पताल के इमरजेंसी वार्ड में बड़ी गहमागहमी मची थी। एक दुर्घटना में बुरी तरह घायल मरीज को लाया गया था, जिसका जल्द-से-जल्द ऑपरेशन होना जरूरी था। अस्पताल के मुख्य सर्जन को फोन किया गया। उन्होंने सारी तैयारियाँ करने का निर्देश दे दिया। उन्हें आने में लगभग एक घंटा लग गया। मरीज के माता-पिता ने उनसे बात करने की कोशिश की; लेकिन उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया। वे बड़ी तेजी से आये और सीधे ऑपरेशन थियेटर में घुस गये।

ऑपरेशन में काफी समय लग गया। करीब तीन घंटों तक ऑपरेशन चला। ऑपरेशन करके डॉक्टर साहब बाहर निकले। उन्होंने मरीज के पिता से कहा, 'चिंता की कोई बात नहीं है। आपका बेटा जल्दी ही ठीक हो जाएगा।' मरीज के पिता तो उन पर गुस्से से भरे बैठे थे। उन्होंने चिल्लाकर कहा, 'इतनी देर कहाँ थे आप? क्या आपको किसी की जान की परवाह नहीं? आपने आने में जो एक घंटे की देर

की, उसमें मेरे बेटे की जान जा सकती थी; लेकिन आपलोगों को अपनी जिम्मेदारी की कोई परवाह नहीं और न ही किसी की जिंदगी की। अगर आपका बेटा इस तरह खतरे में रहता, तो भी आप इतनी देर कर देते क्या?'

डॉक्टर साहब काफी परेशान और उदास लग रहे थे। उन्होंने कहा, 'माफ कीजिए, मैं अस्पताल में नहीं था। लेकिन मुझे खबर देने के बाद जितनी जल्दी पहुँच सकता था, पहुँच गया। आपके शोरगुल मचाने से अब कोई लाभ नहीं। आपका बेटा बिल्कुल ठीक है। जल्दी ही पूरी तरह से स्वस्थ हो जाएगा।'

मरीज के पिता को इस प्रकार हो-हल्ला करते देख, अबतक आसपास काफी भीड़ इकट्ठा हो गयी थी। मरीज के पिता अपने आसपास इतनी भीड़ देखकर व डॉक्टर के शांत स्वर को सुनकर और भड़क गये। बोले, 'कठिनाई और मुसीबत के वक्त में दूसरों को संयम रखने का राय देना बेहद आसान काम है; लेकिन आपको क्या पता कि मेरे मन में क्या चल रहा है। अगर आपका बेटा इस तरह मर रहा होगा, तो क्या आप इतनी देर करते? इतने शान्त रहते?'

डॉक्टर ने सिर्फ इतना ही कहा, 'किसी की मौत और जिंदगी ईश्वर के हाथ में है। हम केवल उसे बचाने का प्रयास कर सकते हैं। ईश्वर ने आपकी मदद की...।' इतना कहकर वे जाने लगे।

तभी भीड़ से कोई व्यक्ति निकलकर आया। उसने मरीज के पिता को फटकार कर कहा, 'आप अपनी ही रट लगाये बैठे हैं। आपका बेटा तो अब बिल्कुल ठीक है; लेकिन जिस इंसान ने अपना बेटा खो दिया, वह अब भी शान्त है। आप इतना चीख-चिल्ला रहे हैं। आपको पता है कि डॉक्टर साहब का बेटा उसी दुर्घटना में मारा गया, जिसकी वजह आपका बेटा है? जब आपका फोन गया, तब ये अपने बेटे का अंतिम संस्कार कर रहे थे। सब कुछ जानते हुए भी वे आये और आपके बेटे का इलाज किया। ये होती है इंसानियत।'

व्यक्ति की बात सुनकर भीड़ सन्नाटे में आ गयी। मरीज की माँ-बाप पैरों पर गिर पड़े।

कहा जाता है कि धरती पर सभी तरह के लोग होते हैं—अच्छे

भी और खराब भी। जहाँ ज्यादा अच्छे लोग होते हैं, उसे सत्ययुग कह दिया जाता है। जब ज्यादा लोग खराब बुद्धि के दिखलाई पड़ते हैं, तो कलियुग का प्रभाव लोग बोल देते हैं। युग तो हमारे मन के अंदर है। हम सभी तरह संकल्प कर लें कि आखिर तो हमे इस संसार से जाना है, फिर हम थोड़े दिनों के लिए खराब कर्म करके बुरे फल लेने के अधिकारी क्यों बनें। बल्कि प्रयास करके अपने मन में अच्छे संकल्पों को लायें एवं इंसानियत की मिसाल बनें एवं सुंदर और समुन्नत समाज की स्थापना करके दिखायें।

मातृभूमि के साथ हमारा प्यारा कैसा होना चाहिए, भगवान् श्रीराम ने बताया–वाल्मीकि रामायण में एक बड़ा ही प्रेरक प्रसंग आता है, जब श्रीराम ने रावण का वध करके लंका विजय कर ली, तब उन्हें सर्वप्रथम विभीषण का राजतिलक कर उसे लंका के सिंहासन पर आसीन करना था। इस कार्य के लिए उन्होंने लक्ष्मण को चुना।

लक्ष्मण से श्रीराम ने कहा–लक्ष्मण! तुम लंका जाकर विभीषण का विधिपूर्वक राजतिलक करो और फिर लौट आना। श्रीराम की आज्ञा पाकर लक्ष्मण लंका गये। उन्होंने जैसे ही राजधानी में प्रवेश किया, वे मंत्रमुग्ध हो गये। वहाँ के हरे-भरे वृक्ष, सुन्दर पुष्पों व लताओं से आच्छादित बगीचे, कल-कल बहते जल प्रपात, पक्षियों का मनमोहक कलरव और ऊँचे सुंदर भवनों को देखकर लक्ष्मण का मन प्रसन्न हो गया। उन्होंने विभीषण का राज्याभिषेक किया और फिर लौटकर राम से बोले–भैया! लंका ने मेरा मन चुरा लिया है। यह नगरी स्वर्ग जैसी है। आपकी आज्ञा हो, तो मैं यहीं रह जाऊँ। श्रीराम ने उनकी बात सुनकर कहा–लक्ष्मण! इसमें कोई संदेह नहीं कि लंका सौंदर्य निराला है। यह सचमुच स्वर्ग जैसी नगरी है। यहाँ चारो ओर अपार प्राकृतिक सौंदर्य है, समृद्धि है। किन्तु याद रखो, सौंदर्य, समृद्धि व वैभव से परिपूर्ण होने के बावजूद लंका, अयोध्या की बराबरी नहीं कर सकती; क्योंकि वह हमारी जन्मभूमि है। जहाँ व्यक्ति जन्म लेता है, वहाँ की मिट्टी जैसा आनंद कोई अन्य भूमि नहीं हो सकती, इसलिए हमारी अयोध्या तीनों लोकों से बढ़कर है।

यह सुनकर लक्ष्मण की आँखों से लंका का मायाजाल हट गया। वस्तुतः जन्म देकर पालन-पोषण करनेवाली जन्मभूमि की अनुभूति दिव्य होती है। अतः उसके प्रति मन में सदा श्रद्धा भाव रहना चाहिए।

भगवान् राम ने इस प्रसंग के माध्यम से हमें अनमोल शिक्षा दी है। हमें अपनी मातृभूमि से कैसा प्यार होना चाहिए। भगवान के लिए तो सारी धरती ही एक है, फिर भी उन्होंने मातृभूमि का महत्त्व तीनों लोकों से बढ़कर बताया है।

सबसे बड़ा दरिद्र

सिंहगढ़ राज्य की सीमा के पास एक गाँव सोनपुर में एक महात्मा अपने दो शिष्यों के साथ आ पहुँचे। वहाँ की शान्ति और हरियाली देख कुछ दिन वे वहीं ठहर गये।

एक दिन महात्माजी जब भिक्षा माँगने जा रहे थे, सड़क पर एक सिक्का देखा, जिसे उठाकर उन्होंने झोली में रख लिया। दोनों शिष्य इससे हैरान थे। वे मन में सोच रहे थे कि काश सिक्का उन्हें मिलता, तो वे बाजार से मिठाई ले आते। महात्माजी भाँप गये। बोले–यह साधारण सिक्का नहीं है, मैं इसे किसी सुपात्र को दूँगा। पर कई दिन बीत जाने के बाद भी उन्होंने सिक्का किसी को नहीं दिया।

एक दिन महात्माजी को खबर मिली कि..... साथ उधर से गुजर रहे हैं। महात्माजी ने शिष्यों से कहा, वत्स! सोनपुर छोड़ने की घड़ी आ गयी है। शिष्यों के साथ महात्माजी चल पड़े तभी राजा की सवारी आ गयी। मंत्री ने राजा को बताया कि ये महात्मा जा रहे हैं। बड़े ज्ञानी हैं। राजा ने हाथी से उतरकर महात्माजी को प्रणाम किया और कहा, कृपया मुझे आशीर्वाद दें। महात्माजी ने झोले से सिक्का निकाला और राजा की हथेली पर उसे रखते हुए कहा, हे सिंहगढ़ नरेश! तुम्हारा राज्य धन-धान्य से सम्पन्न है, फिर भी तुम्हारे लालच का अंत नहीं है। तुम और पाने की लालसा में युद्ध करने जा रहे हो। मेरे विचार से तुम सबसे बड़े दरिद्र हो। इसलिए मैंने तुम्हें यह सिक्का दिया है। राजा इस बात का मतलब समझ गये। उन्होंने सेना को वापस चलने का आदेश दिया।

लालची मनुष्य ही सबसे बड़ा दरिद्र होता है, जो सदा दूसरे के

धन पर अपनी आँखें गड़ाये रहता है।

ज्ञान का लाभ

एक चिड़िया किसी राजा के बाग में चुपके से जाकर नित्य उसके फूल खाया करती थी। राजा बहुत दिनों से उसे पकड़ने की ताक में था। संयोग से एक दिन वह जाल में फँस गयी। राजा उसे पकड़कर मारने चला। चिड़िया बड़ी चतुर थी। शत्रु के हाथ में पड़कर भी वह विचलित नहीं हुई। उसने धीरे से कहा, महाराज! मैंने अपराध किया है, उसके लिए आप मुझे सहर्ष मृत्युदंड दे सकते हैं; लेकिन मरने से पहले मैं अपने पाप का प्रायश्चित करना चाहती हूँ। मैंने आपका अबतक अहित किया है, अब आपके हित की कुछ गुप्त बातें बताऊँगी। उनसे आपका बड़ा उपकार होगा। कृपया उन्हें ध्यान से सुनिये, तब मुझे मारिये। राजा उत्सुक होकर बोला–बोल, बोल, जल्दी उन बातों को बता दे, उसके बाद मैं तुझे मारे बिना तो आज छोड़ूँगा नहीं। चिड़िया कहने लगी–सुनिये राजन्! नीति की ये गूढ़ बातें हैं, इन्हें सदा ध्यान में रखिएगा। पहली बात यह है कि एक बार हाथ आये हुए शत्रु को भूलकर भी अपने चंगुल से निकलने न देना। राजा ने प्रसन्न होकर कहा, निश्चय ही यह काम की बात है। अब दूसरी बात कहो।

चिड़िया फिर बोली–असंभव बात का कभी विश्वास न करना। राजा ने फिर अपना सिर हिलाते हुए कहा, ठीक कहती हो, नीम के पेड़ में आम नहीं लगते। तीसरी बात कहो, कहो जल्दी कहो। चिड़िया बोली–बीती बात का कभी शोक नहीं करना। राजा ने इसे भी काम की बात मानकर चौथी बात के लिए आग्रह किया। तब चिड़िया बोली–महाराज! चौथी बात तो बड़े ही काम की है। मुझे आप थोड़ी देर के लिए छोड़ दें, तो मैं शान्तिपूर्वक अपने गुरुजी का ध्यान करके ज्ञान की गहरी बात आपको बता सकता हूँ, उससे आपको बड़ा लाभ होगा।

राजा ने उसे छोड़ दिया। चिड़िया उड़कर एक पेड़ पर जा बैठा और वहाँ से बोली, राजाजी! मेरे पेट में बत्तख के अंडे के बराबर कई मोती हैं, आप मुझे मार डालते तो उन्हें पा जाते; लेकिन जब चिड़िया

ही हाथ से निकल गयी, तो मोती कहाँ से मिलेंगे।

राजा हाथ मलकर पछताने लगा। मुट्ठी में आया हुआ शिकार ही नहीं, उसके साथ मोतियों का खजाना भी उसके हाथ से निकल गया। यह सोचकर वह दुःख से व्याकुल हो गया। उसे छटपटाते देखकर बुद्धिमान चिड़िया दूर से ही फिर बोली, मूर्ख! तुझे तो ज्ञान का उपदेश देना ही व्यर्थ था; क्योंकि तूने उससे लाभ लेना नहीं जाना। यदि तू मेरी पहली बात याद रखता, तो मुझे इस तरह हाथ से न जाने देता। मेरी दूसरी बात भी यदि तेरे ध्यान में होती तो तू मेरे पेट मे मोती होने का विश्वास न करता। तीसरी शिक्षा भी तू भूल गया, तभी तो इस प्रकार बीती बात के लिए पछता रहा है। ज्ञान की बातों को कान से सुनने से ही लाभ नहीं होता, उन्हें तो सदा ध्यान में रखकर उन्हीं के अनुसार काम करना चाहिए। यदि तू ऐसा करता, तो इस समय तुझे मूर्ख न बनना पड़ता। यह अंतिम उपदेश देकर चिड़िया चहकती हुई वहाँ से उड़ गयी।

हमें चतुर लोगों की बातें जरूर माननी चाहिए, चाहे वह चिड़ियों की तरह ही हो। ज्ञान की बातों को केवल कानों से नहीं, बल्कि हृदय से सुनकर उसे हृदयंगम करना चाहिए तथा आचरण में लाना चाहिए।

सेवा में सफलता के लिए सादगी और निष्ठा दोनों बहुत जरूरी है–मोतीहारी में गाँधीजी कार्यकर्ताओं को निर्देश दे रहे थे–आज अवंतिका आनेवाली है। उसे स्टेशन से लिया लाना और कमरे में कमरे में ठहरा देना। एक ने कहा–उसे इन साधारण कमरों में चटाई पर सोना क्यों पसंद होगा। बापू ने कहा–वह जनसेवक के तौर पर आ रही है। जनसेवक के अनुरूप अगर तीसरे दर्जे में आई तो उसे यहीं रखूँगा, वरना वापस भेज दूँगा। पर बापू.....। दूसरे ने संकोच में कहा–उनके पास पैसा है, वह भी उन्हीं का कमाया हुआ। उसे खर्च करने में क्या बुराई है? खर्च का मतलब अपव्यय तो नहीं। स्वयंसेवक गाँधीजी के सबसे छोटे पुत्र देवदास गाँधी के साथ अवंतिका बाई को लेने स्टेशन गये। देवदास ही अकेले उन्हें पहचानते थे। देवदास ने उम्मीद के

मुताबिक उन्हें दूसरे दर्जे के डिब्बों में खोजा, लेकिन कहीं पता न चला। तब वे निराश होकर वापस आ गये और खबर दी कि अवंतिका बाई इस गाड़ी से नहीं आयी। यह सुनकर सब लोग हँसने लगे। दरअसल अवंतिका अपने पति के साथ पहले ही एक साधारण कमरे में ठहर चुकी थी। यात्रा उसने तीसरे दर्जे में की थी और बापू की कसौटी पर खुद को खरा साबित किया। शाम को गाँधीजी उन्हें समझाने लगे–किस तरह बड़हखा गाँव जाकर काम शुरू करना है। इसपर कस्तूरबा ने कहा–ये आज ही आये हैं और कल दिवाली है। दिवाली मना कर जाएँ। नहीं ऐसा नहीं होगा, इन्हें कल सुबह ही निकलना होगा। गाँधीजी का स्वर तेज था। एक दिन में क्या हो जाएगा? जनसेवक को निठल्ले नहीं बैठना है।

तभी अवंतिका बोली, 'बापू! आप मुझे यह बतायें कि बड़हखा के कायाकल्प के लिए मुझे क्या करना है। गाँव की समस्याओं का तो वहीं जाकर अध्ययन करना होगा और गाँववालों का विश्वास जीतना होगा। जीतने के लिए क्या करना होगा? सादगी और निष्ठा का पालन ही तुम्हें विश्वस्त बनाएगा। जनसेवक की यही संपत्ति है। यह सुनकर अवंतिका बाई तैयारी में जुट गयी।

सेवा में सफलता के लिए सादगी और निष्ठा दोनों बहुत जरूरी है। जिन्हें जन-जन की सेवा करनी है, उनके लिए यह अमूल्य निधि है।

–बापू की सीख

प्रधानमंत्री का चुनाव :- राजा नृप सिंह के प्रधानमंत्री वृद्ध हो गये थे। राजा ने प्रजा के बीच से किसी योग्य और व्यवहार कुशल व्यक्ति को यह पद देने का निर्णय किया। घोषणा करवा दी गयी। प्रधानमंत्री बनने के इच्छुक अनेक लोग आये। सभी उम्मीदवारों की छटनी करने के बाद तीन को चुना गया। वे काफी पढ़े-लिखे विद्वान् थे, पर उनकी व्यवहार कुशलता की परीक्षा के लिए राजा ने उनसे कहा–तुम तीनों को अलग- अलग कमरों में बंद कर दिया जाएगा और बाहर से ताला लगा दिया जाएगा। तुममें से जो भी व्यक्ति आधे घंटे के अंदर ताला खोलकर बाहर आ जाएगा, उसे ही प्रधानमंत्री नियुक्त किया

जाएगा। यह सुनकर तीनों हैरत से एक-दूसरे को देखने लगे। उन्हें यह असंभव-सी परीक्षा लगी। कुछ बाद उन्हें कमरे में बंद कर दिया गया। पहले कमरे में बंद व्यक्ति ने सोचा कि मात्र आधे घंटे में बाहर से बंद वाले ताले को खोलना असंभव है। वह चुपचाप वहाँ रखे बिस्तर पर लेट गया। दूसरे कमरे में बंद व्यक्ति इधर-उधर घूमता रहा और सोचता रहा कि किस तरह बाहर के ताले को अंदर से खोला जा सकता है। लेकिन उसे भी कुछ नजर नहीं आया। तभी तीसरे कमरे का दरवाजा खुला और बाहर खड़े दूतों ने आवाज लगायी–नये प्रधानमंत्री की जय हो। दोनों कमरों में बंद व्यक्ति बेचैनी से सोचते रहे कि तीसरे व्यक्ति ने दरवाजा कैसे खोला? इसके बाद दोनों उम्मीदवारों को राजा के सामने बुलाया गया। राजा ने कहा–तीसरे उम्मीदवार ने परीक्षा में सफलता पाई है। प्रधानमंत्री को शिक्षित होने के साथ-साथ व्यवहार कुशल होना भी जरूरी है। वास्तव में कमरों में ताला लगाया ही नहीं गया था। केवल तीसरे को छोड़कर आपने इसे खोलने का प्रयास ही नहीं किया। जबकि तीसरे ने इसपर विचार किया कि जब सवाल दिया गया है, तो निश्चित समय में ही उसका हल भी आस-पास होगा। इसलिए वह विजयी रहा। दोनों उम्मीदवार लज्जित हो गये।

हमलोगों के शिक्षा के साथ-साथ व्यवहार कुशल होना भी जरूरी है। तभी हम जीवन की परीक्षा में प्रधानमंत्री की तरह असफलता प्राप्त कर सकते हैं।

हमें महापुरुषों की शिक्षा को हृदयंगम करना चाहिए–गुरु अम्बुजानंद के पास अनेक शिष्य शिक्षा प्राप्त करने के लिए आते थे। उनका आश्रम लंबे समय से चल रहा था। अब चूँकि अम्बुजानंद काफी वृद्ध हो गये थे। गुरुकुल चलाना उनके लिए कठिन हो रहा था। वे अपने शिष्यों में से ही किसी एक को गुरुकुल का सारा कार्यभार सौंपना चाहते थे। एक दिन उन्होंने अपने १८ विद्यार्थियों को अपने पास बुलाया। उन्होंने उनसे कहा, आप सभी प्रतिभाशाली, मेहनती और ईमानदार हैं। यदि मैं आपको शिक्षा के लिए किसी विशेष क्षेत्र में नियुक्त करना चाहूँ, तो आप कौन-कौन से क्षेत्र को चुनना चाहेंगे? यह

सुनकर सभी शिष्य कुछ देर सोचते रहे, और फिर १७ विद्यार्थियों ने अपने मनपसंद क्षेत्रों के नाम गुरु का बता दिये। अठारहवाँ शिष्य आयुष अभी तक सोच ही रहा था। उसे चुप देखकर गुरु ने पूछा, बेटा आयुष! तुमने अपने लिये किसी क्षेत्र का चुनाव नहीं किया? गुरु की बात सुनकर आयुष ने सिर झुकाकर कहा, गुरुजी मैंने आपसे ही शिक्षा ग्रहण की है। मैं आपके द्वारा सीखी गयी शिक्षा को जन-जन तक फैलाना चाहता हूँ। इसके लिए मुझे किसी क्षेत्र विशेष का चुनाव करने की आवश्यकता नहीं है। मैं हर क्षेत्र में आपके द्वारा प्रदान की गयी शिक्षाओं को दूसरों तक पहुँचाना चाहूँगा। हालाँकि क्षेत्र से भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण है आपके दिये गये मूल्य या संस्कार का प्रसार, जो शास्त्रों से अलग है। मैं चाहता हूँ कि लोग उसे जानें, ताकि वे नैतिक दृष्टि से भी श्रेष्ठ है। मात्र पुस्तकीय ज्ञान से कुछ नहीं होनेवाला है। आपने जो अनुशासन का पाठ हमें पढ़ाया है, उसे मैं तो विशेष रूप से सिखाना चाहूँगा। आपने जिस तरह हमें ढाला है, मैं भी दूसरों को ढालना चाहूँगा। आयुष की बात सुनकर गुरु अम्बुजानंद का चेहरा प्रसन्नता से खिल उठा। उन्होंने उसे गले से लगाये। कहा–बेटा! आज से यह गुरुकुल तुम्हारी देख-रेख में ही चलेगा।

अनुशासन का पाठ आज जन-जन में जरूरी है। आज हमारे देश की जनता यह पाठ सीख लेगी, तो हमारा देश उन्नति के शिखर पर बढ़ जाएगा।

सफलतारूपी रथ के दो पहिये–धैर्य और विनम्रता

सफलता रूपी रथ के दो पहिये हैं–सत्य के साथ धैर्य और विनम्रता। धुन का पक्का विक्रम पेड़ के पास लौट आया। पेड़ पर से शव को उतारा, उसे अपने कंधे पर डाल लिया और यथावत् श्मशान की ओर बढ़ता हुआ जाने लगा। तब शव के अंदर से बैताल ने कहा–राजन्! यह नहीं जानता कि किस प्रकार के लोक कल्याण की आकांक्षा लेकर इनता घोर परिश्रम किये जा रहे हो। आधी रात को इतने कष्ट सह रहे हो। परन्तु ऐसे कई लोगों को मैंने देखा है, जो प्रजा क्षेम, लोक कल्याण आदि सिद्धांतों को रटते रहते हैं, पर जैसे ही उन्हें

व्यावहारिक रूप देने का अवसर उनके साथ आता है, वे धैर्य खो बैठते हैं। आशा करता हूँ कि कालीचरण की कहानी से सबक लोगे। फिर बैताल यों कहानी सुनाने लगा–

कालीचरण नाम का एक नौजवान था। वह एक गुरु के यहाँ विद्याभ्यास करता था। विद्याभ्यास पूरा करके वहाँ से जाने के पहले गुरु ने कालीचरण से कहा–कभी भी यह नहीं भूलना कि निरंतर श्रम के कारण ही तुम्हारा विद्वान् हो पाना संभव हो पाया है। हर मनुष्य को प्रगति और पतन के कारण होते हैं, उसके विचार और काम। दुनिया में जो भी जन्म लेते हैं, उनके पंचभूत और परिसर एक ही समान होते हैं। उनका सद्पयोग करना चाहिए और प्रगति के शिखरों पर आरोहण करना चाहिए। जानते हो, यह कैसे संभव होता है? उनका परिश्रम और संकल्प। इस सत्य को पहचानो और स्वयं परिश्रम करो, शोध करो और प्रकाश पथ पा जाते हुए दूसरों को भी राह दिखाओ। फिर उन्होंने आशीर्वाद देकर उसे विदा किया।

कालीचरण ने घर लौटकर व्यापार किया। एक दिन उसका जहाज डूब गया और वह एकदम कंगाल हो गया। इसी दौरान उसके गुरु वहाँ आये। उसकी दुःस्थिति पर उन्होंने दया दिखायी। उसे तसल्ली देते हुए उन्होंने कहा–कालीचरण! ऐसे समय में धैर्य रखना चाहिए। जीवन में जीत-हार स्वाभाविक है।

एक बार एक भील युवक बरगद की शाखा पर बैठकर कबूतरों की जोड़ी को अपने बाण का निशाना बनाने के लिए तैयार बैठा था। मादा कबूतर ने यह देख लिया और उड़ जाने के लिए नर कबूतर को संकेत किया। पर नर कबूतर ने उसे बाज को दिखाया, जो उन्हें उड़ा ले जाने के लिए आकाश में घूम रहा था। उसने मादा कबूतर से कहा–घबराओ मत। इस विपत्ति से बचने के लिए केवल भगवान् से प्रार्थना कर सकते हैं। सिवा इसके कोई दूसरा मार्ग नहीं है। इतने में भील युवक ने बाण छोड़ते हुए एक साँप पर अनजाने में पैर रखा, जिसने उसे डँस लिया। वह जमीन पर गिर गया। वह बाण कबूतरों के ऊपर से होते हुए सीधे बाज को लगा, जिसके कारण वह मरकर जमीन पर गिर

गया। इस तरह कबूतर बच गये। देख लिया न, मरण की विपत्ति में फँस जाने के बाद भी नर कबूतर के धैर्य ने उसे बचाया। इसलिए तुम भी धैर्य रखो, सहनशील बने रहो। समय करवट लेगा। ऐसी कोई काली रात नहीं, जिसके अंत में भोर की किरण नई आशा लेकर नहीं आती। सब कुछ काल के अधीन है। हम केवल निमित्तमात्र हैं।

कहानी कह चुकने के बाद बैताल ने विक्रम से पूछा–राजन्! गुरु ने कालीचरण को उपदेश दिया था, जीवन में सफलता के लिए चाहिए परिश्रम और संकल्प; परन्तु अंत में एक चिड़िये की कहानी सुनाकर बताया कि सब कुछ समय के अधीन है। विधि बलवान है, यह कहते हुए उन्होंने शुष्क वेदांत का सहारा लिया। क्या यह विचित्र और एक-दूसरे के विरोधी नहीं लगते? क्या अनुभव ने उन्हें यही पाठ सिखाया? अथवा वृद्ध ही कारण उनमें उत्पन्न निराशा, उदासीनता इसके कारण हैं। उनके दो अभिप्रायों में से कौन-सा सच्चा है। कौन-सा असत्य है? मेरे इन संदेहों के समाधान जानते हुए भी चुप रह जाओगे, तो तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जाएँगे।

विक्रम ने कहा–गुरु की बातों में किसी भी प्रकार का विरोध नहीं है। उन्होंने कालीचरण को पहले और अंत में जो बताया, वे दोनों ही संपूर्ण सत्य हैं। मनुष्य के प्रयत्न व परिश्रम के बिना किसी भी प्रकार की प्रगति साध्य नहीं। विधि लिखित मानकर चुप बैठ जाएँगे तो कुछ भी नहीं होगा। ऐसा करने पर दरिद्रता और बढ़ेगी। उन्होंने अपने प्रथम उपदेश में कहा था कि युवा हृदयों के लिए प्रयत्न और परिश्रम प्राण शक्ति समान हैं। उसी प्रकार जीवन की यात्रा में ऐसी बाधाएँ उपस्थित होंगी, जिनका सामना साहस के साथ करना चाहिए। पहले इनकी कल्पना भी हम नहीं कर सकते।

परिस्थितियाँ हमेशा मनुष्य के अधीन नहीं होतीं। ऐसी स्थिति में हमें सहनशील होना चाहिए और भगवान् पर विश्वास रखना चाहिए। यही विषय उन्होंने अंत में बताया। दोनों ही परामर्श सत्य हैं; परन्तु कब किस प्रकार से इनका उपयोग करना चाहिए, यह मनुष्य की विज्ञता और विवेक पर निर्भर करता है। राजा के मौन भंग में सफल बैताल

शव-सहित गायब हो गया और फिर पेड़ पर जा बैठा।

मनुष्य के प्रयत्न व परिश्रम के बिना किसी भी प्रकार की प्रगति साध्य नहीं। अतः विधि-लिखित मानकर चुपचाप नहीं बैठना चाहिए। साथ ही ईश्वर पर विश्वास भी करना तथा सहनशील भी होना चाहिए।

विनम्रता ही मनुष्य को महान बनाती है

विन्रमता के अभाव में मनुष्य अहंकारी बन जाता है। एक राजा बहुत अहंकारी था। जब मंत्री ने उससे कहा कि नगर में परम ज्ञानी संतपुरुष महात्मा बुद्ध पधारे हैं और आपको चलकर उनका स्वागत करना चाहिए। तो उसने कहा–मैं बुद्ध का स्वागत करने क्यों जाऊँ? मैं राजा हूँ और सभी मुझसे मिलने महल में महल में आते हैं। बुद्ध का यदि मुझसे मिलना होगा, तो वे स्वयं मेरे महल में आएँगे। राजा की बात सुनकर मंत्री बोला–आप राजा हैं, इसलिए सभी आपसे मिलने आते हैं; लेकिन संतपुरुष राजा से भी ऊपर होते हैं। चूँकि प्रजा के लिए भी वे श्रद्धा के पात्र होते हैं, इसलिए उनको आदर करके आप लोगों के भी प्रिय पात्र बनेंगे। राजा कुतर्की था। उसने पलटकर कहा–क्या मैं प्रजा का दास हूँ कि जा वह करे और चाहे, वही मैं करूँ? मैं राजा हूँ, इसलिए मैं जो चाहूँगा, वही करूँगा। मंत्री को राजा का व्यवहार उचित नहीं लगा। उसने कहा–मैं आपकी सेवा नहीं कर सकता। आपमें तनिक भी बड़प्पन नहीं है। राजा ने कहा–मैं सिर्फ अपने बड़प्पन के कारण बुद्ध के स्वागत हेतु नहीं जा रहा हूँ। मंत्री ने कहा–अपने घमंड का बड़प्पन मत समझिए। बुद्ध भी कभी महान् सम्राट के पुत्र थे। उन्होंने राज्य का त्याग कर भिक्षु बनना स्वीकार किया। इसका अर्थ है कि राज्य के मुकाबले उनको त्याग अधिक बड़ा है। आप तो अभी बुद्ध के बहुत पीछे हैं। विनम्रता ही व्यक्ति को बड़ा व महान् बनाती है। इसके अभाव में मनुष्य पद और आयु में बड़ा होने के बावजूद अहंकार का ऐसा पुतला बनकर रह जाता है, जो किसी के भी सम्मान का पात्र नहीं होता। राजा बात का मर्म समझ गया और न केवल बुद्ध का स्वागत करने गया, बल्कि उनसे दीक्षा भी ग्रहण की।

कर्मफल अमिट है

हमें किसी का भी बुरा करन तो दूर, सोचना भी नहीं चाहिए; क्योंकि कर्मफल अमिट है। किसी पहाड़ पर एक गुफा में एक योगी रहता था। वह अक्सर ईश्वर-भक्ति में मग्न रहता था। पर कभी-कभी भिक्षा के लिए गाँव में आ जाता था। योगी शांत स्वभाव का था। लोगों के साथ खुलकर बातें करता था। सुख में शामिल होता था। दुःख में ढाढ़स बँधाता था। सब लोग योगी को प्यार करते थे। छोटे बच्चे उसको बहुत चाहते थे। योगी जब गाँव में आता, तो घर-घर में जाता, सबकी कुशल-क्षेम पूछता। लोग अपनी श्रद्धा और संपत्ति के अनुसार उसकी झोली में कुछ-न-कुछ डाल देते। कोई ककड़ी देता, कोई मकई। कोई सब्जी लाता, कोई फल। योगी स्वयं किसी से कुछ नहीं माँगता था। जो कोई उसे देता, अपनी मर्जी से देता था। योगी बस इतना कहता—'जो दे उसका भला, जो न दे उसका भला। नेकी के साथ बदी, बदी के साथ नेकी जो ऐसा नहीं तो कुछ और करके देख।' प्रायः जहाँ भी वह जाता, यही कहता था।

उसी गाँव में एक बुढ़िया रहती थी। वह स्वभाव से कंजूस थी। योगी, अतिथि और मँगतों से बहुत डरती थी। जब वह किसी को आते देखती, तो पहले ही द्वार बंद कर लेती थी। अगर कोई देख लेता कि अंदर ही है, तो वह लड़के से कहती, जाओ कह दो कि माँ बीमार है। योगी को उसने कभी भीख नहीं दिया, फिर भी जब वह गाँव में आता, तो उसके घर भी चला जाता। उसके लड़के से बात करके चला आता था। उठते हुए वहाँ भी वही कहता। बुढ़िया उसे अपने ऊपर ताना समझती। धीरे-धीरे वह योगी से खार खा बैठी।

एक दिन बुढ़िया ने सोचा। इस जोगड़े के होश ठिकाने लगाना चाहिए। उसके लिए वह उपाय सोचने लगी। आखिर एक दिन उसने देखा कि योगी गाँव में आ रहा है। उसने जहर डालकर रोटियाँ बनायी और योगी के लिए रख दीं। रोज की भाँति योगी आया। उस दिन बुढ़िया का लड़का घर में नहीं था, आटा पीसने की चक्की पर गया हुआ था। बुढ़िया ने योगी को रोटियाँ दीं। योगी ने कहा—झोली में डाल दो माई!

भूख लगने पर खा लूँगा। रोटियाँ लेकर वह वहाँ से चल दिया।

वह अपनी गुफा पर आया और लेट गया। योगी गुफा से होकर ही चक्की का रास्ता जाता था। नदियों पर जब छाया ढल, तो बुढ़िया का लड़का और बहु इधर से आटे का बोझ लिये लौटे। चढ़ाई का रास्ता था, दोनों पसीने से लथपथ थे। जोर की प्यास लगी थी। पानी पीने के लिए योगी की गुफा में गये। योगी से उन्होंने पानी माँगा। योगी ने पानी देते हुए कहा, बड़ी देर की। कुछ खाया भी या नहीं? बिना अन्न खाये पानी नहीं पीना चाहिए।' और उसे तभी बुढ़िया की दी हुई रोटियाँ याद आयी। उसने रोटियाँ निकालीं और उनके हाथ में पकड़ा दीं। लो, रोटियाँ खा लो। तुम्हारे ही घर से मिली थीं। मैं अपने लिए फिर और बना लूँगा।

बुढ़िया का लड़का और बहू रोटी खाने लगे, पर उन्होंने कुछ ही कौर खाये थे कि अचानक उनकी आँखें घूमने लगीं। मुँह में लार आने लगा और सारा शरीर नीला पड़ गया। देखत-देखते वे लुढ़क गये। योगी ने यह देखा, तो चिल्लाया, यह क्या हुआ? लोग आये। सबने कहा कि रोटियों में जहर मालूम होता है। वे योगी को मारने को उठे। योगी ने समझाया, रोटियाँ मुझे बुढ़िया ने दी थी। लोगों ने बुढ़िया से पूछा। बुढ़िया ने कहा—रोटियों में विष मैंने योगी को मारने के लिए मिलाया था। फिर क्या था, लोगों ने उसको खूब धिक्कारा। बुढ़िया फूट-फूटकर रोने लगी। लोगों ने कहा, जो दूसरों का बुरा चाहता है, भगवान उसी का बुरा करता है।

उसी दिन सबने माना, योगी ठीक कहता है—'नेकी के साथ नेकी, बदी के साथ बदी। जो ऐसा नहीं, तो कुछ और करके देखे।'

जबतक हम समस्याओं में नहीं फँसते, हम गलतियाँ करते चले जाते हैं। दूसरों को जितना कष्ट दे सकते हैं, अवश्य देते हैं। किन्तु हमें उसका भान तब होता है, जब हमारे ऊपर मुसीबतों का पहाड़ा टूट पड़ता है, तब हमें अवश्य दूसरों को दिये गये कष्टों का पश्चाताप होता है। या हम यूँ समझें कि ईश्वर हमें पश्चाताप का फैका अवश्य देता है। इसलिए हमें कभी भी दूसरों को कष्ट नहीं देना चाहिए। परमात्मा के यहाँ देर है, अंधेर नहीं—यह हमेशा याद रखना चाहिए।

कल और आज

हम किसी को याद करके तथा भविष्य को सोचकर भयभीत तथा दुःखी रहते हैं। भगवान बुद्ध उसका निवारण करते हैं।

गौतम बुद्ध एक गाँव में उपदेश दे रहे थे—व्यक्ति को धरती माँ की तरह क्षमाशील होना चाहिए। क्रोध एक प्रकार की आग है। उससे वह दूसरे को तो जलाएगा ही, पहले खुद बहुत कुछ जल जाता है। इनका उपदेश एक क्रोधी व्यक्ति भी सुन रहा था। क्रोध के विरुद्ध उनका उपदेश उसे अच्छा नहीं लगा।

वह खड़ा होकर कहने लगा—ओ पाखंडी! बड़ी-बड़ी बातें ही करना जानता है? तू जन समुदाय के विरुद्ध बातें बताता है। उसकी बातें सुनकर बुद्ध शांत रहे। वह और अधिक भड़क उठा और उसने पास आकर उनके मुँह पर थूक दिया। अगले दिन बुद्ध अपने शिष्य के साथ दूसरे गाँव में चले गये। लेकिन वह क्रोधी अब शांत हो चुका था। उसे अपने किये पर पछतावा हो रहा था। वह बुद्ध की खोज में निकल पड़ा। खोजते हुए वह उस गाँव में जा पहुँचा, जहाँ बुद्ध उपदेश दे रहे थे। वह जाकर उनके चरणों में लोट गया और बोला—'मुझे क्षमा कीजिए।' बुद्ध बोले—कौन हो तुम? क्रोधी चौंककर बोला—आप भूल गये। मैं वही कल वाला दुष्ट हूँ, जिसने आपपर थूक दिया था। मैं अपने दुष्ट आचरण के लिए क्षमा माँगने आया हूँ।

बुद्ध ने कहा—कल को तो मैं कल ही छोड़ आया हूँ और तुम अभी तक वहीं हो। आज में प्रवेश नहीं किया तुमने अबतक? कल को छाती से चिपकाए रहोगे, तो आज उसमें खो जाएगा। हर बुरी बात और बुरी घटना को याद रखा जाए, तो वर्तमान और भविष्य—दोनों ही ठहर जाएँगे। ऐसे में हम जीवन जीएँगे क्या? तुम भी आज में आ जाओ।

भगवान् बुद्ध ने कहा—'बीती ताही बीसारि दे, आगे की सुधि लेय।' कल की घटनाओं को हृदय में रखकर हृदय को दुःखी न करें। गुरुदेव ने भी कहा है—वर्तमान को बनाओ, भविष्य स्वयं बन जाएगा।

ज्ञान और व्यवहार

दक्षिण भारत में एक बड़े ही ज्ञानी तपस्वी साधु हुए हैं—सदाशिव

ब्रह्मेन्द्र स्वामी। उन दिनों वे अपने गुरुदेव के आश्रम में वेदान्त का अध्ययन कर रहे थे।

उनका सारा समय अध्ययन-चिंतन एवं तप में बीतता था। एक दिन सुविख्यात पंडित उनके गुरुदेव के आश्रम में पधारे। इन पंडित महाशय को आते ही किसी बात पर सदाशिव स्वामी से विवाद हो गया।

सदाशिव स्वामी ने देखते-ही-देखते उन पंडित महाशय के तर्कों को तहस-नहस कर डाला। सदाशिव स्वामी को प्रचंड विद्वत्ता की आँधी में उन परम विद्वान् महोदय की एक न चली।

स्थिति यहाँ तक आयी कि उन आगन्तुक पंडित को सदाशिव स्वामी से क्षमायाचना करनी पड़ी। इस घटना ने सदाशिव स्वामी को प्रसन्न कर दिया। उन्होंने बड़े ही उत्साहपूर्वक अपने गुरुदेव से यह घटना सुनायी।

सोचा था कि गुरुदेव प्रसन्न होकर उनकी पीठ थपथाएँगे, पर ऐसा कुछ नहीं हुआ, बल्कि इसका ठीक उल्टा हुआ। गुरुदेव स्वामी ने सदाशिव को फटकार लगायी। बोले—सदाशिव! श्रेष्ठ चिंतन की सार्थकता तभी है, जब उससे श्रेष्ठ चरित्र बने एवं श्रेष्ठ चरित्र तभी सार्थक है, जब वह श्रेष्ठ व्यवहार बनकर प्रकट हो। तुमने वेदांत का चिंतन तो किया, पर सच्चे ज्ञानी का चरित्र नहीं गढ़ सके और न ही तुम योग्य साधक का व्यवहार करने में समर्थ हो पाए। इसलिए तुम्हारे अबतक के सारे अध्ययन-चिंतन को बस धिक्कार योग्य ही माना जा सकता है।

गुरुदेव के इन वचनों को सुनकर सदाशिव स्वामी का अहंकार चूर-चूर हो गया। उन्होंने बड़े ही विनम्र भाव से पूछा—'गुरुदेव! श्रेष्ठ व्यक्तित्व कैसे गढ़ा जाए?'

गुरुदेव बोले—'वत्स! व्यक्तित्व को नये सिरे से गढ़ने के लिए पहले अपने विचारों में उसकी रूपरेखा स्पष्ट होनी चाहिए। साधक के व्यक्तित्व के गठन के लिए साधक के चिंतन में हर पल उसकी ज्ञान-साधना घुली-मिली रहे। उद्देश्य के अनुरूप चिंतन के अलावा कोई दूसरा विरोधी विचार मन में प्रवेश न करे। फिर उद्देश्यपूर्ण विचार को प्रगाढ़ता निरंतर बनी रहे। मनन और आसन निरंतर होता रहे।

आपसी प्रेम बना रहे

यदि हम आपस के प्रेम को नही छोड़ेंगे, तो एक दिन हमारा देश पूर्ण सुखी एवं समुन्नत समाज की स्थापना अवश्य हो जाएगी।

एक समय की बात है। एक गाँव में दीनदयाल नाम के बड़े ही दयालु व धर्मात्मा सेठ जी अपने परिवार के साथ रहते थे। एक रात जब वे सो रहे थे, तभी उन्हें आभास हुआ कि उनके सपने में लक्ष्मीजी ने आकर दर्शन दिये और बोली–'सेठ जी! अब तुम्हारे सब पुण्य खत्म हो गये हैं। अब मैं तुम्हारे घर से जाऊँगी। हाँ, जाने से पहले तुम्हें एक वरदान दे सकती हूँ। अतः तुम अपने मन मुताबिक जो माँगना है, माँग लो।' सेठजी पहले तो डर गये, फिर माँ के दर्शन पाने की अनुभूति से गद्‌गद हो उठे। कुछ सोचते से माँ से याचना करने लगे कि 'माँ! मुझे सोचने के लिए एक दिन का वक्त दे दें, तभी मैं आपसे वरदान माँग सकूँगा।'

लक्ष्मीजी ने कहा–'ठीक है वत्स! कहकर वह अंतर्धान हो गयी। दूसरे दिन सबेरे उठते ही सेठजी ने अपने घरवालों को इकट्‌ठा करके स्वप्न में आयी लक्ष्मीजी द्वारा कही गयी बात बतायी तथा वरदान माँगने के लिए कि क्या माँगूँ या क्या माँगना चाहिए? के लिए सलाह माँगी।

इसपर सेठानी ने कहा–'निरोगी काया माँग लीजिए।' बड़ो बेटा ने कहा–'धन-दौलत, सोने-चाँदी माँग लीजिए बाबूजी!' छोटा बेटा बोला–'पिताजी! जमीन-जायदाद माँग ले।' अंत में छोटी बहू जो बहुत समझदार और शिक्षित थी, उसने कहा–'पिताजी! आप लक्ष्मीजी से यह वरदान माँगें कि उनके चले जाने के बाद भी हमारा परिवार प्रेमपूर्वक रहे। आपसी प्रेम बना रहे।'

सेठ को छोटी बहू की सलाह बहुत उचित और समयानुकूल लगी। दूसरे दिन जब रात को साने के बाद लक्ष्मीजी प्रकट हुईं, तो सेठजी ने हाथ जोड़कर प्रणाम किया और कहा–'देवी! आप जाना चाहती हैं, तो चली जाएँ। भला, मुझ अधम मनुष्य को इतनी विसात कहाँ है कि आपको रोकूँ? पर जाते-जाते यह वरदान देती जाएँ कि आपके चले जाने पर भी मेरे परिवार में आपसी प्रेम, स्नेह, आदर बना

रहे। सेठ की यह बात और प्रार्थना सुनकर लक्ष्मीजी अति प्रसन्न हो उठीं और बोलीं–'वत्स! तुमने यह दुर्लभ वरदान माँगकर मुझे हमेशा के लिए रोक लिया। जिस घर में आपसी प्रेम, आदर होता है, वहाँ सदैव लक्ष्मी का वास होता है।

यह सुनकर सेठजी आनंदित हो गया। वह अपनी छोटी पुत्रवधू की बुद्धिमानी का कायल हो गया। उसका परिवार सुख से दिन व्यतीत करने लगे।

आजकल लोग प्रेम की भाषा भूल गये हैं; किन्तु यह मालूम होना चाहिए कि प्रेम के बिना जीवन ही नहीं है। जहाँ कुछ भी नहीं, वहाँ केवल प्रेम से सब कुछ हो जाता है।

धर्म की सार्थकता

यह उन दिनों की बात है, जब स्वामी विवेकानंद अमेरिका में थे। वहाँ कई महत्त्वपूर्ण जगहों पर उन्होंने व्याख्यान दिये। उनके व्याख्यानों का वहाँ जबर्दस्त असर हुआ। लोग स्वामीजी को सुनने और उनसे धर्म के विषय में अधिक-से-अधिक जानने को उत्सुक हो उठे। एक अमेरिकी प्रोफेसर भी उनके पास पहुँचे और कहा–स्वामीजी! आप मुझे हिन्दू धर्म में दीक्षित करने की कृपा करें। स्वामीजी बोले–मैं यहाँ धर्म-प्रचार के लिए आया हूँ न कि धर्मपरिवर्तन के लिए। मैं अमेरिका धर्म-प्रचारकों को यह संदेश देने आया हूँ कि वे धर्म-परिवर्तन के अभियान को बंद कर प्रत्येक धर्म के लोगों को बेहतर इंसान बनाने का प्रयास करें। यही धर्म की सार्थकता है और सभी धर्मों का मकसद। हिन्दू संस्कृति विश्व-बंधुत्व का संदेश देती है, मानवता को सबसे बड़ा धर्म मानती है।

प्रोफेसर बोले–स्वामीजी! कृपया इस बारे में और विस्तार से कहिये। स्वामीजी ने कहा–महाशय! इस पृथ्वी पर सबसे पहले मानव का आगमन हुआ था। उस समय कहीं कोई धर्म, जाति या भाषा न थी। मानव ने अपनी सुविधानुसार अपनी-अपनी भाषाओं, धर्म तथा जाति का निर्माण किया और मुख्य उद्देश्य से भटक गया। यही कारण है कि समाज में तरह-तरह की विसंगतियाँ आ गयी हैं। लोग आपस में

विभाजित नजर आते हैं। इसलिए मैं तुम्हें यह कहना चाहता हूँ कि तुम अपना धर्म पालन करते हुए अच्छे ईसाई बनो। हर धर्म का सार मानवता के गुणों को विकसित करने में है। इसलिए तुम भारत के ऋषियों-मुनियों के शाश्वत संदेशों का लाभ उठाओ और उन्हें अपने जीवन में उतारो। प्रोफेसर मंत्रमुग्ध भाव से यह सब सुनते रहे। स्वामीजी के प्रति उनकी आस्था और बढ़ गयी।

यदि हम अपने अंदर सच्ची मानवता को विकसित कर पायेंगे, तभी हम मानव कहलाने के अधिकारी होंगे और तभी हमारा समाज समुन्नत होगा।

सभी फलों का सार सेवा है

हमें निस्वार्थ भाव से जन-जन की सेवा करनी चाहिए, तो परमात्मा हमारे निकट ही है, हम सदा महसूस करेंगे। 'सेवा ही है सार जगत में, सेवा ही सार।' सभी प्रजा का फल है सेवा। यदि हमें सेवा का अवसर मिलता है, तो समझिये हमें फिल मिल गया।

उज्जैन के राजा विक्रमादित्य गरीबों और लाचारों की मदद के लिए हमेशा तत्पर रहते थे। प्रजाहितैषी राजा की प्रशंसा चारो ओर होती थी। शनिदेव ने जब विक्रमादित्य की प्रशंसा सुनी तो उनकी परीक्षा लेने का विचार आया। शनि ने विक्रमादित्य से जाकर कहा–राजन्! मैं कौन हूँ, जानते हो?' राजा बोले, 'भाई! मैं जानकर क्या करूँगा? कोई काम हो, तो बताओ, जान की बाजी लगाकर भी करूँगा।'

शनि ने राजा के जवाब से अपमानित महसूस करते हुए धमकी दी–'तुझे स्वयं पर घमंड हो गया है। जब मैं तुझे अपार कष्ट दूँगा, तब तू मुझे पहचानेगा।' इसके बाद शनि के प्रकोप से विक्रमादित्य राज्यहीन हो गये और जंगल में एकांत वास करने लगे शनि ने वहाँ जाकर देखा विक्रमादित्य तो अब भी खुश है; क्योंकि अब वे राजकाज के तनाव से दूर लोगों की मदद करने के लिए अधिक स्वतंत्र थे। यह देख शनि ने एक डाकू का रूप धारण कर उनके हाथ-पैर काट दिये। राजा पर दया कर एक वृद्ध तेली उन्हें अपने घर ले आया और उनकी सेवा की। राजा ने उससे कहा–'बाबा! यदि आप मुझे कोल्हू पर बिठाएँगे, तो मैं बैल

का ध्यान रखकर आपका कुछ काम अवश्य हल्का कर दूँगा।' तेली के मना करने पर भी राजा नहीं माना और बैल हाँकने का काम सँभाल दिया। शनि ने अब भी राजा को आनंदमग्न पाया। कारण पूछने पर वे बोले–'हाथ-पैर न काटते, तो इस दयालु तेली का स्नेह कैसे मिलता? राजपाट और शरीर तो आने-जाने हैं, महत्त्वपूर्ण है प्राणियों की सेवा करना।' विक्रमादित्य की सेवा-भावना को समझ शनि ने उन्हें पूर्ववत् स्वस्थ कर राजपाट लौटा दिया। वस्तुतः जिन लोगों के जीवन का उद्देश्य 'सेवा' होता है, उन्हें कोई डिगा नहीं पाता।

सच्ची सेवा से परमात्मा भी वश में हो जाते हैं, तो मनुष्य की तो बात ही क्या है। जबतक मन में प्रेम नहीं होगा, हम सेवा कर ही नही पाएँगे। सेवा से सारे सद्गुण हमारे अंदर आ जाते हैं और दुर्गुण धीरे-धीरे मिट जाते हैं। सेवा से अपार सुख मिलता है। सेवा करनेवाला हमेशा प्रसन्न रहता है।

सेवा का सन्देश

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर सच्चे मानवतावादी थे। वे समाज के हर वर्ग के प्रति समान भाव रखते थे। उनके घर में घरेलू कामकाज के लिए एक नौकर था। विद्यासागर उसके प्रति काफी स्नेह रखते थे और उनके साथ बिल्कुल अपने परिवार के सदस्य की तरह ही व्यवहार करते थे। एक दिन वह अपने मकान की सीढ़ियों से उतर रहे थे कि उन्होंने देखा, उनका नौकर सीढ़ियों पर ही सो रहा है और उनके हाथ में एक पत्र है।

विद्यासागर ने धीरे से उसके हाथ से पत्र निकालकर पढ़ा, तो उन्हें पता चला कि उसके घर से कोई दुखद समाचार आया था। विद्यासागर ने देखा कि नौकर की चेहरे पर आँसू की एक लकीर थी। शायद वह रोते-रोते सो गया था। वह जल्दी से हाथ वाला पंखा लाकर उसे झलने लगे, ताकि नौकर आराम से सो सके। उसी समय उनका एक मित्र वहाँ आया। यह दृश्य देखकर वह चकित होकर बोला–आप तो हद कर रहे हैं। सात-आठ रुपये की पगार वाले नौकर की सेवा में लगे हैं। विद्यासागर ने कहा–मेरे पिताजी सात-आठ रुपये ही मासिक पाते थे। मुझे याद है, एक दिन वह चलते-चलते सड़क पर अचेत हो

गये थे, तब एक राहगीर ने पानी पिलाकर उनकी सेवा की थी। अपनेइस नौकर में मैं अपने स्वर्गीय पिता की वही छवि देख रहा हूँ। यह दुनिया तभी बेहतर ढंग से चल पाएगी, जब हर व्यक्ति एक-दूसरे की अपना समझे और उसकी सहायता करे। समान रूप से सभी के लिए स्नेहमय व्यवहार ही व्यक्ति ही व्यक्ति की उदारता और बड़प्पन को रेखांकित करता है। विद्यासागर का मित्र उनके प्रति नतमस्तक हो गया।

दुनिया तभी बेहतर चल पायेगा, जब हमारे दिल में हर इंसान के लिए दर्द हो। हमारी भावना ही ऐसी हो कि हम एक दूसरे के काम आने को हमेशा तैयार रहें।

सुश्री दुर्गारानी जायसवाल, साधिका संतमत

सुश्री दुर्गारानी जायसवाल पति स्व० हरि प्र० जायसवाल, ग्राम-रंगरा, थाना-गोपालपुर, जिला-भागलपुर की है। उनकी शिक्षा पाँचवीं कक्षा हुई है। उस वक्त गाँव में स्कूल नहीं था एवं लड़कियों को पढ़ाने की अभिरुचि अभिभावकों को नहीं रहती थी। उनका जन्म लगभग १९१८ ई० के लगभग में है। इनका जन्मस्थान सलडीहा, उत्तराखंड था। वहाँ से इनके दादा स्व० बालगोविन्द भगत पिता स्व० रामसेवक भगतजी के परिवार से हुआ था। इस संबंध से एक हीना नाम की एक बच्ची का जन्म हुआ था, जो ९ वर्ष की उम्र में बच्ची का देहान्त हो गया।

उस वक्त विनोवाजी का आंदोलन चल रहा था, उसमें लगभग १९५७ ई० में दुर्गारानी का भागीदारी था। बिनोवा के साथ एक वर्ष तक उनका सहयोग रहा। गाँव में उस वक्त प्राथमिक विद्यालय चला रही थी। सरकारीकरण के दौर में विद्यालय चल रहा था। अचानक बच्ची हीना का देहान्त हो जाने के बाद मानसिक स्तर से गिरावट आने लगी तथा दुनिया से निराश एवं फीकापन महसूस होने लगा। तथा उसी वक्त सन् १९६१ ई० में संतमत की साधना कुप्पाघाट में जाकर लिया, तब से साधन-भजन करने लगी। साधन-भजन में उन दिनों ३-३ घंटे/४ घंटे तक ध्यान करती थी। साधना में अच्छी पकड़ थी।

एक बार थाना बिहपुर में श्रीसद्गुरु महाराजजी का सत्संग हो

रहा था, जिसमें गुरु महाराजजी का आशीर्वाद निकला–'जाओ, करो, हो जाएगा।' उसी वक्त से ध्यान-भजन में मन अधिक से अधिक लगने लगा तथा एक बार मन में इच्छा रखकर कुप्पाघाट आयी कि मुझे कोई नहीं है, तो मेरा कैसे जीवन चलेगा? यही मन में सोच रही थी, तबतक गुरु महाराज बोलते हैं कि जिसको कोई नहीं है, उसको सत्संग ही बेटा-बेटी है। वही सत्संग ही बेटा-बेटी बनकर सेवा करेगा।

तबसे मैं चिंतामुक्त होकर ध्यान-भजन एवं सत्संग करने लगी एवं गुरु महाराज की वाणी अक्षरशः सत्य मालूम होती है। सामग्री जो भी मुझे अपने जरूरत से अधिक रहती है, उसको मैं अन्य जरूरतमंद महिला को दे देती हूँ। मेरी नजर में यह रहता है कि सबको ईश्वर मदद करें, सभी सुखी रहें।

सन् १९४२ के आंदोलन में आंदोलनकारियों का रात्रि-भोजन अपने ससुराल में मन लगाकर करती थी तथा इनके ससुर बोलते थे कि अभी हमलोग अंग्रेजों से लड़ रहे हैं। आजादी मिलने के बाद हमलोगों को बहुत लाभ मिलेगा। सब काम-धंधा, रोजगार छोड़कर मीटिंग में इनके ससुर स्व० रामसेवक भगत हमेशा जाते रहते थे। पैसा नहीं रहने पर अपना खेत-बाड़ी बेच देते थे।

माँ बच्चे पाले या नौकरी करे

महिलाएँ घर सँभाले, बच्चे पाले या अपना कैरियर बनाने पर फोकर करे। आज के आधुनिक समाज में यह प्रश्न बहुत-सी महिलाओं को दुविधा में डाल रहा है। इन 'कन्वरसेशन विद द मिस्टिक' शृंखला में फिल्म अभिनेत्री जूही चावला ने 'प्रेम और जीवन' विषय पर बातचीत में सद्गुरु जग्गी वासुदेव से यही सवाल पूछा, 'सद्गुरु इसके उत्तर में बता रहे हैं कि घर सँभालना और बच्चे पालना अपना कैरियर बनाने में कम महत्त्वपूर्ण जिम्मेवारी नहीं है।

एक इंसान के तौर पर हर महिला को वही करना चाहिए, जो वह करना चाहती है, इसे न तो समाज में ट्रेंड बना लेना चाहिए और न ही दुनिया में एकमात्र करनेयोग्य काम मान लेना चाहिए। मेरा मानना है कि अगर कोई महिला अपने दो बच्चों को जन्म देकर उन्हें पाल-पोष

कर बड़ा करती है, तो यह अपने आपमें एक फुलटाइम काम है। मैं यह नहीं कह रहा कि उसे बाहर जाकर काम नहीं करना चाहिए। अगर एक इंसान के तौर पर वह ऐसा करना चाहती है, तो वह इसके लिए आजाद है; लेकिन दो बच्चे पैदा करने का मतलब सिर्फ अपना वंश बढ़ाना नहीं है, बल्कि इसका मतलब है कि आप समाज की अगली पीढ़ी का निर्माण कर कर रही हैं। कल को आनेवाली दुनिया कैसी होगी, यह इस बात पर निर्भर करता है कि आज समाज में माताएँ कैसी हैं।

कई बार मैं महिलाओं से पूछता हूँ कि आप क्या करती हैं, तो अक्सर उनका जवाब होता है कि मैं सिर्फ हाउसवाइफ या गृहिणी हूँ। इसपर मैं उनसे कहता हूँ, 'आप यह क्यों कहती हैं कि आप सिर्फ एक गृहिणी हैं।' दो या तीन नये जीवन को पाल-पोसकर बड़ा करने की काबिलियत का महत्त्व कम है!

मेरी माँ ने 'मैं तुम्हें प्यार करती हूँ' या इस तरह के जुमले कभी मुझसे नहीं कहे। वह सहज भाव से अपना जीवन जीती रहीं और हमारे मन में कभी यह बात आयी ही नहीं कि हमें प्यार करती हैं या नहीं। इन सवालों के कभी उठने की नौबत इसलिए नहीं आयी; क्योंकि उनका पूरा जीवन हमलोगों के लिए समर्पित था। हमें पता है कि वह सिर्फ हमारे लिए ही जीती रही। मैं अपने जीवन के उस दौर में अपने पास उनकी गैरमौजूदगी की कल्पना भी नहीं कर सकता था। किसी को अगर पैसे की जरूरत है या कैरियर को लेकर जबर्दस्त लगाव है, तो वह पैसा कमा सकती है; लेकिन हमें समाज में बतौर ट्रेंड ऐसे मूल्यों की स्थापना नहीं करनी चाहिए।

आज मैं जो कुछ भी हूँ, उसमें मेरी माँ की कभी कोई सक्रिय भूमिका नहीं रही; लेकिन उन्होंने मेरे लिए जिस तरह का पूरा माहौल तैयार किया, अगर वह नहीं होता, तो मैं आज यहाँ तक कभी नहीं पहुँचता। उन्होंने पूरा जीवन हमें उचित माहौल देने में निकाल दिया। दरअसल वह अच्छी तरह जानती थी कि वह यह सब कहीं-न-कहीं काम आयेगा। उन्होंने जो सबसे महत्त्वपूर्ण काम मेरे लिए किया, वह यही था। फिर कोई ऐसा क्यों सोचता है कि यह काम महत्त्वपूर्ण नहीं

है? बचपन में हमें कभी किसी चीज के बारे में चिंता नहीं होती थी। उनकी पूरी कोशिश रहती है कि हमें जरूरी व सही माहौल हमेशा मिलता रहे। हमें अपने आसपास चलनेवाली तमाम चीजों और घटनाओं से बेखबर रहा करते और इसी ने मेरे लिए यह संभव किया कि कई-कई दिनों तक मैं अपनी आँखें बंद कर बैठे रह सका।

आज हमने पूरी दुनिया को ही अर्थशास्त्र में उलझा दिया है। पैसा एक साधन भर होता है, जिससे आप अपनी मनचाही चीजें ले सकें। पुराने समय में पुरुष पैसा कमाते थे, जबकि महिलाएँ जीवन के तमाम सुन्दर पहलुओं के बारे में सोचा और बात किया करती थीं। आज महिलाएँ भी पैसा कमाना चाहती हैं। अगर यह परिवार की आर्थिक जरूरत है, तो उसे जरूर पैसा कमाना चाहिए; लेकिन इसे ही सबसे अच्छा विकल्प मानकर नहीं चलना चाहिए। अगर वह गाती है, संगीत बजाती है, अच्छा खाना पकाती है, अपने बच्चों से प्यार करती है, वह खुद एक फूल की तरह बेहतरीन तरीके से जीवन जीती है, तो यह भी अपने आपमें काफी है, ऐसा कतई नहीं सोचना चाहिए कि किसी महिला का योगदान मूल्यवान तभी है, जब वह पैसा कमाती है।

अगर पैसे की जरूरत है या कैरियर को लेकर उसमें लगाव है, तो वह पैसा कमा सकती है; लेकिन हमें समाज में बतौर ट्रेंड ऐसे मूल्यों की स्थापना नहीं करनी चाहिए। इस तरह से समाज का विकास नहीं होगा। जीवन की खूबसूरती या कलात्मकता की बजाय, महज अपने जीवन की बुनियादी जरूरतों को महत्त्व देकर, हम जीवन में आगे बढ़ने की बजाय पीछे की ओर जा रहे हैं।

नारी (माँ) का स्थान बहुत ऊँचा है; क्योंकि वह सृजनकर्ता है तथा उसकी मेहनत से सुन्दर और सुदृढ़ समाज की स्थापना होती है। वह पैसा कमाये या न कमाये, उससे उसकी महानता में कोई कमी नहीं आती। कमाने के साथ उनमें विनम्रता अत्यन्त आवश्यक है। कमाना भी कोई बुरी बात नहीं, यदि जरूरत है और समय है, तो अवश्य करना चाहिए; किन्तु अहंकार नहीं आना चाहिए। इससे नारी का नारीत्व खत्म हो जाता है।

माँ

माँ तो आखिर 'माँ' होती है.....

'माँ' हर-पल हमारे सुनहरे भविष्य के सपने संजोती है...

अगर हमें कुछ हो जाए, तो 'माँ' दिन-रात एक कर देती है..

खुद भूखे रहकर 'माँ' हमारा पेट पूरा भर देती है....

सभी कष्टों को 'माँ' हँसते-हँसते सह लेती है....

सिर्फ कदमों की आहट से ही 'माँ' हमें पहचान लेती है....

बिना बोले ही 'माँ' हमारे सारे दु:ख-दर्द जान लेती है...

निवारण हेतु किसी भी हर तक जाने को 'माँ' ठान लेती है..

'माँ' है तो त्यौहार.....त्यौहार लगते हैं...

'माँ' के बिना सारे त्यौहार खलते हैं....

'माँ' दिवाली की रोशनी, होली का रंग होती है...

'माँ' ईद की ईदी, रमजान की दुआ होती है....

'माँ' क्रिसमस में बच्चों के लिए मोजे में टाफियाँ पर 'सांताक्लाज' भी होती है...

अगर मानो तो भगवान से भी बढ़कर 'माँ' होती है...

क्योंकि 'भगवान' को भगवान समझने की समझ भी तो 'माँ' ही देती है!

'माँ' तुझे प्रणाम.....! 'माँ' तुझे सलाम...!!

'माँ' के समान और कौन हो सकता है। इस कविता में 'माँ' की महानता झलकती है।

बच्चों को सिखाएँ 'माँ' को थैंक्स कहने की कला

पूरा दिन काम-काज और तमाम जिम्मेवारियों में बितानेवाली माँ को शायद ही कभी बच्चों से शुक्रिया या धन्यवाद जैसे शब्द सुनने को मिलते हैं। ऐसे में घर के सदस्यों और खासतौर से परिवार के पुरुषों की जिम्मेवारी है कि वे बच्चों के दिल में माँ का सम्मान बढ़ाएँ। इस 'मदर्स डे' पर आप अपने बच्चे को यह कला सिखाएँ, ताकि वे अपनी जिंदगी में माँ कि अहमियत की समझें...

जी टी०वी० पर प्रसारित रहे धारावाहिक 'हेलो प्रतिभा' में प्रतिभा अपने परिवार के लिए सब कुछ करती है; लेकिन उसके परिवार के लोग बदले में उससे प्यार का एक शब्द भी नहीं कहते। इस बात से वह काफी दुखी रहती है कि उसकी अपनी बेटी उसे सम्मान की नजर से नहीं देखती। ऐसे में यह पिता का ही कर्तव्य है कि वह बच्चों के मन में माँ के प्रति सम्मान पैदा करे।

बच्चों के सामने मीठे बोल : एक पिता को इस बात का खास करना चाहिए कि बच्चों के सामने अपनी पत्नी का मजाक न बनायें। तभी वह बच्चा अपनी माँ को इज्जत करना सीखेगा। अपनी पत्नी की हर छोटी कोशिशों की तारीफ करें। परिवार का कोई भी सदस्य अगर आपकी पत्नी का अपमान कर रहा है, तो पत्नी का साथ दें। बच्चों पर इन बातों का बहुत प्रभाव पड़ता है कि उनसे बड़े क्या कर रहे हैं।

कमजोरियों का मजाक : हो सकता है कि आप और आपके बच्चे बेहतरीन स्कूल में पढ़े हों और उन्हें काफी अच्छी तालिम मिली हो; लेकिन यह न भूलें कि माँ को किसी स्कूल की जरूरत नहीं होती। वह तो बच्चों को निस्वार्थ भाव से प्यार करती है और बच्चों का पूरा ध्यान रखती है। बच्चों को भी यह बात समझाएँ कि वे अपनी माँ के अंगरेजी ने जानने या नये जमाने की किसी अन्य बातों को न जानने पर उनका मजाक न बनायें, बल्कि उन्हें नयी तकनीक से रूबरू करायें।

मदर्स डे पर खास तोहफा : अपने बच्चे के साथ मिलकर उन्हें प्रोत्साहित करें कि मदर्स डे पर बच्चे अपनी माँ को कुछ सरप्राइज गिफ्ट दें। बच्चों की गिफ्ट खरीदने में मदद करें। साथ ही आप भी अपनी माँ को कोई प्यारा-सा तोहफा दें। बच्चों के साथ मिलकर आप अपनी माँ-पत्नी के लिए सरप्राइज पार्टी अरेंज कर सकते हैं।

माँ की मदद : कभी-कभी बच्चों के साथ मिलकर पत्नी के लिए उनकी पसंद का खाना बनायें। घर के बाकी कामों में भी उनकी मदद करें। इससे आपकी पत्नी को बच्चों का साथ मिलेगा। इससे बच्चों को यह बात समझ आयेगी कि उनकी माँ की बात या सलाह उनके लि

कितना मायने रखती है और वे अपनी माँ से हर बात शेयर करेंगे।

मातृदिवस का इतिहास : यह इतिहास सदियों पुराना एवं प्राचीन है। यूनान में बसंत ऋतु के आगमन पर रिहा परमेश्वर की माँ को सम्मानित करने के लिए यह दिवस मनाया जाता था। १६वीं सदी में इंग्लैंड का ईसाई समुदाय ईशु की माँ 'मदर मेरी' को सम्मानित करने के लिए यह त्यौहार मनाने लगा। 'मदर्स डे' मनाने का मूल कारण समस्त माँओं को सम्मान देना और एक शिशु के उत्थान में उसकी महान् भूमिका को सलाम करना है। इसको आधिकारिक बनाने का निर्णय पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति वूडरो विलसन ने ८ मई, १९१४ को लिया। ८ मई, १९१४ में अन्ना की कठिन मेहनत के बाद तत्कालीन अमेरिकी राष्ट्रपति वुडरो विल्सन ने मई के दूसरे रविवार को मदर्स डे मनाने और माँ के सम्मान में एक दिन के अवकाश की सार्वजनिक घोषणा की। वे समझ रहे थे कि सम्मान, श्रद्धा के साथ माताओं का सशक्तीकरण होना चाहिए, जिससे मातृत्व शक्ति के प्रभाव से वृद्धों की विभीषिका रुके। तब से हर वर्ष मई के दूसरे रविवार को 'मदर्स डे' की शुरुआत अमेरिका से हुई। वहाँ एक कवयित्री और लेखिका जुलिया वार्ड होव ने १८७० में १० मई को माँ के पास समर्पित करते हुए कई रचनाएँ लिखीं। वे मानती थीं कि महिलाओं की सामाजिक जिम्मेदारी व्यापक होनी चाहिए। अमेरिका में मातृ-दिवस (मदर्स डे) पर राष्ट्रीय अवकाश होता है। अलग-अलग देशों में मदर्स डे अलग-अलग तारीख पर मनाया जाता है। भारत में भी मदर्स डे का महत्त्व बढ़ रहा है।

हर ऋतु माँ की है और हर दिन माँ का है। फिर भी सबों के द्वारा बनाये गये इस मातृ-दिवस का हम सबों को स्वागत करना चाहिए।

माँ की मुस्कान के लिए करें कुछ खास

हम जिंदगी में आगे बढ़ते जाएँ, इसके लिए माँ अपने आपको भूला कर, अपनी नींद और आराम को परे रखकर हमारे लिए जितने भी जतन किये जा सकते हैं, करती जाती है। हम आगे बढ़ते चले जाते हैं। माँ उसी आँगन में खड़ी रहती है हमारी सलामती की दुआएँ करती

हुई, जहाँ उन्होंने हमें हमारी हथेली थामकर चलना सिखाया था और हम अपनी जिंदगी में इतने मसरूफ हो जाते हैं कि पीछे मुड़कर माँ की तरफ देखने का ख्याल तक हमें नहीं छू पाता, तो क्यों न इसे मदर्स डे पर हम भी माँ के लिए करें कुछ खास।

हमने कभी सोचा है कि माँ कभी सुस्साती क्यों नहीं। ऐसा इसलिए होता है कि भूख के पहले हमारा निवाला हमारी जुबान तक पहुँच जाए। हमारा हर काम, हमारी नींद सब कुछ वक्त पर हो। हम सो जाते हैं; लेकिन माँ जागती रहती है। माँ सबके काम पूरे करती रहती है। हमें उन्हें ऐसा करते हुए देखते तो हैं, पर कभी इस बारे में सोचते नहीं; लेकिन कवि वीरेन डंगवाल सोचते हैं अपनी कविता की इन पंक्तियों में–'सामाजिक-सांस्कृतिक परंपरा है हमारी/जिसमें माँएँ सबसे ऊपर खड़ी की जाती रही हैं/बर्फीली चोटी पर/और सबसे आगे/फायरिंग स्क्वैड के सामने।'

असल में माँ एक धावक की तरह दौड़ती रहती है, अपने लिए नहीं, हमारे लिए, ताकि हम यानी उनके बच्चे अपनी जिंदगी में जीत सकें, ताकि हम आराम से चलते रहें, बिना रुके, अगर हमें जरा-सी भी तकलीफ हो जाए, तो उनके दौड़ने की रफ्तार और तेज होती जाती है। वह हर जतन करती है, उस तकलीफ से उबारने के लिए; लेकिन कभी हाफती नहीं, न सुस्ताती है और हम हैं कि माँ के माथे पर उभर आयी चिंता की लकीरों को और पसीने से तर उनके चेहरे को नहीं देख पाते। माँ कभी हमारी इस बेपरवाही का एहसास भी हमें नहीं होने देतीं। अगर कभी हमारी जान पर बन जाए, तो माँ अपनी जान पर खेल कर हमें बचाती है।

माँ सर्वेश्वर दयाल की कविता 'थाम आंचल, थका बालक रो उठा है/ है खड़ी माँ शीश का गट्ठर गिराये/ बाँह दो चमकारती-सी बढ़ रही है/ साँझ से कह दो बुझे दीपक जलाये' की तरह रोशनी लिए हमारे साथ चलती हैं। हमारी सलामती के लिए वह बिना दाना-पानी के दिन-दिन भर मुस्कुराते हुए देव गीत गाती है। हमारे सुकुन को ही माँ ने अपना सबसे बड़ा सुख बना लिया है। इस सुकुन को बरकरार रखने

के लिए सर्दी-गर्मी-बरसात बिना नागा सबके लिए देवी-देवताओं को पूजती रहती है। माँ की पूजा और परवरिश का ही असर होता है कि हमारी जिंदगी को एक बेहतर राह मिलती है और हम उसमें बिना रुके आगे बढ़ते जाते हैं। माँ का स्नेह साये की तरह साथ बना रहता है। माँ अपनी ममता में लिपटे शक्कर-पारे, नमक-पारे के साथ अनगिन दुआओं की पोटलियाँ हम तक पहुँचाती रहती है; लेकिन हम जहाँ चले थे, उस घर से, माँ से अक्सर बहुत दूर चले आते हैं। अपनी नयी दुनिया, नया घर बसा लेते हैं। हमारे इस घर में माँ की जगह नहीं होती, पर माँ के दिल में हमारे लिए जगह कम नहीं होती। माँ की दुआएँ हमारे साथ बनी रहती है, जिन्हें वह रोज अपने भगवान जरिये हम तक पहुँचाती रहती है।

माँ की ममता का कोई मोल नहीं; लेकिन माँ जिन्होंने अपना पूरा जीवन हमपर वार दिया है, हमारी तरजीह, वक्त, देखभाल और इस सबसे ऊपर हमारे सम्मान की हकदार तो होती ही है, फिर कैसे हम अपनी जिंदगी की मसरूफियत में ये बात बिसरा बैठते हैं। क्यों न अब हम माँ के लिए कुछ ऐसा कर पायें, जिसे हमें बहुत पहले ही करना चाहिए था। हम इस एहसास को अपने भीतर टटोलें कि माँ ने जो जगह हमारे लिए अपनी जिंदगी में बनाया है, उसे कोई और नहीं बना सकता। फिर क्यों न हम अपनी जिंदगी में भी माँ के लिए खास जगह बनायें। ऐसा कुछ करें, जो माँ के मन को खुशियों से भर दे। 'मदर्स डे' इस शुरुआत का एक जरिया बन सकता है। बेशक माँ की अहमियत को इस दिन में बाँधा नहीं जा कता; लेकिन माँ आपके लिए क्या मायने रखती हैं, उनके लिए कुछ अलग और यादगार कर उन्हें इस बात का एहसास तो कराया ही जा सकता है। (प्रीति सिंह परिहार)

किस दुनिया से आयी अम्मा

किस दुनिया से आयी अम्मा।
लेती नहीं दवाई अम्मा, जोड़े पाई-पाई अम्मा।
दुख थे पर्वत, राई अम्मा, हारी नहीं लड़ाई अम्मा।
इस दुनिया में सब मैले हैं, किस दुनिया से आई अम्मा।

दुनिया के सब रिश्ते ठंडे, गरमागरम रजाई अम्मा।
जब भी कोई रिश्ता उधड़े, करती है तुरपाई अम्मा।
बाबू जो तनखा लाये बस, लेकिन बरकत लाई अम्मा।
बाबूजी के पाँव दबाकर, सब तीरथ हो आई अम्मा।
सभी साड़ियाँ छीज गई थीं, मगर नहीं कह पाई अम्मा।
अम्मा में से थोड़ी-थोड़ी, सबने रोज चुराई अम्मा।
घर में चूल्हे मत बाँटो रे, देती रही दुहाई अम्मा।
बाबूजी बीमार पड़े जब, साथ-साथ मुरझाई अम्मा।
रोती है लेकिन छुप-छुपकर, बड़े सब्र की जाई अम्मा।
लड़ते-लड़ते सहते-सहते, रह गयी एक तिहाई अम्मा।
बेटी की ससुराल रहे खुश, सब ज़ेवर दे आई अम्मा।
अम्मा से घर, घर लगाता है, घर में घुली, समाई अम्मा।
बेटे की कुर्सी है ऊँची, पर उसकी ऊँचाई अम्मा।
दर्द बड़ा हो या छोटा हो, याद हमेशा आई अम्मा।
घर के शगुन सभी अम्मा से, है घर की शहनाई अम्मा।
सभी पराये हो जाते हैं, होती नहीं परायी अम्मा।

(प्रो० योगेश छिब्बर)

घर की लक्ष्मी कौन है?

एक बार गौतम बुद्ध एक धनिक श्रेणी के भवन में भोजन के लिए पधारे। धनिक सेठ का नाम अनाथपिंडक था। उसने बड़े ही आदर-सत्कार, मान-मुनहार के साथ भोजन करवाया। भोजन के बाद गौतम बुद्ध का प्रवचन-समागम शुरू हुआ। तभी अंत:पुर से कोलाहल शुरू हो गया। आपस में अप्रिय, अपशब्द कहते हुए कलह की स्थिति पैदा हो गयी थी। तथागत ने सेठ से इस संबंध में पूछा तो सेठ ने बड़े ही उदास व दु:खी होकर बताया कि वह अपनी बहू सुजाता के कर्कश व्यवहार और आचरण से संतप्त है। आये दिन उन लोगों को परेशान करती रहती है। स्वभाव से घमंडी है। बेटे का भी अपमान करती रहती है। हमारी हर बात की अवमानना करती है। इस वजह से हमारा घर कलह का अखाड़ा बन गया। घर का सुख-चैन खत्म हो गया है।

शिष्य को सान्त्वना देते हुए सुजाता बहू को बुलाने का आग्रह किया। सुजाता के आने पर भगवान् बुद्ध ने प्रश्न किया–'बताओ भला, तुम वधिकसमा, चोरसमा, आर्यसमा, मातृसमा तथा भगिनी–इन पाँच प्रकार के गृहिणियों में से कौन हो?'

असमंजस में पड़ी सुजाता बोली–मैं आपका तात्पर्य नहीं समझी। कृपया स्पष्ट करें। तब बुद्ध बोले–

१. जो गृहिणी हमेशा क्रोध करती रहती है, जिसका पति पर बिल्कुल प्रेम नहीं होता, जो उसका अपमान करती है और परपुरुष पर मुग्ध होती है। वह ठीक इक हत्यारिणी के समान होती है और ऐसी स्त्रियों को 'वधिकसमा' कहा जाता है।

२. जो अपने पति की सम्पत्ति का सदुपयोग नहीं करती, वरन् उसे चुराकर अपने उपभोग में लाती है, वह 'चोरसमा' होती है।

३. जो आलसी होती है, बिल्कुल काम नहीं करती, कर्कशा होती है तथा पति के सामने अपना बड़प्पन दिखाती है, वह 'आर्यसमा' होती है।

४. जो हमेशा अपने पति का चिंतन करती है, अपने प्राणों से भी अधिक उसकी रक्षा करती है, वह 'मातृसमा' होती है।

५. जो बहन के समान पति से स्नेह करती है तथा लज्जापूर्वक उसका अनुगमन करती है, वह 'भगिनीसमा' होती है। अब बताओ, भला तुम इनमें से कौन हो?

यह सुनकर आत्मग्लानि से दग्ध होकर सुजाता गौतम बुद्ध के चरणों में गिर पड़ी और आँखों से अश्रुओं की अविरल धारा बहने लगी। भगवन्! क्षमा कर दें। इनमें से मैं कौन हूँ, यह बताने में मेरी तुच्छ वाणी असमर्थ हैं; किन्तु आपको यह विश्वास दिलाती हूँ कि आज से, अभी से मैं अपने पति और बड़ों का आदर-मान रखूँगी, करूँगी तथा उनका मन नहीं दुखाऊँगी। आज से मैं इस घर की दासी अपने को मानकर ही जीवन-यापन करूँगी। यह सुनकर सभी प्रसन्न हो गये। तथागत ने भी अपना आशीर्वाद देते हुए अपने गंतव्य की ओर कदम बढ़ा दिया।

घर की लक्ष्मी कौन है? हमलोग हर बहनों को लगताा है कि

हम ही सबसे अच्छे हैं। बाकी में हमें कुछ-न-कुछ अवगुण अवश्य नजर आता है। भगवान् बुद्ध के अनुसार हम खुद ही निर्णय कर लें कि हम किस प्रकार की गृहिणी में आती हैं?

शक्ति का स्वरूप हैं सीता : क्षमा पृथ्वी का गुण है और पृथ्वी की पुत्री होने के कारण सीताजी क्षमा की मूर्ति हैं। 'वाल्मीकि रामायण' के युद्धकांड में दृष्टांत है कि हनुमानजी रावण-वध एवं श्रीराम की विजय का शुभ समाचार देने सीताजी के पास आये और उनसे दुष्ट राक्षसियों के संहार की आज्ञा माँगी। तब सीताजी ने हनुमान को रोकते हुए कहा कि प्रभु श्रीराम के सेवक द्वारा स्त्रियों पर प्रहार करना नीति-संगत नहीं है। भले ही वे राक्षसियाँ अपराधिनी ही क्यों न हों।

आदर-सत्कार : एक गाँव में पुरुषोत्तम शर्मा नाम के एक पंडित रहते थे। सब यही कहते थे कि उन्होंने शास्त्रों का गहरा अध्ययन किया है और वे उच्च श्रेणी के विद्वान् हैं। दूर के गाँव रहनेवाले रघुपति एक बार उनसे मिलने आये। वे भी पंडित थे। मध्याह्न भोजन के बाद दोनों चबूतरे पर बैठकर शास्त्र संबंधी वार्तालाप करने लगे। उस समय एक लकड़हारा उधर से गुजर रहा था। पुरुषोत्तम शर्मा को देखते ही उसने सिर से भार उतारा और दोनों हाथ जोड़कर विनयपूर्वक नमस्कार किया। पुरुषोत्तम शर्मा ने भी हाथ जोड़कर उसे नमस्कार किया और पूछा, 'कैसे हो रतन? सब ठीक-ठाक चल रहा है न?' रघुपति को इस पर आश्चर्य हुआ और उन्होंने पुरुषोत्तम शर्मा से पूछा, 'यह आप क्या कर रहे हैं शर्माजी? आप भला एक लकड़हारे को नमस्कार क्यों करते हो?' पुरुषोत्तम शर्मा ने इसपर हँसते हुए कहा–'रतन आहार-सत्कार का महत्त्व जाननेवाला आदमी है। हमारे पेशे अलग-अलग हो सकते हैं; परन्तु हम सब मनुष्य ही ठहरे। हमारे शास्त्र व पुराण भी हमें यही बताते हैं। हमारा जो आदर-सत्कार करता है, उसका आदर-सत्कार करना भी हमारा कर्तव्य है। इसी में है हमारा गौरव और मर्यादा भी।

हमें सबों का आदर-सत्कार करना चाहिए। उसमें हमें बड़ा-छोटा नहीं देखना चाहिए। वे भी मनुष्य हैं, हम भी मनुष्य हैं, जो आदर करते हैं, जो नहीं करते हैं, हमें उनका भी आदर-सत्कार करना चाहिए।

खतरनाक है महिलाओं में बढ़ रही नशे की प्रवृत्ति

नशेड़ियों को दूर से देखकर भाग जानेवाली या उनको नफरत करनेवाली महिलाएँ भी अब नशे की आदी होती जा रही हैं। एक अध्ययन के मुताबिक देश में नशा करनेवाली महिलाओं की संख्या ८.९ फीसदी है। देश के नौ शहरों में २८३१ नशा लेनेवाली में २५१ महिलाएँ पायी गयीं। सवाल उठता है, क्यों हो रहा है ऐसा? अध्ययन के अनुसार भारतीय समाज में बड़ी तेजी से परिवर्तन हो रहा है। यह परिवर्तन किसी एक दिशा में नहीं, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक मुद्दों में भी हो रहा है। महिलाओं में नशे की बढ़ती आदत के पीछे मुख्य रूप से यही कारण माना जा रहा है।

इस मामले में अबतक आम धारणा थी कि अशिक्षित और निचले तबके की महिलाएँ ही बीड़ी या तम्बाकू जैसी नशीली चीजों की आदि हैं; लेकिन इस अध्ययन ने स्पष्ट रूप से यह दर्शाया है कि आज ड्रग्स की आदी अधिकतर युवा और शिक्षित महिलाएँ होती हैं। अध्ययन करनेवाली टीम की डॉ० पी० मूर्ति का मानना है कि नशा महिलाओं को दो तरह से प्रभावित करता है। नशे के आदी पुरुषों के साथ रहने का जो नुकसान उन्हें उठाना पड़ता है, वह तो अपनी जगह बरकरार है ही, अब जब महिलाएँ खुद ही नशे की आदी होने लगी हैं, तो उनकी स्थिति बद-से-बदतर होती जा रही है।

समाज की जागृत महिलाएँ पुरुषों की नशे की लत छुड़ाने के पीछे पड़ी रहती आ रही है। इसके एवज में उन्हें पुरुषों के गुस्से से लेकर शारीरिक यंत्रणा तक का शिकार होना पड़ता है। अब जब वे खुद इसे अपना रही है, तो नशे के सेवन से जो तकलीफ होती है, वह तो अपनी जगह है ही, उन्हें सामाजिक और पारिवारिक यातनाएँ भी सहनी पड़ती है। सवाल उठता है कि नशे की आदी महिलाओं को जिंदगी में किन-किन परिस्थितियों से गुजरना पड़ता है? अव्वल तो हाई-फाई सोसायटी की ये महिलाएँ किसी नतीजे की परवाह ही नहीं करतीं; क्योंकि ऐसे समाज में बाहर घूमनेवाली या पार्टी में शामिल महिलाओं में ज्यादातर किसी-न-किसी नशे का सेवन करती है और इसी में अपनी शान

समझती है। इसका असर उनके बच्चों पर जरूर पड़ता है और कम उम्र से ही वे नशे की ओर झुक जाते हैं। यही कारण है कि आज ऐसे समाज के बच्चे अपने आपको अकेला महसूस करते हैं और कई तो सामाजिक अपराधी तक बन जाते हैं। नशे की वजह से जिन महिलाओं को ज्यादा दुःख भोगना पड़ता है, उनमें मध्यम वर्ग की वे महिलाएँ होती हैं, जो अपनी गलत सोच और हैसियत से ऊँची छलाँग लगाने के कारण दुर्भाग्यवश नशे की लत लगा बैठती है। वे न घर की होती है, न घाट की। न तो उनका सपना पूरा होता है, न ही वे घर-परिवार की रह पाती है। जहाँ तक छोटे तबकों की महिलाओं की बात है, उनपर कोई ज्यादा असर नहीं पड़ता, चूँकि उनका समाज, परिवार अरसे से यह देखने को आदी हो चुका है। आमतौर पर नशे की आदी महिलाएँ अनिद्रा, अनियमित मासिक स्त्राव और डिप्रेशन की शिकार हो जाती हैं। कई बार तो गर्भवती महिलाओं के गर्भ ही नहीं ठहरता और अगर बच्चा होता भी है, तो वह शारीरिक या मानसिक रूप से अपंग होता है। महिलाओं में नशे की बढ़ती आदत का सबसे बड़ा कारण माना गया है समाज और परिवार का बिखराव और लोगों को आत्मकेन्द्रित होना। लोग आज इतने आत्मकेन्द्रित हो गये हैं कि वे न तो दूसरों की भावनाओं को समझ सकते हैं, उन उनके दुःख-दर्द को।

यही वजह है कि सब एक-दूसरे से कटते जा रहे हैं। समाज टूट रहा है, परिवार बिखर रहा है। अगर कोई किसी से जुड़ता भी है, तो महज निहित स्वार्थ के कारण। ऐसे में कोमल भावनाओं की मलिका अपने गर्मी से छुटकारा पाने के लिए नशे की ओर उन्मुख होती है।

—कर्मवीर अनुरागी, एस०डी०

कच्ची सब्जी या फलों से रक्तचाप की समस्या भी दूर

भरपूर भोजन के साथ अगर आप अच्छी सेहत का सपना पाले हुए हैं, तो अपने भोजन में किसी कच्ची सब्जी या फल को जरूर शामिल करें। विशेषज्ञों का मानना है कि कच्चे फल और सब्जियाँ भोजन को पचाने में सहायता करने के साथ शरीर के लिए जरूरी पोषक तत्त्व भी उपलब्ध कराते हैं। कच्ची सब्जियों और फलों का कोई

और विकल्प भी नहीं है। कच्चे फल और सब्जियाँ रेशे से भरपूर होने के कारण शेष भोजन के लिए रास्ता साफ करते हैं। अगर आप पिज्जा खाने जा रहे हैं, तो उसके पूर्व सलाद खायें। अगर आप आइसक्रीम खाने जा रहे हैं, तो उसके पूर्व एक सेब खाएँ। यह प्रक्रिया गरिष्ठ भोजन को पचाने में भी सहायक होती है। रेशे भोजन को पाचनतंत्र में आगे बढ़ने में भी सहायता करते हैं।

दिन में हर बार भोजन के साथ एक कच्चा फल या कच्च सब्जी शरीर को तंदुरुस्त बनाने में सहायता करती है। कच्ची सब्जियों और फलों में उच्च मात्रा में पाचक एंजाइम मौजूद होते हैं, जो शेष खाने को पचाने में सहायक होते हैं। कच्चे फलों में विटामिन और खनिज भी भरपूर मात्रा में होते हैं। बाजार में विटामिन के लिए कई दवाइयाँ और गोलियाँ मिलती हैं; लेकिन कच्चे फलों का कोई विकल्प नहीं है। गोलियों से शरीर को विटामिन की आपूर्ति होती है; लेकिन विटामिन के प्राकृतिक स्त्रोत फल और सब्जियाँ गोलियों के दूरगामी प्रभाव की आशंका को खत्म करते हैं।

कई शोधों ने साबित कर दिया है कि महिलाओं को सालभर अपने भोजन में कम-से-कम एक कच्ची सब्जी को अवश्य शामिल करना चाहिए। यह रजोनिवृत्ति के बाद की समस्याओं को दूर करने के साथ डायबिटीज की आशंका को कम करता है। कच्ची सब्जियों में एंटी ऑक्सीडेंट होते हैं, जिनसे रक्तचाप की समस्या भी दूर रहती है।

–किरण अविनाश, एस०डी०

दुनिया के ताकतवर महिलाओं की सूची में सोनिया गाँधी सातवें स्थान पर

हमारे देश के बहुत-से कर्मनिष्ठ, धर्मनिष्ठ एवं दाननिष्ठ को हमारी संस्था कोटि-कोटि नमन करती है, जिनके सहयोग से हमारे देश में काफी लोगों का कल्याण हो रहा है।

दुनिया की ताकतवर महिलाओं की सूची में कांग्रेस पार्टी की अध्यक्षा सोनिया गाँधी भी शामिल हैं। फोर्ब्स पत्रिका की इस सूची में वह सातवें स्थान पर हैं, जबकि पहले और दूसरे स्थान पर क्रमशः

जर्मनी की चांसलर ऐंजला मार्केल तथा अमेरिकी विदेश मंत्री हिलेरी क्लिंटन हैं। फोर्ब्स पत्रिका की १०० ताकतवर महिलाओं की सूची में अमेरिकी अस्पताल में सर्जरी के बाद स्वास्थ्य लाभ कर रही ६४ वर्षीय सोनिया गाँधी सातवें स्थान पर हैं और वह अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा की पत्नी मिशेल ओबामा से आगे हैं। सूची में पेप्सीको की प्रमुख भारतीय-अमेरिकी इंदिरा नूयी चौथे स्थान पर हैं। पाँचवें और छठे स्थान पर क्रमशः फेस बुक की मुख्य परिचालन अधिकारी शेरील सैंडवर्ग तथा बिल एंड मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन की सह अध्यक्ष तथा सह-संस्थापक हैं। सूची में तीसरे स्थान पर ब्राजील की पहली महिला राष्ट्रपति बनी दिलमा रोउसेफ हैं। फोर्ब्स की सूची में दो प्रमुख कार्यकारी अधिकारी आईसीआईसीआई की चंदा कोचर (४३वें) तथा बायोकोन की किरण मजूमदार शा (९९वें) शामिल हैं। फोर्ब्स ने सोनिया के बारे में लिखा है–'उच्च आर्थिक वृद्धि के लिए जहाँ एक तरफ उनकी तारीफ की जाती है, वहीं राजनीतिक भ्रष्टाचार को बर्दाश्त करने तथा तेजी से दुनिया की ताकतवर महिलाओं में आपका नाम देखकर हमें खुशी होती है; किन्तु हम चाहते हैं आपका नाम, देशभक्ति के कामों में तथा महिलाओं को अधिक-से-अधिक आगे बढ़ाने में भी आगे रहे। धन्यवाद! –संतमत महिला सेवा संस्थान गोड्डा

कठिनाइयाँ हमारी उन्नति में सहायक होती हैं

साधारणतः कठिनाइयों को दुर्भाग्य समझा जाता है। जिन लोगों ने सम्पन्न परिवार में जन्म लिया है, वे तो जरा-जरा-सी असुविधाओंमें ऐसे घबराते हैं, जैसे पता नहीं क्या विपत्ति का पहाड़ टूट पड़ा। उनकी चाहना होती है, इच्छा किये सुविधा हाजिर। ऐसे लोग अनेक दृष्टियों से बच्चे ही रह जाते हैं। इसलिए भगवान् को सुखों के साथ-साथ दुःखों और कठिनाइयों की रचना करनी पड़ी, ताकि उनके बच्चे बिना अनुभव के अपूर्ण न रह जाएँ।

भगवान् को दयासिन्धु एवं करुणासागर कहा जाता है। उनके वात्सल्य, दान और उपकार का कोई अंत नहीं। हम साधारण मनुष्य जब अपनी संतान पर इतनी ममता रखते हैं, तो उस महान् प्रभु का अपने

बालक पर कितना स्नेह होगा। चित्रकार अपने चित्र को, माली अपने बाग को, मूर्तिकार अपनी मूर्ति को, किसान अपने खेत को, माता-पिता अपने बच्चे को उन्नत एवं विकसित स्थिति में रखना चाहते हैं एवं उस स्थिति में रखने के लिए हर संभव प्रयास करते हैं।

फिर परमात्मा अपनी सर्वश्रेष्ठ रचना मनुष्य को अच्छी स्थिति में रखना न चाहे, ऐसा हो नहीं सकता। निश्चय ही उस परमात्मा का निरंतर प्रयत्न रहता है कि हम सब सुखी एवं सुविकसित हों। उनकी दया और करुणा निरंतर हमारे ऊपर बरसती रहे।

किसी-किसी पर आकस्मिक विपत्ति आती है कि देखनेवालों का हृदय दहल जाता है। ऐसे अवसरों पर ईश्वर की दयालुता पर हमें सन्देह होने लगता है। कष्टों को हम देवी-देवताओं का कोप या ईश्वर की कठोरता मान लेते हैं; किन्तु जिसे हम विपत्ति समझते हैं, वह भी ईश्वर की दया है। माता को अपने बच्चे पर असाधारण प्यार होता है, उसे सुखी बनाने के लिए माँ कोई असर नहीं उठा रखती, चाहे बच्चे को मारना, डाँटना या कष्ट भी देना पड़े। जहाँ बच्चे का नुकसान होता है, बच्चे के रूठने पर भी माँ उसकी बात नहीं मानती। खतरनाक चीजों को बच्चे से दूर रखती है, उसी तरह परमात्मा हमें सुधारने के लिए हर संभव कष्ट देते हैं, चाहे हमें मन से कितना दुःख क्यों न हो, पर हमारी भलाई के लिए वो माता की तरह हमपर पूरी कड़ाई करते हैं। कहा गया है–

पिता से माता सौ गुणा, सुत को राखे प्यार।
मन सेती सेवन करे, तन सुँ डाँट अरु गार॥
माता से हरि सौ गुणा, तासे सौ गुरुदेव।
प्यार करें औगुण हरें, चरणदास शुकदेव॥

हम अपनी अज्ञानता के कारण माँ की कड़ाई को माँ की निष्ठुरता कह रोते हैं, दुःखी होते हैं। उसी तरह हम अज्ञानता के कारण परमात्मा की दया-करुणा को उसकी कठोरता का नाम देते हैं।

सुख से मनुष्य को कई लाभ हैं–मन प्रसन्न रहता है, मन उत्साहित रहता है, उन्नति करने में सुविधा होती है, मित्र बढ़ जाते हैं,

मान-बड़ाई के अवसर मिलते हैं। परन्तु दुःख के भी कम लाभ नहीं हैं–दुःख से मनुष्य की सोयी शक्ति जग जाती है। सोयी हुई प्रतिमा का विकास हो जाता है। दुःख आने से संचित पाप का नाश हो जाता है, अंतरात्मा निर्मल एवं हल्की हो जाती है।

सुख में अच्छाइयों के साथ-साथ बहुत बड़ी बुराई है कि आदमी आलसी, अहंकारी, समय का दुरुपयोग करना, सत्कर्म को मूलकर स्वार्थ में लग जाता है। इस बुरी स्थिति से अपने पुत्र को बचाने के लिए परमात्मा ईश्वर उसकी धन-संपत्ति छिनकर उन्हें क्षणिक कष्ट देकर कष्ट (आवागमन के समान) कष्टों से बचा लेते हैं। जब हम खुद आपत्तिग्रस्त होते हैं, तब दूसरों की सहायता का होश आता है।

सच्ची माता मदालसा (पुत्र को उपदेश)

पुत्र! तू तो शुद्ध आत्मा है, तेरा कोई नाम नहीं है। यह कल्पित नाम तो तुझे अभी मिला है। यह शरीर भी पाँच भूतों का बना हुआ है। न यह तेरा है, न तू इसका है। फिर किसलिये रो रहा है। अथवा तू नहीं रोता है, यह शब्द तो राजकुमार के पास पहुँचकर अपने-आप ही प्रकट होता है। तेरी सम्पूर्ण इन्द्रियों में जो भाँति-भाँति के गुण-अवगुणों की कल्पना होती है, वे भी पाँचभौतिक ही हैं।

जैसे इस जगत् में अत्यन्त दुर्बल भूत अन्य भूतों के सहयोग से वृद्धि को प्राप्त होते हैं, उसी प्रकार अन्न और जल आदि भौतिक पदार्थों को देने से पुरुष पंचभौतिक शरीर की ही पुष्टि होती है। इससे तुझ शुद्ध आत्मा की न तो वृद्धि होती है और न हानि ही होती है। तू अपने इस अंगे और देहरूपी चोल के जीर्ण-शीर्ण होने पर मोह न करना। शुभाशुभ कर्मों के अनुसार यह देह प्राप्त हुआ है।

कोई जीव पिता के रूप में प्रसिद्ध है, कोई पुत्र कहलाता है, किसी को माता और किसी को प्यारी स्त्री कहते हैं; कोई 'यह मेरा है' कहकर अपनाया जाता है और कोई 'मेरा नहीं है' इस भाव से पराया माना जाता है। इस प्रकार ये भूत-समुदाय के ही नाना रूप हैं, ऐसा तुझे मानना चाहिए। यद्यपि समस्त भोग दुःखरूप हैं, तथापि मूढ़चित्त मानव उन्हें दुःख दूर करनेवाला तथा सुख की प्राप्ति करानेवाला समझता है;

किन्तु जो विद्वान हैं, जिनका चित्त मोह से आच्छन्न नहीं हुआ है, वे उन भोगजनित सुखों को भी दु:ख ही मानते हैं।

स्त्रियों की हँसी क्या है, हड्डियों का प्रदर्शन। जिसे हम अत्यन्त सुन्दर नेत्र कहते हैं, वह मज्जा की कालिमा है और मोटे-मोटे कुच आदि घने मांस की ग्रन्थियाँ हैं। अत: पुरुष जिसपर अनुराग करता है, वह युवती स्त्री क्या नरक की जीती-जागती मूर्ति नहीं है? पृथ्वी पर सवारी चलती है, सवारी पर यह शरीर रहता है और शरीर में भी एक दूसरा पुरुष बैठा रहता है; किन्तु पृथ्वी और सवारी में वैसी अधिक ममता नहीं देखी जाती, जैसी अपने देह में दृष्टिगोचर होती है। यही मूर्खता है।

बेटा! तू धन्य है, जो शत्रुरहित होकर अकेला ही चिरकाल तक इस पृथ्वी का पालन करता रहेगा। पृथ्वी के पालन से तुझे सुख भोग की प्राप्ति हो धर्म के फलस्वरूप तुझे अमरत्व मिले। पर्वों के दिन ब्राह्मणों को भोजन के द्वारा तृप्त करना, बन्धु-बान्धवों की इच्छा पूर्ण करना, अपने हृदय में दूसरों की भलाई का ध्यान रखना और परायी स्त्रियों की ओर कभी मन को न जाने देना। अपने मन में सदा श्रीविष्णु भगवान का चिन्तन करना, उनके ध्यान से अन्त:करण के काम-क्रोध आदि छहों शत्रुओं को जीतना, ज्ञान के द्वारा माया का निवारण करना और जगत् की अनित्यता का विचार करते रहना।

धन की आय के लिए राजाओं पर विजय प्राप्त करना, यश के लिए धन का सद्व्यय करना, परायी निन्दा सुनने से डरते रहना तथा विपत्ति के समुद्र में पड़े हुए लोगों का उद्धार करना। वीर! तू अनेक यशों के द्वारा देवताओं को तथा धन के द्वारा ब्राह्मणों एवं आश्रितों को संतुष्ट करना। अनुपम भोगों के द्वारा स्त्रियों को प्रसन्न रखना और युद्धों के द्वारा शत्रुओं के छक्के छुड़ाना। बाल्यावस्था में भाई-बन्धुओं को आनन्द देना, कुमारावस्था में आज्ञापालन के द्वारा गुरुजनों के संतुष्ट रखना। युवावस्था में उत्तम कुल को सुशोभित करनेवाली स्त्रियों को प्रसन्न रखना और वृद्धावस्था में वन के भीतर निवास करते हुए वनवासियों को सुख देना। तात! राज्य करते हुए अपने सुहृदों को प्रसन्न रखना, साधु पुरुषों की रक्षा करते हुए यज्ञों द्वारा भगवान् का यजन करना

तथा संग्राम में दुष्ट शत्रुओं का संहार करते हुए गौ और ब्राह्मणों की रक्षा के लिए अपने प्राण निछावर कर देना।

संग (आसक्ति) का सब प्रकार से त्याग करना चाहिए। किन्तु यदि उसका त्याग न किया जा सके, तो सत्पुरुषों का संग करना चाहिए; क्योंकि सत्पुरुषों का संग ही उसकी औषधि है। कामना को सर्वथा छोड़ देना चाहिए; परन्तु यदि वह छोड़ी न जा सके, तो मुमुक्षा (मुक्ति की इच्छा) के प्रति कामना करनी चाहिए; क्योंकि मुमुक्षा ही उस कामना को मिटाने की दवा है। ❐

अनमोल वचन

इस तरह न कमाओ कि पाप हो जाए।
इस तरह न खर्च करो कि कर्ज हो जाए।
इस तरह न खाओ कि मर्ज हो जाए।
इस तरह न बोलो कि क्लेश हो जाए।
इस तरह न चलो कि देर हो जाए।
इस तरह न सोचो कि चिन्ता हो जाए।

दुनिया का सबसे बड़ा जेवर आपकी मेहनत। जो हाथ सेवा के लिए उठते हैं, वे प्रार्थना करनेवाले होठों से अधिक पवित्र हैं। स्वार्थ में अच्छाइयाँ ऐसे खो जाती हैं, जैसे समुद्र में नदियाँ।

आँखों में क्या है?

पिता की आँखों में–फर्ज
माता की आँखों में–ममता
भाई की आँखों में–प्यार
बहन की आँखों में–स्नेह
अमीर की आँखों में–घमंड
गरीब की आँखों में–आशा
मित्र की आँखों में–सहयोग
दुश्मन की आँखों में–बदला
सज्जन की आँखों में–दया
शिष्य की आँखों में–आदर

एक चीज

जीतने के लिए कोई चीज है तो–प्रेम
पीने के लिए कोई चीज है तो–क्रोध
देने के लिए कोई चीज है तो–दान
दिखाने के लिए कोई चीज है तो–दया
लेने के लिए कोई चीज है तो–ज्ञान
कहने के लिए कोई चीज है तो–सत्य
फेंकने के लिए कोई चीज है तो–ईर्ष्या
छोड़ने के लिए कोई चीज है तो–मोह
रखने के लिए कोई चीज है तो–इज्जत